RNI-MAHBIL/2010/33592

जैन तीर्थवंदना

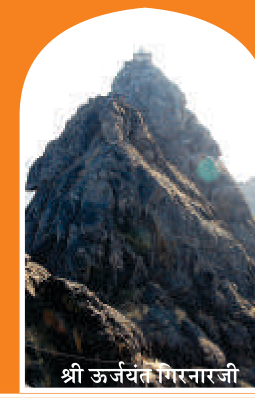

वर्ष : 11	अंक : 6	मुम्बई, सितम्बर 2021	पृष्ठ : 40	मूल्य : 25	हिन्दी
VOLUME : 11	ISSUE : 6	MUMBAI, SEPTEMBER 2021	PAGES : 40	PRICE : 25	English Monthly

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी का मुखपत्र

वीर निर्वाण संवत् 2547

परमपूज्य श्वेतपिच्छाचार्य श्रीविद्यानन्दजी मुनिराज की समाज को अद्‍भुत भेंट

दिगम्बर जैन मन्दिरजी का प्रारूप

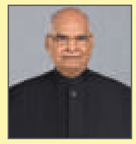

बिहार सरकार के भूतपूर्व महामहिम राज्यपाल **रामनाथ कोविंद जी** एवं भूतपूर्व महामहिम **सत्यपाल मलिक जी** भगवान महावीर जन्मभूमि पर दर्शनार्थ पधारे और उन्होंने घोषणा की निश्चित रूप से वैशाली (बिहार) भगवान महावीर की जन्मभूमि है। इसी शुभ अवसर पर उन्होंने अनुदान में 2 एकड़ भूमि वाहनों की पार्किंग हेतु संस्थान को प्रदान करी।

मंगल आशीर्वाद

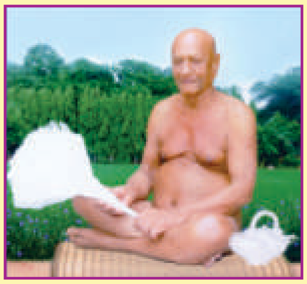

प.पू. आचार्य श्रीविद्यानन्दजी मुनिराज

वयोवृद्ध, तपोवृद्ध, ज्ञानवृद्ध, युगप्रणेता, सिद्धान्तचक्रवर्ती परमपूज्य **श्वेतपिच्छाचार्य श्रीविद्यानन्दजी मुनिराज** द्वारा अपने कार्यकाल में किये गए महत्त्वपूर्ण कार्य एवं उपलब्धियों के स्मरण हेतु जैन समाज द्वारा **कीर्तिस्तम्भ** का निर्माण भगवान महावीर जन्मभूमि, वैशाली (बिहार) में किया जा रहा है।आप सभी धर्मानुरागी महानुभावों से विनम्र अनुरोध है कम से कम 1,11,000/- रुपयों की सहयोग राशि इस पुण्य कार्य के लिए प्रदान कर संस्थान की **संरक्षक सदस्यता** प्राप्त करें। (उन सभी महानुभावों का नाम क्रमानुसार शिलापट्ट पर उचित स्थान पर टंकोत्कीर्ण किया जाएगा) ताकि आप भी वह स्तर पा सकें जो कि ऐसा लगे मानों आप भी वहाँ की प्रजातंत्र प्रणाली के एक ऐसे सांसद सदस्य हैं जो अपने को 'अहं राजा' मानते हुए वहाँ के विकास के कार्यों में समर्पित भाव से जुड़े हैं।

इस ऐतिहासिक मंगल कार्य के लिए आप संस्थान के क्षेत्रिय अध्यक्ष/मन्त्री से सम्पर्क कर शक्तिनुसार उनके माध्यम से भी राशि उपलब्ध करा सकते हैं।

1. मानस्तम्भ और कीर्तिस्तम्भ का मिला-जुला रूप बनेगा। 2. मानस्तम्भ की ऊँचाई 71 फुट होगी। 3. इसमें ऊपर जाने के लिए अन्दर से सीढ़ियाँ बनेंगी। 4. इसमें सहस्रकूट जिनालय बनाया जायेगा, जिसमें 24 तीर्थंकरों की प्रतिमाएँ विराजमान होंगी।

कीर्तिस्तम्भ एवं मानस्तम्भ का प्रारूप

भावी योजनाएँ— 1. ध्यान केन्द्र 2. साधु-साध्वी निवास 3. सभागार 4. संग्रहालय 5. पुस्तकालय 6. स्कूल 7. अस्पताल 8. नन्द्यावर्त महल 9. कीर्तिस्तम्भ 10. वैशाली जनपद का सौन्दर्यीकरण करना।

हमारी भावी योजनाओं में अपना बहुमूल्य सहयोग अवश्य प्रदान करें एवं किसी भी प्रकार की जानकारी हेतु निम्नलिखित महानुभावों से सम्पर्क करें-

साहू अखिलेश जैन	**राजकुमार जैन**	**सतीश चन्द जैन SCJ**	**नरेश जैन** (कामधेनु), दिल्ली	**अनिल जैन**	**मुकेश जैन**	**राकेश जैन**	**राजेन्द्र जैन**
मुख्य संरक्षक	अध्यक्ष	अध्यक्ष-अर्थव्यवस्था	अध्यक्ष—अकाउंट उपसमिति	कार्याध्यक्ष	कोषाध्यक्ष	निर्माण समिति	मन्दिर व्यवस्थापक

आपके द्वारा भेजी जाने वाली धनराशि भगवान महावीर स्मारक समिति, स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया, IFSC Code : SBIN 0001624 जे.एन.यू शाखा, नई दिल्ली में खाता संख्या 10596551078 एवं HDFC बैंक खाता संख्या 50100264497212 IFSC Code : HDFC 0000586 ग्रीनपार्क नई दिल्ली शाखा में जमा कराई जा सकती है।

भगवान महावीर स्मारक समिति

वैशाली कार्यालय : वासोकुण्ड (विदेह कुण्डपुर), जिला—मुजफ्फरपुर-844128 (बिहार), मोबाईल : 07544003396

दिल्ली कार्यालय : कुन्दकुन्द भारती, 18-बी, स्पेशल इंस्टीट्यूशनल एरिया, नई दिल्ली-110067

फोन : (011) 2656 4510 मोबाईल : 09871138842 ई-मेल : lordmahavirbirthplace@gmail.com

वेबसाईट : lordmahaveerbirthplace.com सम्पर्क सूत्र : 9350505050, 9871138842

नरेश जैन (चेयरमैन-आशियाना इस्पात लिमिटेड) **पुनीत जैन** (प्रबंध निदेशक-आशियाना इस्पात लिमिटेड)

ASHIANA ISPAT LIMITED

ASHIANA GROUP — A Symbol of Quality

(ISO 9001-2008 Certified Co.)

Mfr.: ASHIANA®, KAMDHENU, AL KAMDHENU™ GOLD TMT

Regd. Office: A-1116, RIICO Industrial Area, Phase-III, Bhiwadi, Distt. - Alwar (Rajasthan), E-mail: ashianagroup@yahoo.co.in

Corp. Office: C-9/36, Sector-8, Rohini, Delhi-110085

दमदार सरिया **TMT Grade Fe 415,500,550**

अध्यक्षीय निवेदन

आज समाज में आपसी मतभेद दिनों-दिन बढ़ते चले जा रहे हैं जिसका प्रभाव हमारे जैन धर्म पर पड़ रहा है। बढ़ते मतभेदों का कारण मात्र कट्टरपंथवाद ही है। हम पंथवाद और कट्टरपंथ में यह भूल जाते हैं कि हम अपनी आम्नाय अपना पंथ तब सुरक्षित रख सकते हैं जब हमारा धर्म सुरक्षित रहेगा और हमारा धर्म तब सुरक्षित रहेगा जब हमारे तीर्थ/मंदिर सुरक्षित रहेंगे।

हमारे सभी तीर्थों की सुरक्षा के उद्देश्य से आज से लगभग ११९ वर्ष पूर्व समाज ने अपने प्रतिनिधि के रूप में एक संस्था का निर्माण किया था जिसका नाम है भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी जो आज तक अपने कार्य का निर्वहन करती आ रही है। तीर्थक्षेत्र कमेटी का उद्देश्य सभी तीर्थों को सुरक्षित रखना, उनका संरक्षण-संवर्धन करना प्रमुख है। भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी जैन तीर्थों से सम्बंधित सभी प्रकार के कानूनी प्रकरण को देखती है और अपने तरीके से कोर्ट में मुकदमे लड़ती है। श्री सम्मेदशिखर जी में श्वेताम्बर और दिगम्बर के बीच पिछले १०० वर्षों से अधिक समय से केस चलते आ रहे हैं। दिगम्बर समाज के प्रतिनधि के रूप में तीर्थक्षेत्र कमेटी केस लड़ती आ रही है। श्वेताम्बर और दिगम्बर दोनों आम्नाय की संस्थाओं का सबसे अधिक पैसा कानूनी विवादों में सरकार और वकीलों के पास चला जाता है और दोनों आम्नाय एक दूसरे के प्रति द्वेष का भाव रखते हुए नए विवादों को जन्म देते हैं। दिगम्बर और श्वेताम्बर दोनों आम्नाय के मतभेद का फायदा अन्य लोग उठा लेते हैं और हमारे क्षेत्रों पर अनाधिकार कब्ज़ा करने के प्रयत्न करने लगते हैं । हमारे लिए अत्यंत चिंतन का विषय है कि जो तीर्थ हमारे तीर्थंकरों ने प्रवर्तित किये हैं और जिन पावन तीर्थों के कारण ही जैन धर्म का अस्तित्व बना हुआ है। ऐसे परम पावन तीर्थ को हम मुकदमें के रूप में अपने आपसी मतभेदों के चलते कोर्ट में पेश कर देते हैं | कोई भी अजैन व्यक्ति हमारे तीर्थंकरों एवं उनके द्वारा निर्मित तीर्थों की गरिमा के महत्त्व को नहीं समझ सकता और हम स्वयं अपने धर्म की डोर किसी अन्य के हाथ में सौंप देते हैं। अगर जैन धर्म की दोनों आम्नाय सामंजस्य पूर्वक क्षेत्र पर यथा स्थिति के अनुरूप धर्म ध्यान करें तो काफी मात्रा में कानूनी प्रकरणों में जो पैसा खर्च किया जाता है उसका सदुपयोग करते हुए उसे तीर्थ के विकास में, अपने समाज के कल्याण में खर्च किया जाये तो जैन धर्म की एकता और अधिक मजबूत बनेगी।

भगवान महावीर ने अनेकांतवाद का सिद्धांत बताया है अगर हम इस सिद्धांत को मानकर चलें तो कभी भी किसी से आपस में मनमुटाव व टकराव की स्थिति नहीं बन सकेगी। मैं समस्त जैन समाज से आग्रह करता हूँ कि आपसी मतभेद, पंथवाद आदि को गौण करते हुए सामंजस्यपूर्वक अपने क्षेत्र, अपने धर्म एवं अपने समाज के उद्धार की भावना के साथ अपनी चंचला लक्ष्मी का उपयोग करें और भगवान महावीर के सन्देश "जियो और जीने दो" की राह पर चलें।

वर्तमान में अभी दिगम्बर जैन समाज में पर्युषण महापर्व मनाये जा रहे हैं वर्ष में तीन बार हम पर्युषण पर्व मनाने का सौभाग्य प्राप्त करते हैं और विशेषतः भाद्रपद माह में प्रारम्भ होने वाले पर्युषण पर्व को हम बड़े ही हर्ष-उल्लास पूर्वक दस धर्मों का पालन करते हुए तप-त्याग और संयम के साथ मनाते हैं। यह दस धर्म (क्षमा, मार्दव, आर्जव, शौच, सत्य, संयम, तप, त्याग, आकंचिन और ब्रह्मचर्य) हमें जीवन जीने की कला सिखलाते हैं साथ ही इस जीवन-मरण से मुक्ति का पाठ पढ़ाते हैं। इन दस दिनों में श्रद्धालुगण अपने उद्योग-धंधे दुकान आदि को गौण करते हुए धर्म और स्वध्याय में व्यतीत करते हैं तथा व्रत, उपवास आदि कर कठिन साधना करते हैं। भक्ति पूर्वक इन दस दिनों के बीत जाने के बाद साल भर में किये गये जाने-अनजाने में किये गये अपराधों एवं सारे मनमुटाव को दूर करते हुए आपस में एक-दूसरे के प्रति क्षमा के भाव जाग्रत करते हुए क्षमावाणी पर्व को मनाते हैं। मैं उन सभी धर्मात्माओं के पुण्य की अनुमोदना करता हूँ जिन्होंने इन दस दिनों में कठिन साधना पूर्वक भगवान का अनुसरण किया साथ ही मैं स्वयं की एवं भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी महापरिवार की ओर से समस्त समाज से शुद्ध अन्तःकरण से सबसे क्षमा चाहता हूँ एवं सब के प्रति क्षमा के भाव रखता हूँ।

उत्तम क्षमा

शिखरचन्द पहाड़िया
राष्ट्रीय अध्यक्ष

इस अंक में

पर्युषण महापर्व: विकार और विकृतियों को जीतने का पर्व	7
'क्षमा वीरस्य भूषणं'	8
पर्वों का महाकुंभ :- पर्युषण महापर्व	9
प्रशममूर्ति आचार्य श्री 108 शान्ति सागर जी महाराज 'छाणी'	10
दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी	11
जैन तीर्थों की समस्याएं	14
अनोखा अतिशय क्षेत्र – भातकुलीजी	15
मोक्षपथ के लिए सजगश्री माँ ललितपुर में समाधिस्थ हुई	17
वाराणसी की प्राचीन जैन संस्कृति एवं परम्परा	20
तीर्थक्षेत्र कमेटी महाराष्ट्र अंचल की गतिविधियाँ	29
The correct place and date of birth aacharya vidyasagarji	31
Shreekshetra Shravanabelagola Matha	33

जैन तीर्थवंदना

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी एवं
भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र ट्रस्ट का

मुखपत्र

वर्ष ११ अंक ६ सितम्बर २०२१

श्री शिखरचन्द पहाड़िया
अध्यक्ष

श्री प्रदीप जैन (पी.एन.सी.)
उपाध्यक्ष

श्री वसंतलाल दोशी
उपाध्यक्ष

श्री नीलम अजमेरा
उपाध्यक्ष

श्री गजराज गंगवाल
उपाध्यक्ष

श्री तरुण काला
उपाध्यक्ष

श्री संतोष जैन (पेंढारी)
महामंत्री

श्री के.सी. जैन(काला)
कोषाध्यक्ष

श्री खुशाल जैन (सी.ए.)
मंत्री

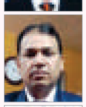

श्री विनोद कोयलावाले
मंत्री

श्री जयकुमार जैन (कोटावाले)
मंत्री

प्रधान सम्पादक
प्रो. (डॉ.) अनुपम जैन, इन्दौर
सम्पादक
उमानाथ दुबे
सम्पादकीय सलाहाकार
डॉ. अनेकान्त जैन, दिल्ली
श्री सुरेश जैन (IAS), भोपाल
श्री वसंतशास्त्री, चेन्नई
श्री धरमचंद शास्त्री, दिल्ली
श्री राजेन्द्र जैन 'महावीर', सनावद
डॉ. सुनील जैन 'संचय', ललितपुर
पं. (डॉ.) महावीर शास्त्री, सोलापुर
प्रकाश पापड़ीवाल, औरंगाबाद

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के सदस्य बनकर तीर्थों के संरक्षण-संवर्धन और उनके विकास में मार्ग दर्शन दीजिये

संरक्षक सदस्य	रु. 5,00,000/-	सम्माननीय सदस्य	रु. 31,000/-
परम सम्माननीय सदस्य	रु. 1,00,000/-	आजीवन सदस्य	रु. 11,000/-

नोट:
1) कोई भी फर्म, पेढ़ी, कम्पनी, धर्मादाय ट्रस्ट, संयुक्त कुटुम्ब, सोसायटी भी उपर्युक्त प्रावधान के अंतर्गत सदस्य बन सकेंगे। इस प्रकार की सदस्यता केवल 25 वर्षों के लिये होगी।
2) जो सदस्य आयकर की छूट चाहेंगे उन्हें 80जी के अंतर्गत कुछ रकम पर 80जी का लाभ मिलेगा।
3) सदस्यता से प्राप्त राशि ध्रुवफण्ड में जमा रहेगी उसके ब्याज की आय ही व्यवस्थापन एवं तीर्थक्षेत्र के संरक्षण, संवर्धन तथा उनके जीर्णोद्धार में व्यय की जायेगी।

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी को प्रेषित की जाने वाली राशि बैंक ऑफ बड़ौदा, वी. पी. रोड, मुंबई के सेविंग खाता क्र. 13100100008770, IFSC CODE BARB0VPROAD अथवा बैंक ऑफ इंडिया, सी. पी. टैंक, मुंबई के खाता क्रमांक 001210100017881, IFSC CODE BKID0000012 में किसी भी शाखा में नि:शुल्क जमा कराकर उसकी सूचना मुंबई कार्यालय को देने की कृपा करें।

पत्रिका में प्रकाशित विचार लेखकों के अपने हैं. सम्पादकों का इन विचारों से सहमत होना जरूरी नहीं है।
किसी भी विवाद का निराकरण मुंबई न्यायालय के अधिकार क्षेत्र में होगा

कार्यालय: भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी, हीराबाग, सी.पी.टैंक, मुम्बई-400004
फोन : 022-23878293 फैक्स : 022-2385 9370
website : www.tirthkshetracommittee.com, e-mail : tirthvandana4@gmail.com, Whatsapp No. : 7718859108

मूल्य
वार्षिक : 300 रुपये
त्रिवार्षिक : 800 रुपये
आजीवन (दस वर्ष) : 2500 रुपये

महामंत्री की कलम से

शताधिक वर्ष से तीर्थों के संरक्षण-संवर्धन में कार्यरत भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी अपने कार्य का निरंतर निर्वहन करती आ रही है साथ ही तीर्थों से जुड़े कानूनी प्रकरणों को भी तीर्थक्षेत्र कमेटी अपने तरीके से सुलझाने का प्रयास करती रही है। कमेटी विभिन्न तीर्थक्षेत्रों एवं प्राचीन मंदिरों के जीर्णोद्धार व सर्वांगीर्ण विकास के लिए अनुदान देती है । कमेटी को आये दिन विभिन्न स्थानों एवं मंदिरों से अनुदान पत्र प्राप्त होते हैं जिस पर कमेटी अंचल की अनुशंसा पर पदाधिकारीगण अनुदान देने पर विचार कर निर्णय लेते आये हैं।

तीर्थक्षेत्र कमेटी का उद्देश्य सभी तीर्थों को सुरक्षित रखना, उनका संरक्षण, संवर्धन करना प्रमुख है । तीर्थक्षेत्र कमेटी सामान्यतः अंचलों की अनुशंसा पर ही क्षेत्र के विकास के लिए अनुदान स्वीकृत करती है एवं विभिन्न अंचलों / तीर्थक्षेत्रों से प्राप्त आवेदनों पर तीर्थक्षेत्र कमेटी अंचलों से सिफारिश करती है कि जितनी राशि तीर्थक्षेत्र कमेटी देगी उतनी ही राशि अंचलीय समिति अपने प्रयासों से (एकत्रित करके) क्षेत्र को देकर कार्य को पूर्ण करायेगी और उसकी पूरी रिपोर्ट तीर्थक्षेत्र कमेटी मुंबई कार्यालय को भेजेगी। जिससे भेजे गये अनुदान का सत्यापन किया जा सके।

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी अपने से सम्बद्ध क्षेत्रों को निम्नाकित नीति के अंतर्गत प्राप्त आवेदन पत्रों पर अनुदान स्वीकृत करने पर विचार करती है –

- ❖ तीर्थक्षेत्रों के अस्तित्व की सुरक्षा करने तथा उन्हें अतिक्रमण के बचाने के लिए चल रहे मुकदमों आदि में सहयोग के लिए।
- ❖ प्राचीन तीर्थक्षेत्रों के जीर्णोद्धार के लिए।
- ❖ तीर्थक्षेत्रों पर यात्री सुविधाओं तथा पेयजल, विद्युत एवं धर्मशाला आदि की व्यवस्था हेतु।
- ❖ पुरातत्व की दृष्टि से महत्वपूर्ण ऐतिहासिक, कलापूर्ण मंदिरों के जीर्णोद्धार के लिए।
- ❖ दिगम्बर जैन धर्म की पौराणिकता अक्षुण्ण रखने की दृष्टि से निर्मित एवं संचालित संग्रहालयों की सुरक्षा व्यवस्था के लिए ।

तीर्थक्षेत्र कमेटी से अनुदान प्राप्त करने के लिए आवेदक सदस्य क्षेत्र द्वारा अपनी कार्यकारणी समिति में अनुदान प्राप्त किये जाने वाले कार्य का स्पष्ट प्रस्ताव पास कराकर कार्यकारणी समिति के अध्यक्ष/मंत्री/कोषाध्यक्ष में से किन्ही दो के हस्ताक्षरों से भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी द्वारा निर्धारित प्रपत्र में आवेदन प्रेषित किया जाना चाहिए और आवेदन के साथ निम्न दस्तावेज संलग्न किये जाने चाहिए ।

1. क्षेत्र की कार्यकारिणी समिति के सदस्यों की निम्न प्रपत्र में सूची क्र.स. नाम एवं पूरा पता पद व्यवसाय संपर्क सूत्र
2. क्षेत्र का पूर्व वित्तीय वर्ष का अंकेक्षित आय-व्यय पत्रक
3. क्षेत्र के विधान/नियमावली की प्रति
4. क्षेत्र से सम्बंधित अन्य सूचनाएँ, जो आवश्यक समझी जावें।
5. शासकीय विभाग द्वारा प्राप्त क्षेत्र/मंदिर ट्रस्ट का रजिस्ट्रेशन नं. और तारीख (सर्टिफिकेट की प्रति) अनिवार्य है।

तीर्थक्षेत्र कमेटी के अनुदान हेतु आवेदन पत्र के साथ उपरोक्त दस्तावेजों को संलग्न कर २ प्रति बनायें जिसकी एक प्रति अंचल को प्रेषित की जाएँ और सुविधा की दृष्टि से एक प्रति कमेटी मुंबई कार्यालय (अध्यक्ष/महामंत्री) को भी भेजी जाना चाहिए । तत्पश्चात अंचल की अनुशंसा से उस क्षेत्र के अनुदान की सिफारिश को स्वीकार किया जायेगा।

तीर्थक्षेत्र कमेटी से संलग्नता प्राप्त प्राचीन जैन मंदिरों को मंदिर के जीर्णोद्धार आदि के लिए दान दिया जाता है जिसमें अंचल की अनुशंसा अनिवार्य है।

हमारी भावना है कि क्षेत्र के अल्प व्यय से होने वाले छोटे - मोटे सुधार एवं निर्माण कार्य तो क्षेत्र कमेटी स्वयं के व्यय से करा लेवें किन्तु स्थायी महत्त्व के अधिक व्यय के विकास एवं जीर्णोद्धार कार्यो के ही आवेदन भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी को भेजे जिन्हें स्थानीय कमेटी, अंचलीय समिति एवं केन्द्रीय समिति के अनुदान से पूर्ण किया जाये।

तीर्थक्षेत्र कमेटी के आय के स्रोत भी दान ही हैं अतः आप सभी अपने - अपने क्षेत्रों के समर्थ व्यक्तियों को केन्द्रीय समिति से जुड़ने हेतु प्रेरित करें।

शुभकामनाओं सहित

संतोष जैन (पेंढ़ारी)
राष्ट्रीय महामंत्री

समाज बचाओ - तीर्थ बचाओ

भारत में ही जन्मी, पुष्पित एवं पल्लवित हुई श्रमण संस्कृति की अमूल्य धरोहरों का सदियों से संरक्षण दिगम्बर जैन तीर्थों पर होता रहा है। हजारों वर्ष प्राचीन तीर्थंकर एवं देवी –देवताओं की मूर्तियाँ, शिल्प, भारतीय मनीषा के ज्ञान को संरक्षित करने वाली पांडुलिपियाँ इन तीर्थों पर संरक्षित हैं। कथंचित यह लिखना अतिशयोक्ति नहीं होगा कि हमारी संस्कृति की प्राचीनता के दिग्दर्शक हमारे तीर्थ ही हैं। अतः हमें अपनी संस्कृति एवं उसकी प्राचीनता को संरक्षित रखने हेतु तीर्थों के मूल स्वरूप, प्राचीनता के द्योतक अवशेषों, उनके विशाल परिसरों को बचाना होगा किन्तु यह हमारा दुर्भाग्य है कि आज विकास के नाम पर क्षेत्रों की प्राचीनता को नष्ट किया जा रहा है। मेरा विनम्र निवेदन है कि क्षेत्र के प्रबंधक विकास की योजना इस प्रकार बनावें कि प्राचीन अवशेष, प्राचीन मूर्तियाँ एवं प्राचीन परिसर सुरक्षित रहें।

आवश्यकतानुसार हम इस कार्य में सेवानिवृत्त पुराविशेषज्ञों या पुरातत्व विभाग के आधिकारियों का परामर्श भी ले सकते हैं। कुछ माह पूर्व मुझे शाश्वत तीर्थ अयोध्या जी के दर्शनार्थ जाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। वहाँ **आचार्यरत्न देशभूषण जी महाराज** की प्रेरणा से स्थापित भगवान ऋषभदेव के क्षेत्र बड़ी मूर्ति, रायगंज का परिसर तो विकसित किया ही जा रहा है किन्तु मुख्य बात पांच तीर्थंकरों की जन्मभूमियों का सुनियोजित विकास है। मैंने बाल्य काल में इन जन्मभूमियों पर बने प्राचीन चरण चिन्हों (टोंकों) के दर्शन किये थे एवं अब इन जन्मभूमियों पर बने भव्य मंदिरों के दर्शन किये। साथ में ही इन मंदिरों के परिसरों में बनी प्राचीन टोंकों को यथावत पाकर मन गद्‌गद् हो गया। ये ही हमारी प्राचीन तीर्थंकर जन्मभूमियां हैं इसके प्रमाण तो ये चरणचिन्ह ही हैं। अयोध्या तीर्थक्षेत्र कमेटी के अध्यक्ष **स्वस्तिश्री पीठाधीश श्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामी जी** एवं उनकी पूरी टीम इस दूरदर्शितापूर्ण निर्णय हेतु बधाई की पात्र हैं। प्रत्येक जन्मभूमि परिसर के विकास का प्लान इस प्रकार बनाया गया है कि प्राचीन अवशेषों एवं चरण-चिन्हों को पूर्णतः सुरक्षित रखा जा सके। यही दृष्टि सभी तीर्थों के विकास का प्लान तैयार करते समय रखी जाना चाहिए।

तीर्थों पर यात्री सुविधाओं एवं हरीतिमा के विकास से वे पर्यटन का केंद्र बन रहे हैं। शासन की धार्मिक पर्यटन को बढ़ावा देने की नीति के तहत वह अनेक सुविधाएं भी देती हैं किन्तु इन सबमें यह ध्यान देना जरूरी है कि पर्यटक हमारी संस्कृति एवं परम्पराओं का बहुमान करने वाले हों। धर्म विद्वेषी, अमर्यादित वस्त्र धारण करने वाले, माँसाहारी पर्यटकों की बहुलता न हो। एतदर्थ शाकाहारी, मद्यपान त्यागी, वस्त्रों की मर्यादा होने न्यूनतम शुल्क या प्रतिबंधित क्षेत्र के प्रतिबंध लगाए जा सकते हैं। गत २-३ माह में हमारे क्षेत्रों से जो समाचार मिले हैं वे इस मामले में सजग करते हैं। खाने-पीने की सामग्री बेचने वालों को नियंत्रित करने के मामलों में तो जैन यात्रियों का संयम एवं कमेटी द्वारा उपलब्ध कराई गई सेवाओं का उपभोग करने की मर्यादा ही सबसे सुरक्षित एवं कारगर उपाय है।

हमारे परम पावन तीर्थों पर साधुओं के वर्षायोग हो। विशेषतः अल्पविकसित, उपेक्षित तीर्थों पर साधुओं के वर्षायोग एवं शीत कालीन / ग्रीष्म कालीन प्रवास होने पर वहाँ सुविधाओं का विकास होगा। भक्तों/यात्रियों का आवागमन बढ़ेगा तथा दान राशि के आगमन पर स्वयमेव विकास की धारा चल पड़ेगी।

एक और समस्या है जैनों की घटती जनसंख्या या कहे समाज बंधुओं में से एक अच्छा प्रतिशत ऐसा हो रहा जिसे जैनत्व का बहुमान नहीं। २०११ की जनसंख्या के आंकड़े बताते हैं कि जैनों की प्रजनन दर १.४ है प्रति १० जोड़ों के १४ बच्चे हैं यह ऋणात्मक वृद्धि को प्रदर्शित करती है। यानि १०० दंपत्ति १४० बच्चों को जन्म देगें तो हमारा ग्राफ नीचे आएगा। वर्तमान आंकड़ों से इसकी भयावहता न दिखाई देने की वजह विगत २-३ जनगणनाओं में लोगो का धर्म के कालम में जैन लिखने की जागरूकता का थोड़ा बढ़ना भी है यह जागरूकता अच्छी बात है किन्तु वास्तव में भी जैन धर्मावलम्बियों की संख्या बढ़नी चाहिए।

विजातीय विवाहों की प्रवृत्ति ने स्थिति को बहुत बिगाड़ा है। हमारे समाज की बेटियां जब अजैन परिवारों में जाती हैं तो वे तो जैन रहती नहीं उनकी संतानें भी जैन नहीं रहती। वे सब धर्मविमुख हो जाती हैं। उनके मायके के परिवार भी सहिष्णुता की आड़ में जैनत्व से कटने लगते हैं। यदि हमारे परिवार में अजैन परिवार की बेटियां बहू बनकर जाती हैं तो वे हमारे परिवारों के चिंतन को प्रभावित करती हैं। जैनत्व या दिगम्बरत्व का गुणगान करने वाले परिवार या तो मौन हो जाते हैं या फिर मानव धर्म की बात करते हैं। जब दिगंबरत्व का गौरव करने वाले, बहुमान करने वाले परिवार ही न बचेगें तो फिर समाज का क्या होगा? जब हमारी समाज मजबूत नहीं होगी तो फिर तीर्थों का विकास कौन करेगा? उनकी रक्षा कौन करेगा ? हमारे कई फैमिली ट्रस्ट आज जैनों के हाथ से जा रहे हैं। अतःजरूरत इस बात की है कि हम समाज बचाएं। मेरा समाज के नेतृत्व करने वालों एवं प्रबुद्धजनों से अनुरोध है कि वे समाज के निचले स्तर तक सक्रियता बढ़ायें पारिवारिक संबंधों को बढ़ाने पर जोर देवें। समाज में ही विवाह करने का वातावरण बनायें। यदि समाज बचेगा तो तीर्थ भक्त बढ़ेंगे। तीर्थों पर विकास का वातावरण बनेगा।

इस पर्युषण पर्व पर यदि हम समाज एवं तीर्थों की रक्षा का संकल्प लें तो ही इसके मनाने की सच्ची सार्थकता है।

पर्युषण पर्व की सानंद समाप्ति पर मैं अपनी एवं सम्पादक मंडल के सभी सदस्यों की ओर से विगत एक वर्ष में हुए समस्त ज्ञात –अज्ञात अपराधों / भूलों हेतु क्षमा प्रार्थी हूँ।

डॉ. अनुपम जैन, ज्ञानछाया, डी-14, सुदामानगर,
इन्दौर-452 009 (म.प्र.) मो.: 94250 53822

पर्यूषण महापर्व: विकार और विकृतियों को जीतने का पर्व

डॉ. सुनील जैन 'संचय', ललितपुर

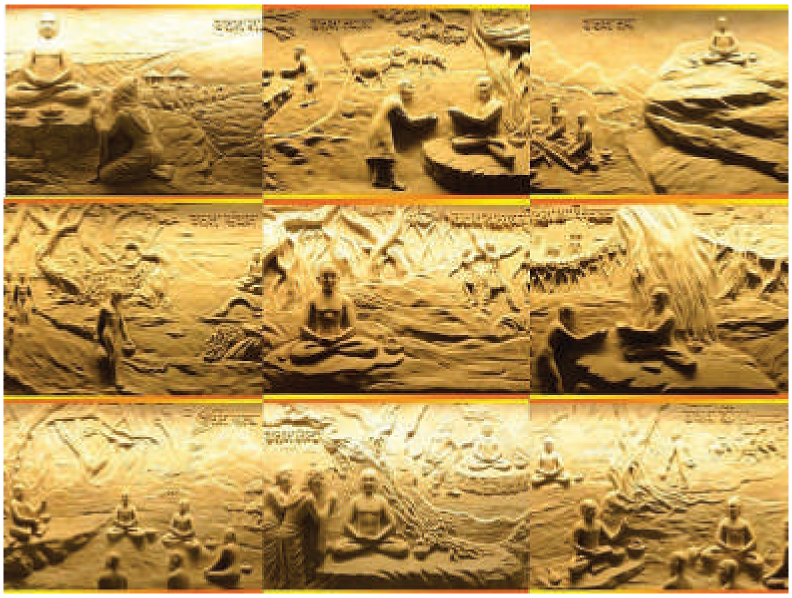

पर्यूषण महापर्व एक ऐसा सार्वभौम पर्व है जिसमें आराधक सांसारिक कार्यो से थोड़ी निवृत्ति लेकर क्रोध, मान, माया, लोभ आदि विकारों से बचकर संयम पूर्वक धर्म की आराधना करते हैं। यह पर्व हमारे जीवन में परिवर्तन का कारण बन सकता है। यह ऐसा पर्व है जो हमारी आत्मा की कालिमा को धोने का काम करता है। विकृति का विनाश और विशुद्धि का विकास इस पर्व का ध्येय है। दस दिन चलने वाले इस पर्व में प्रतिदिन धर्म के एक अंग की भलीभांति आराधना करके उसे जीवन भर के लिए हृदयंगम करने का प्रयास किया जाता है। इसलिए इसे दसलक्षण पर्व भी कहा जाता है। आत्म विशुद्धि के लिए इस पर्व के दौरान दस दिन तक क्रमशः दस धर्मों की आराधना की जाती है। जिन दस धर्मों की आराधना की जाती हैं वे इसप्रकार हैं:

१. उत्तम क्षमा - पहले दिन उत्तम क्षमा धर्म की आराधना की जाती है। सहनशीलता का विकास इस धर्म का उद्देश्य है। क्रोध को पैदा न होने देना। क्षमा गुणों का चिंतन करना। सभी के प्रति क्षमाभाव रखना। क्रोध की दिनों-दिन बढ़ती लहर पर अंकुश लगा कर ही हम पारिवारिक और सामाजिक शांति का मार्ग प्रशस्त कर सकते हैं।

२. उत्तम मार्दव - चित्त में मृदुता व व्यवहार में नम्रता होना। सभी के प्रति विनयभाव रखना।

३. उत्तम आर्जव - भाव की शुद्धता। जो सोचना सो कहना। जो कहना सो वही करना। छल, कपट का त्याग करना। कथनी और करनी में अंतर नहीं करना।

४. उत्तम शौच - मन में किसी भी तरह का लोभ न रखना। आसक्ति घटाना। न्याय नीति पूर्वक कमाना।

५. उत्तम सत्य - यथार्थ बोलना। हितकारी बोलना। थोड़ा बोलना। प्रिय और अच्छे वचन बोलना।

६. उत्तम संयम - मन, वचन और शरीर को काबू में रखना। संयम का पालन करना। मन तथा इंद्रियों पर काबू रखना।

७. उत्तम तप - मलिन वृत्तियों को दूर करने के लिए जो बल चाहिए उसके लिए तपस्या करना। तप का प्रयोजन मन की शुद्धि है। तप से आत्मा पवित्र होती है।

८. उत्तम त्याग - सुपात्र को ज्ञान, अभय, आहार और औषधि का दान देना तथा राग-द्वेषादि कषायों का त्याग करना।

९. उत्तम आकिंचन - किसी भी चीज में ममता न रखना। अपरिग्रह को स्वीकार करना। आत्मा से अन्य पर में एकत्व की तल्लीनता को त्याग अपने आप में लीन हो जाना आकिंचन है।

१०. उत्तम ब्रह्मचर्य - सद्गुणों का अभ्यास करना और अपने को पवित्र रखना। ब्रह्मचर्य का पालन करना। चिदानंद आत्मा में लीन होना।

आज भौतिकता की चकाचौंध में भागती जिंदगी की अंधी दौड़ में यह पर्व जिंदगी को जीने का नया मार्ग प्रशस्त करता है। यह पर्वराज हमारी चेतना पर धर्म का ऐसा संस्कार डालता है जिससे कुरीतियों पर कुठाराघात और संस्कारों का शंखनाद होता है। अपने को जीतने का यह पर्व आत्म जागरण करता है। इस पर्व का महत्त्व त्याग के कारण है, आमोद-प्रमोद का इस पर्व में कोई स्थान नहीं है। इस पर्व का संबंध खाने और खेलने से न होकर खाना और खेलना त्यागने से है। ये भोग का नहीं, त्याग का पर्व है। कोरोना के दौर में ऐसे आत्म जागरण के पर्वों की उपादेयता और अधिक बढ़ जाती है।

आज जिस तरह से नैतिक मूल्यों का क्षरण हो रहा है, पश्चिमी हवा में संस्कारों का दम घुट रहा है ऐसी परिस्थितियों में यह पर्व व्यक्ति के जीवन में सुसंस्कारों का नया संचार करने में माध्यम बनता है खासतौर पर युवा पीढ़ी के लिए यह पर्व उनकी उदास, निराश, तनाव युक्त जीवनशैली को उत्सव से जोड़कर नयी स्फूर्ति प्रदान करता है। संस्कारों को सुदृढ़ बनाने और अपसंस्कारों को तिलांजलि देने का यह अपूर्व अवसर होता है।

जैनधर्म के दिगम्बर, श्वेताम्बर दोनों सम्प्रदायों में इस पर्व को मनाने की परम्परा है। श्वेताम्बर परंपरा में 03 से 10 सितम्बर तक व दिगम्बर जैन परंपरा में 10 से 19 सितम्बर 2021 तक यह महापर्व श्रद्धा-आस्था के साथ मनाया जायेगा। संयम और आत्मशुद्धि के इस पवित्र पर्व पर समाज के सभी पुरुष, महिलाएं, बच्चे, युवा सभी पर्व को पूर्ण निष्ठा और आस्था के साथ मनाते हैं। सांसारिक मोह-माया से दूर मंदिरों में जिनेन्द्र भगवान की पूजा, अभिषेक, शांतिधारा, विधान, जाप, उपवास, प्रवचन श्रवण आदि दस दिन तक किया जाता है। मंदिरों को भव्यता पूर्वक सजाते हैं। कठिन व्रत नियमों का पालन करते हैं। भारत के अलावा ब्रिटेन, अमेरिका, कनाडा, आस्ट्रेलिया, जापान, जर्मनी व अन्य अनेक देशों में भी यह पर्व धूमधाम से श्रद्धा पूर्वक मनाया जाता है।

'क्षमा वीरस्य भूषणं'

(क्षमा आत्मा का स्वभाव है)

-प्रतिष्ठाचार्य विजय कुमार जैन (मंत्री)
भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर दि. जैन समिति

अनादिकाल से जैन आगमानुसार दशलक्षण धर्म का समापन क्षमावणी पर्व के द्वारा किया जाता है, जिसमे मुख्यरूप से आपस में एक-दूसरे से वर्ष भर में हुई भूलों के लिए परस्पर हाथ जोड़कर मन-वचन-काय से क्षमायाचना की जाती है। एकमात्र हम जैन आगम में ही यह देखते हैं कि एक-दूसरे से व्यक्ति आपस में हुई कलुषता के लिए क्षमावाणी पर्व मनाता है। दशलक्षण धर्म का प्रारंभ क्षमा से प्रारंभ होकर क्षमा पर ही समापन होता है। जैन आचार्यों के अनुसार कषाय मनुष्य को अनेक भवों तक नरक और तिर्यंच गति में भ्रमण करवाता है। यदि आपस में बैर-भाव हो जाये, तो उसे 6 माह के अंदर ही हाथ जोड़ कर समाप्त कर लीजिए। अन्यथा कोड़ाकोड़ी सागर वर्ष तक वह कषाय साथ-साथ चलती है। भगवान पार्श्वनाथ और कमठ के जीव का दस भव तक चलता हुआ बैर इस बात का उदाहरण है। बंधुओं! बैर से बैर कभी भी समाप्त नहीं होता है, जिस प्रकार से अग्नि से अग्नि नहीं समाप्त होती है। क्रोधरूपी अग्नि को बुझाने के लिए क्षमारूपी जल अवश्य डालना पड़ता है। इसी प्रकार से हम इस दुर्लभ मनुष्य भव में किसी भी प्रकार से बैर को स्थान न देकर हमेशा क्षमा को अपनाएं।

भारतवर्ष महात्मा और संतों का देश रहा है। हमारे राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने भी अपने स्वयं के प्राणघात करने वाले को भी क्षमा प्रदान की। यह साक्षात क्षमा का एक उदाहरण है। हम देखते हैं कि बच्चा कितनी भी गलती करे लेकिन अंत में मां उसे क्षमा कर देती है। यह सबसे उत्तम उदाहरण है।

खम्मामि सव्वजीवाणं, सव्वे जीवा खमंतु मे।
मित्ती मे सव्वभूदेसु, बैरं मज्झंणकेणावि।।3।।

अर्थात सब जीवों से मैं क्षमा याचना करता हूं। सब जीव मुझे क्षमा करें। यह हमारे जैन साधु प्रतिदिन दिन में 3 बार सामायिक करते हैं। उस सामायिक पाठ में यह बोलते हैं। जैन श्रावक प्रतिदिन मंदिर में जाकर आलोचना पाठ के माध्यम से अपने द्वारा दिनभर में की गई भूलों के लिए जिनेन्द्र प्रभु के आगे क्षमा याचना करता है। जैन शास्त्रों में कई उदाहरण हमें देखने को मिलते हैं, जैसे पाण्डव मुनियों के ऊपर अग्नि जला दी, लेकिन उन्होंने उसको समता परिणामों से स्वीकार किया, न कि क्रोध करके अपने क्रोध को प्रगट किया। इसी प्रकार से अनेक मुनियों और संतों के ऊपर उपसर्ग आते हैं, लेकिन वह उस उपसर्ग को

सहन करते हुए सभी को क्षमा कर देते हैं। **'क्षमा वीरस्य भूषणं'** के बारे में आचार्यों ने ग्रंथों में कहा कि क्षमा वीरों का आभूषण है। इसे कायर व्यक्ति नहीं धारण कर सकता है। क्योंकि क्षमा भी वीर पुरुष के पास होती है। कायर व्यक्ति क्षमा जैसे आभूषण को न ग्रहण कर सकता है न दे सकता है। क्षमा आत्मा का गुण है। यह आत्मा का स्वभाव होता है। क्योंकि हम देखते हैं कि किसी व्यक्ति को यदि क्रोध आ जाये, तो वह कितनी भी देर क्रोध करे, लेकिन अंततोगत्वा उसे अपने स्वभाव में आना पड़ता है और इसी की अपेक्षा यदि हम देखें कि कोई व्यक्ति हंसता है, कितना हंस सकता है। एक समय आता है कि उसे रुककर अपने वास्तविक स्वरूप में आना पड़ता है। क्योंकि शांत गुण क्षमा का है और क्षमा आत्मा का गुण है। इसलिए आत्मा का वास्तविक स्वरूप क्षमावाणी पर्व मनाकर सम्पन्न किया जाता है। जैन साध्वी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी द्वारा रचित भजन के माध्यम से कहती हैं -

क्षमा गुण को मन में धर लो, क्षमा को वाणी में कर लो।
शत्रु - मित्र सबमें समता का, भाव हृदय भर लो।।
क्षमा गुण को मन में धर लो।।टेक .।।
मैत्री का हो भाव सभी, प्राणी के प्रति मेरा।
गुणी जनों को देख हृदय, आल्हादित हो मेरा।।
वही आल्हाद प्रगट कर लो ,
क्रोध बैर भावों को तजकर, मन पावन कर लो।
क्षमा गुण को मन में धर लो।।
सारंगी सिंह शावं स्पृशति सुत धिया नंदिनी व्याघ्र पोतं।
मार्जारी हंसबालं प्रणायपरवशा के किकांता भुजंगीम्।।
बैराण्याजन्मजातान्यपि गलितमदा जंत वोन्येत्यजंति।
श्रित्वा साम्यै करूढं प्रशामितकलुषं योगिनं क्षीणमो हम।।

हरिणी सिंह के बच्चे को पुत्र की बुद्धि से स्पर्श करती है, गाय व्याघ्र के बच्चे को दूध पिलाती है, बिल्ली हंसों के बच्चों को प्रीति से लालन करती है एवं मयूरी सर्पों को प्यार करने लगती है। इस प्रकार से जन्मजात भी बैर को क्रूरजंतु

गण छोड़ देते हैं। कब ? जबकि वे पापों को शांत करने वाले मोह रहित और समताभाव में परिणत ऐसे योगियों का आश्रय पा लेते हैं अर्थात ऐसे महामुनियों के प्रभाव से हिंसक पशु अपनी द्वेष भावना छोड़ कर आपस में प्रीति करने लगते हैं। ऐसी शांत भावना का अभ्यास इस क्षमा के अवलंबन से ही होता है।

वर्तमान में जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी गणिनी प्रमुख आर्यिका 105 श्री ज्ञानमती माताजी हमारे बीच में विद्यमान हैं, जो कि दिगम्बर जैन समाज में वर्तमान समय में लगभग 1500 साधु - साध्वियां विराजमान हैं, उन सबमें सबसे प्राचीन दीक्षित हैं। 66 वर्ष संयम की साधना के व्यतीत हो चुके हैं। उनका यह कहना है कि क्षमा धर्म को धारण करके हम भव से पार हो कर मुक्ति को प्राप्त हो सकते हैं। क्षमा धारण करने वाला व्यक्ति इस भव में भी और पर भव में भी सुख को प्राप्त करता है। क्रोधी व्यक्ति के पास कोई भी व्यक्ति बैठना नहीं चाहता है, उस व्यक्ति से बात करना नहीं चाहता है। उससे कोई संबंध नहीं करना चाहता है और परस्पर व्यवहार में भी आपस में उसकी निंदा करते हैं। जो व्यक्ति सौम्य स्वभावी होता है, सभी उससे जुड़ना चाहते हैं एवं उसे ही अपने पास बैठाना चाहते हैं। क्रोधी व्यक्ति को जब क्रोध आता है, तब आंखें लाल हो जाती हैं, होंठ कपकपाने लग जाते हैं एवं वह बोलना कुछ चाहता है, शब्द मुख से कुछ और निकलता है। एक वैज्ञानिक ने क्रोधी व्यक्ति का खून इंजेक्शन में लेकर एक चूहे को लगा दिया, तो वह चूहा कुछ समय बाद तड़प कर मृत्यु को प्राप्त हो गया। इसलिए क्रोध हर प्रकार से बुरा ही होता है।

आज वर्तमान में सामाजिक जो भी समस्याएं हैं, एक देश का दूसरे देश से बैर विरोध है, वह सभी हल अहिंसा और क्षमा के द्वारा ढूंढे जा सकते हैं। यह क्षमावाणी पर्व हमें यही संदेश देता है।

पर्वों का महाकुंभ :- पर्युषण महापर्व

पं.देवेश कुमार शास्त्री, बलेह

पर्युषण पर्व जैन समाज का सबसे मुख्य एवं शाश्वत पर्व है इस पर्व को हमें वर्ष में तीन बार मनाने का सोभाग्य प्राप्त होता है भाद्र, माघ एवं चैत्र माह की शुक्ल पक्ष की पंचमी से चतुर्दशी तक इस पर्व को सभी हर्ष एवं उल्लास के साथ मनाते हैं। यह पर्व पर्वों का राजा माना जाता है इसी समय सोलह कारण, पुष्पांजलि, सुगंध दशमी, रत्नत्रय पर्व के साथ तीर्थंकर भगवान के कल्याणक पर्व मनाने का सोभाग्य भी प्राप्त होता है। यह पर्व त्याग और संयम का पर्व है। नर से नारायण, भक्त से भगवान, पतित से पावन, अवनति से उन्नति एवं दुखों से सुखों की और ले जाने का नाम धर्म है।

उत्तमक्षमामार्दवार्जवशौचसत्यसंयमतपस्त्यागाकिंचन्यब्रह्मचर्याणि धर्माः!!त.सू.अ.9.सू.6.!!

1.क्षमा- "क्षमा वीरस्य भूषणम्" क्षमा वीरों का आभूषण माना जाता है क्रोध का अभाव होना ही क्षमा है क्रोध के लिए कम से कम दो व्यक्ति की जरुरत होती है यह हमारा विभाव परिणाम होता है और इसके होने से हम हमारे स्वभाव परिणाम अर्थात क्षमा भाव को धारण नहीं कर सकते!

2. मार्दव- चित्त में मृदुता व व्यवहार में नम्रता होना किसी भी प्रकार से मन अहंकार का भाव न होना मैं का भाव, घमंड का भाव न होना क्योंकि यह भी हमारे विभाव परिणाम है इसके होने से हमारा स्वभाव अर्थात मार्दव का भाव हमारे अंतरंग मे नहीं आ सकता!

3. आर्जव- "भावना भव नाशिनी भावना भव बर्धिनी" द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव और भव इन पंच परिवर्तनों मे सबसे मुख्य है भावों का परिवर्तन, भावों के परिवर्तन से ही भव परिवर्तन संभव है भावों की शुद्धता, ऋजुता एवं सरलता का होना छल कपट का न होना!

4.शौच- तन और मन की पवित्रता रखना तथा लोभ वृत्ति के भावों का अभाव रखना क्योंकि लोभ के द्वारा ही पाप होता हैं पापों से अशुभ बंध होता है शुभ बंध के लिए लोभ का त्याग करना!

5. सत्य- हित, मित, प्रिय बचन बोलना, कम बोलना और काम का बोलना किसी जीव के प्राणों का घात न हो ऐसे बचनों का प्रयोग करना!

6.संयम- मन व पंच इन्द्रियों पर नियन्त्रण करना एवं षट् काय के जीवों की रक्षा करना!

7.तप- अशुभ क्रियाओं से निवृत्त होना तथा शुभ क्रियाओं में प्रवृत्ति करना क्योंकि तप से कर्मो की निर्जरा होती हैं और कर्मों की निर्जरा से मुक्ति होती है!

8.त्याग - पात्रों की अपेक्षा से चारों प्रकार का दान देना एवं अशक्त जीवों मैं दया का भाव रखते हुए सहायता करना हमारी संस्कृति में भोग का नहीं योग का तथा संग्रह का नहीं त्याग का महत्व है!

9.अकिंचन्य- पर वस्तु के प्रति ममत्व वुद्धि को हटाना यहां तक की यह शरीर भी मेरा नहीं है ऐसा बिचार करना इस संसार में जो कुछ भी है बह मेरा नहीं है!

10.ब्रह्मचर्य- शुद्ध चर्या का पालन करना, सद्गुणों का विकास करना एवं अपनी आत्मा में रमण करना!

दशलक्षण पर्व के दिनों में प्रायः सभी जिनमन्दिरों में प्रातः कालीन बेला में अभिषेक, शांति धारा, नित्य नैमित्तिक पूजन, बिधान एवं दोपहर मैं तत्वार्थ सूत्र जी का बाचन तथा रात्रि कालीन वेला मे आरती, शास्त्र बाचन, एवं धार्मिक सांसकृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया जाता है साथ ही साथ अपनी शक्ति अनुसार श्रृद्धालु एकाशन, उपवास एवं प्रोषधोपवास आदि करके पुण्य लाभ अर्जन करते हैं और अपने जीवन को कल्याण के मार्ग लगाने का प्रयास करते है। पर्युषण पर्व हमें साल भर में की गयीं भूलों को सुधार करने का अवसर प्रदान करता है।

23 सितम्बर - मुनि दीक्षा दिवस विशेष

प्रशममूर्ति आचार्य श्री 108 शान्ति सागर जी महाराज 'छाणी'

- समीर जैन, दिल्ली

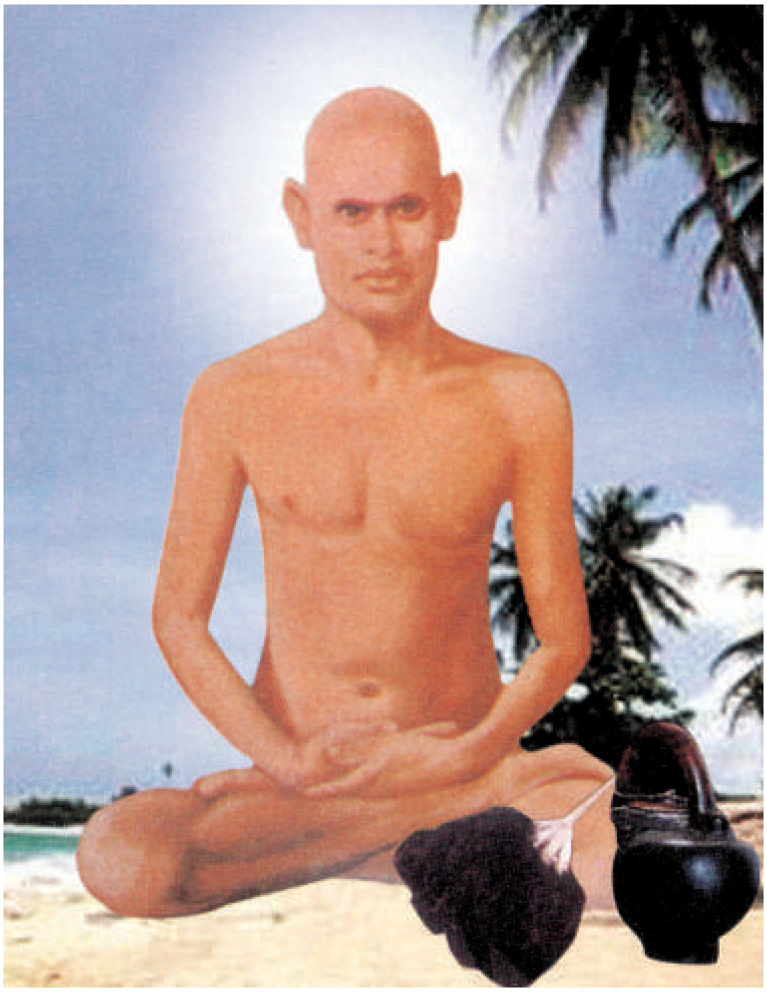

परम पूज्य आचार्य श्री 108 शान्ति सागर जी महाराज 'छाणी' का जन्म सन 1888 में कार्तिक बदी ग्यारस को राजस्थान प्रान्त के उदयपुर नगर के समीप स्थित छाणी ग्राम में हुआ था| आपने सन 1922 में क्षुल्लक दीक्षा ग्रहण की तथा एक वर्ष पश्चात ही सन 1923 में भाद्रपद शुक्ल चतुर्दशी तदनुसार 23 सितम्बर 1923 को राजस्थान के सागवाड़ा नगर में मुनि दीक्षा अंगीकार कर आत्म-कल्याण के मार्ग पर आरुढ़ हुए| मुनि रूप में आपने दिगम्बर मुनि की चर्या, उनके मूलगुणों की साधना तथा उनके तपश्चर्या के विविध आयामों से जैन समाज को परिचित करवाया|

इस परंपरा के पंचम पट्टाधीश परम पूज्य आचार्य श्री 108 विद्याभूषण सन्मति सागर जी महाराज के प्रमुख शिष्य परम पूज्य आचार्य श्री 108 अतिवीर जी मुनिराज ने पूज्य आचार्य-प्रवर के समाधि दिवस के संदर्भ में उनके चरणों में अपनी विनयांजलि अर्पित करते हुए बताया कि आचार्य श्री 108 शान्ति सागर जी महाराज 'छाणी' ने उत्तर भारत में भ्रमण कर मुनि परंपरा को संरक्षित एवं व्यवस्थित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है| यद्यपि आचार्य श्री को दीक्षोपरांत मात्र 22 वर्ष ही धर्म प्रचार हेतु मिले परन्तु जैन मुनि परंपरा में उनका योगदान अत्यंत विशिष्ट है| आपने 1923 से लेकर 1944 के मध्य लगभग समस्त उत्तर भारत में दिगम्बर जैन मुनि के रूप में सतत विहार किया|

आप एक सच्चे समाज सुधारक थे तथा आपने समाज में व्याप्त कुरीतियों को दूर करने का साहसिक प्रयत्न किया। आपके अहिंसात्मक एवं धर्ममय प्रवचनों के माध्यम से कुप्रथाओं पर बंदिश लगी| गिरिडीह (झारखण्ड) प्रवास के दौरान आपके संस्कारित प्रवचनों से प्रभावित होकर एवं आगमोक्त चर्या को देखकर स्थानीय समाज ने सन 1926 में आपको आचार्य पद से सुशोभित किया|

आचार्य श्री 108 शान्ति सागर जी महाराज 'छाणी', प्रथम ऐसे दिगम्बर मुनिराज थे जिन्होंने उत्तर भारत के नगरों की दूर-दूर तक पदयात्रा करके दिगम्बर साधु के विहार का मार्ग प्रशस्त किया| आपने सन 1926 में अपने संघ सहित कानपुर, लखनऊ, गोरखपुर, अयोध्या और बनारस आदि प्रमुख नगरों में धर्मप्रभावना करते हुए शाश्वत तीर्थाधिराज श्री सम्मेद शिखर जी की ओर मंगल विहार किया था| पिछले सौ-डेढ़ सौ वर्षों के इतिहास में अभी तक कोई भी दिगम्बर मुनिराज यहाँ नहीं पधारे थे|

राजस्थान के ब्यावर में इस युग के दो महान आचार्य - चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री 108 शान्ति सागर जी महाराज ' दक्षिण' एवं प्रशममूर्ति आचार्य श्री 108 शान्ति सागर जी महाराज 'छाणी' का वर्षायोग एक साथ सानंद संपन्न हुआ। आपके धर्मप्रेरक उपदेशों से प्रभावित होकर समाज ने अनेक विद्यालय, धर्मपाठशालायें, वाचनालय, साधना आश्रम तथा साहित्य प्रकाशक संस्थाओं की स्थापना की

सन 1944 में ज्येष्ठ बदी दशमी तदनुसार दिनांक 17 मई 1944 को राजस्थान के सागवाड़ा नगर में समाधिपूर्वक मरण कर इस नश्वर देह का त्याग किया| पूज्य आचार्य श्री का जितना विशाल एवं अगाध व्यक्तित्व था, उनका कृतित्व उससे भी अधिक विशाल था| आचार्य श्री के कर-कमलों द्वारा अनेक भव्य जीवों ने जैनेश्वरी दीक्षा अंगीकार कर अपना जीवन धन्य किया|इस गौरवशाली महान परम्परा में वर्तमान में सहस्त्राधिक दिगम्बर साधु समस्त भारतवर्ष में धर्मप्रभावना कर रहे हैं तथा भगवान महावीर के संदेशों को जनमानस तक पहुंचा रहे हैं|

दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी

डॉ. अनिल कुमार जैन, जयपुर

राजस्थान के करौली जिले के हिण्डौन परगना में चाँदनपुर गाँव में स्थित अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी एक प्रसिद्ध जैन तीर्थ है। लोगों का मानना है कि यहाँ स्थित भगवान महावीर की प्रतिमा अतिशयकारी है। दिगम्बर और श्वेताम्बर जैन ही नहीं अजैन लोग भी इसके दर्शन करने के लिए आते हैं। यह प्रतिमा लगभग एक हजार वर्ष प्राचीन है। गंभीर नदी के निकट इस गाँव के एक टीले से यह प्रतिमा लगभग चार सौ वर्ष पहले प्राप्त हुई थी जिसका एक बहुत ही रोचक किस्सा है।

एक जनश्रुति के आधार पर यह प्रचलित है कि एक ग्वाला इस टीले पर प्रतिदिन अपनी गाय चराने आता था। संध्या के समय वह अपनी गायों को लेकर घर चला जाता था। लेकिन एक दिन बड़ी अजीब घटना हुई। जब वह दूध दोहने के लिए बैठा तब उसने पाया कि एक गाय दूध नहीं दे रही है। कई दिनों तक ऐसा होता रहा। उसे लगा कि कोई दूसरा उसकी गाय को घर आने से पहले ही दोह लेता है। उसने इसकी छानबीन करने की ठानी। वह उस गाय पर नजर रखने लगा। उसने जो देखा उसे देखकर वह स्तब्ध रह गया। यह देखकर उसके आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा कि टीले के एक स्थान पर उस गाय का दूध स्वतः ही झर रहा है। दूसरे दिन फिर उसी स्थान पर यही घटना हुई। जब यह घटना लगातार होने लगी तो उसने उस स्थान को खोदने की सोची। थोड़ा सा ही खोदने पर उसे उपरोक्त प्रतिमा दिखी। उसने आदर पूर्वक उसे निकाला तथा उसी टीले पर एक ऊँचे स्थान पर उसे विराजमान कर दिया। तत्पश्चात् वहाँ एक छोटा मंदिर बना दिया गया।

इस प्रतिमा की प्रसिद्धि होने लगी। आसपास के लोग इसके दर्शन को आने लगे। सन् 1720 (संवत् 1777) में हिण्डौन के फौजदार अमरचंद बिलाला ने नए मंदिर का निर्माण कराया। जब इस मूर्ति को रथ पर रख कर टीले से नए मंदिर की ओर ले जाया जाने लगा तब यह रथ बिल्कुल भी नहीं खिसका। कई प्रयत्न किये गये तब भी मूर्ति को विस्थापित नहीं किया जा सका। तभी किसी ने एक युक्ति बताई कि जिसने इस मूर्ति को निकला है वही रथ को खींचे। ऐसा ही किया तब रथ बिना किसी बाधा के चलने लगा। तब से ही यह परंपरा रही है कि प्रतिवर्ष रथयात्रा के वार्षिक आयोजन में उस ग्वाले के परिवार का ही कोई व्यक्ति रथ को जरूर हाथ लगाता है।

एक दूसरी जनश्रुति भी प्रचलित रही है। दीवान जोधराज पल्लीवाल ज्ञातिय डगिया चौधरी गोत्रीय एक जैन श्रेष्ठी थे। इनके पिता का नाम मंगलचंद था तथा माता का नाम कृपालुदेवी था। दीवान जोधराज का जन्म अलवर जिले के हरसाना ग्राम में सन् 1733 में हुआ था। उस समय भरतपुर राज्य के शासक जाट राजा हुआ करते थे। राजा सूरजमल से लेकर केसरीसिंह तक जोधराज यहाँ के दीवान रहे। सन 1764 के आसपास यहाँ के शासक रणजीतसिंह इनसे अप्रसन्न हो गये तथा इनको मृत्युदण्ड सुना दिया। दीवान जोधराज ने चाँदनपुर की भगवान महावीर की मूर्ति का स्मरण किया तथा निश्चय किया कि यदि इस सजा से बच गया तो वह भगवान महावीर का भव्य मंदिर बनवायेगा। जोधराज को मारने के लिए तोप से एक के बाद एक तीन गोले दागे गये लेकिन एक भी गोला नहीं चला। भगवान महावीर की कृपा से जोधराज मृत्यु से बच गया। तत्पश्चात् सन् 1769 में केसरीसिंह के शासन में उसने भगवान महावीर का तीन शिखर वाला मंदिर बनवाया जो आज भी स्थित है।

श्री महावीरजी क्षेत्र के आसपास के गांवों में अनके पल्लीवाल रहते थे। प्रारंभ में अधिकतर पल्लीवाल दिगम्बर आम्नायी थे तथा उनके मंदिर भी दिगम्बर आम्नायी थे। लगभग 60-70 वर्ष पहले यहाँ के अनेक पल्लीवाल आगरा चले गये। सेठ आनंदजी कल्याणजी पेढ़ी मुंबई ने इस अवसर का लाभ उठाया तथा जो शेष पल्लीवाल थे उनमें से कुछ को विश्वास में लेकर जीर्णोद्धार के नाम पर यहाँ के मंदिरों की मूर्तियों के आँखें लगाकर उन्हें श्वेताम्बरी बना दिया गया।

1. चूँकि जनश्रुति के आधार पर श्री महावीर जी क्षेत्र के मंदिर का संबंध पल्लीवाल जातिय दीवान जोधराज से रहा है तथा यहाँ आसपास के पल्लीवाल मात्र श्वेताम्बर जैन ही रह गये थे, अतः इसी आधार पर सेठ आनंदजी कल्याणजी पेढ़ी का कहना है कि श्री महावीर जी का मंदिर श्वेताम्बरों का है तथा भगवान महावीर की मूर्ति भी श्वेताम्बर आम्नायी ही है। इस बात को लेकर पिछले अनेक वर्षों से विवाद चल रहा है तथा कई दशकों से कोर्ट में लगातार मुकदमा भी

चल रहा है। दिगम्बर लोग निचली अदालत से मुकदमा जीत गये थे, लेकिन उसके बाद श्वेताम्बर लोगों ने उच्च न्यायालय में मुकदमा दायर कर दिया।

2. हमारी दृष्टि में यह बहुत ही दुर्भाग्यपूर्ण है कि हम अपनी शक्ति को इस अनावश्यक कार्य में नष्ट कर रहे हैं। शायद यह मुकदमेंबाजी बंद हो भी जाय लेकिन कुछ स्वार्थी लोग ऐसा नहीं होने देना चाहते हैं। जिस आधार पर श्वेताम्बर लोग श्री महावीर जी के मंदिर को श्वेताम्बर आम्नायी होना मानते हैं उसके लिए वे निम्न तर्क देते हैं:
3. श्री महावीर भगवान की मूर्ति श्वेताम्बर है, अतः यह मंदिर भी श्वेताम्बर है।
4. दीवान जोधराज श्वेताम्बर-परंपरा को मानते थे। उन्होंने तीन मूर्तियों की प्राण-प्रतिष्ठा / अंजनशलाका करवाई थी, ये तीनों मूर्तियां श्वेताम्बरी थीं। इनमें से एक मूर्ति भरतपुर के श्वेताम्बर मंदिर में, एक डीग के श्वेताम्बर मंदिर तथा एक अन्यत्र जोकि वर्तमान में मथुरा के म्युजियम में स्थित है, विराजमान कर दिया गया था।
5. श्री महावीर जी में भी एक मूर्ति श्वेताम्बरी थी लेकिन उसे मंदिर के निकट के एक कुए में डाल दिया गया।
6. प्रसिद्ध दिगम्बर जैन विद्वान पंडित श्री कैलाशचंद्र जी (बनारस वालों) ने "कल्याण" पत्रिका के वर्ष ३१ के तीर्थांक में "दि. जैन तीर्थ क्षेत्र" नाम से एक लेख प्रकाशित कराया था। इसमें उन्होंने दीवान जोधराज की ऊपर वाली घटना का जिक्र करते हुए स्वीकार किया था कि इस मंदिर का निर्माण दीवान जोधराज ने करवाया था।
7. डॉ. राम पाण्डे ने भी अपने शोध-प्रबन्ध में लिखा है कि दीवान जोधराज ने श्री महावीरजी सहित अनेक जैन मंदिरों का निर्माण कराया था।
8. चूँकि दीवान जोधराज श्वेताम्बर थे, अतः यह मंदिर भी श्वेताम्बरी ही है।

हमने इन सभी बातों की छानबीन करने की कोशिश की। हम इसकी क्रमशः चर्चा करेंगे।

1. श्री प्रकाश चन्द्र जैन, रिटायर्ड IAS वर्षों तक श्री महावीर जी क्षेत्र के मंत्री रहे। आपका कुछ समय पूर्व सन् २०२१ में ९० वर्ष की आयु में निधन हो गया। आप भरतपुर तथा अलवर में जिलाधिकारी रहे तथा हरसाना का भ्रमण भी किया था। आपके अनुसार भगवान महावीर की मूर्ति का अनेक बार सर्वे कराया जा चुका है। **हर बार सर्वे में पाया गया कि मूर्ति पूर्णतः दिगम्बरी ही है।** दूसरी बात यह कहना बिल्कुल गलत तथा निराधार है कि एक श्वेताम्बर मूर्ति जिसे दीवान जोधराज ने प्रतिष्ठित करवाया था, को मूल मंदिर के नजदीक वाले कुए में डाल दिया गया। उन्होंने बताया कि न तो उनके जीवन काल में ऐसी कोई घटना हुई और न ही उन्होंने अपने बुजुर्गों से ही यह बात सुनी। वस्तुतः ऐसी कोई मूर्ति थी ही नहीं।
2. पण्डित श्री कैलाशचंद्र जी को जब यह पता चला कि कल्याण में प्रकाशित उनके लेख का गलत प्रकार से प्रयोग किया जा रहा है तो उन्होंने ३० जनवरी सन् १९८६ के "जैन सन्देश" पत्र में अपने सम्पादकीय में स्पष्टीकरण प्रकाशित किया। उन्होंने लिखा - **"श्री महावीरजी के दि. जैन मंदिर का निर्माण किसने किया इसके लिए मेरे पास कोई ऐतिहासिक आधार व प्रमाण न उस वक्त था और न अब है।** उन दिनों वाराणसी में मुझसे मिलने एक श्वेताम्बर मती श्री हीराचन्द जी प्रायः मिलते रहते थे। एक बार उनसे चर्चा हुई थी। उनके कथनानुसार ही इस क्षेत्र पर हुए श्री जोधराज जी के तोप के गोले से बचने के अतिशय की बात का मैंने अपने उस लेख में समावेश किया था।"

वे आगे लिखते हैं, "ऐसी चमत्कारिक अतिशय रूप में घटनायें हमारे लगभग सभी अतिशय क्षेत्रों के साथ कही जाती रही हैं व जुडी हुई हैं। उनकी ऐतिहासिकता व सत्यता के प्रमाण खोजने के बजाय उन घटनाओं से इस तीर्थ के प्रति लोगों की भावनाएं व श्रद्धा अधिकाधिक उत्पन्न हो, यही ध्येय लेखक का उनके दिग्दर्शन में रहता है । लेकिन मुझे यह जान कर आश्चर्य हुआ कि मेरी उन भावनाओं का लाभ श्वेताम्बर समाज दि. जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी के आधिपत्य के लिए साक्ष्य तैयार करने में उठाना चाहता है। यह कोई स्वस्थ परम्परा नहीं है ।" मेरा मानना है कि आदरणीय पंडितजी का यह स्पष्टीकरण उपरोक्त बिंदु न. ३ के उत्तर

के लिए पर्याप्त होगा।

3. डॉ. राम पाण्डे के शोध-प्रबन्ध "A social and political history of the state of Bharatpur upto 1826" को हमने राजस्थान विश्वविद्यालय की लाइब्रेरी में जाकर पूरा पढ़ा। यह शोध-प्रबन्ध उन्होंने सन् १९६९ में राजस्थान विश्वविद्यालय में पीएचडी के लिए जमा कराया था। बाद में इसे पुस्तक के रूप में भी प्रकाशित कराया गया था। इस शोध-प्रबन्ध में मात्र एक स्थान पर passing remarks की तरह जोधराज का नाम आया है। वे लिखते हैं, "Even then Najaf Khan consolidate Ranjeet Singh and promising his **Deewan Jodhraj (Ranjeet Singh's Mukhtar and famous for erecting so many temples of Mahavirji in different towns of the former states of Bharatpur and Jaipur)** that after the emporer's share of one-third has been settled --"। यहाँ मात्र इतना ही लिखा है कि "वह दीवान जोधराज जिसने महावीरजी के अनेक मंदिर भरतपुर और जयपुर राज्यों में बनवाये"। ऐसा नहीं लिखा कि उन्होंने चांदनपुर के महावीरजी के मंदिर को बनवाया। इसी शोध-प्रबन्ध में लिखा है कि भरतपुर और जयपुर के शासकों में दुश्मनी रहा करती थी। ऐसी स्थिति में जयपुर के राजा अपने दुश्मन राज्य (भरतपुर) के दीवान को अपने राज्य में कोई गतिविधि करने की मंजूरी देगा, यह संदेहात्मक ही है।

   मैंने स्वयं डॉ. राम पाण्डे जी से फोन पर बात की। बाद में उनसे मिलने उनके घर भी गया और इस विषय पर चर्चा की। हमने उनसे यह जानना चाहा कि क्या उनके पास ऐसा कोई प्रमाण है जो यह सिद्ध करता हो कि श्री महावीरजी के मंदिर का निर्माण दीवान जोधराज ने करवाया। वे कोई स्पष्ट उत्तर न दे सके।

4. दीवान जोधराज अलवर जिले के हरसाना गाँव के थे। अतः हमने वहाँ के मूल निवासी ८७ वर्षीय डॉ. महावीर कोटिया जी (जयपुर) से बात की जोकि स्वयं पल्लीवाल जाति से हैं। डॉ. कोटिया एक अच्छे साहित्यकार हैं तथा कुशल संपादक रहे हैं। उनकी एक पुस्तक "जैन धर्म में कृष्ण" "भारतीय ज्ञानपीठ" से प्रकाशित हुई है। उन्होंने बताया कि वे बचपन से देखते चले आ रहे हैं कि हरसाना में मात्र एक पल्लीवाल जैन मंदिर था। मंदिर की मूर्तियों में कभी आँखे नहीं लगीं थीं, जबकि श्वेताम्बर मूर्तियों में आँखें लगी होती हैं। सभी लोग उस मंदिर में दर्शन, प्रक्षाल / अभिषेक व पूजा दिगम्बर पद्धति से करते रहे हैं। आगरा के पल्लीवाल दिगम्बर मंदिर की तरह यहाँ भी भादों के महीने में पंचमी और चतुर्दशी तथा क्षमावाणी पर्व (पड़वा ढोक) आश्विन कृष्णा एकम (असोज वदी एकम) के दिन मानते रहे हैं तथा उस दिन अभिषेक भी होते रहे हैं। हाँ यह अवश्य है कि वहाँ कुछ श्वेताम्बर स्थानकवासी साधु और साध्वियां भी आते रहते थे लेकिन वे भी उसी मंदिर में ठहर जाते थे। पहले मन्दिर में शिखर नहीं था। बाद में एक चातुर्मास के दौरान दिगम्बर मुनि श्री सम्यक्त्वसागर जी (जोकि दीवान जोधराज के वंशज ही थे) की प्रेरणा से मंदिर में शिखर का निर्माण कराया गया। आज भी वह मंदिर उसी स्थिति में है। यही बात वहाँ के रहने वाले अन्य लोगों ने भी बताई। इन बातों से हमें प्रतीत होता है कि हरसाना का मंदिर दिगम्बरी रहा है लेकिन सभी पल्लीवाल जैनों में परस्पर अच्छा मेलजोल रहा है। इसलिए वहाँ कभी कोई विवाद नहीं रहा है।

5. दीवान जोधराज दिगंबर थे, यह एक और बात से सिद्ध होती है। अलवर निवासी श्री सतीशचन्द जी (जैन बुक स्टोर वालों) ने हमें दीवान जोधराज की वंशावली उपलब्ध करवाई। श्री सतीशचन्द जी की रिश्तेदारी दीवान जोधराज के वंशजों से है। उस वंशावली के अनुसार एक शाखा क्रमशः इस प्रकार रही है – मंगलचंद जी --> **दीवान जोधराज** --> सुखपाल --> प्रेमराज --> चतुर्भुजलाल --> गेंदालाल --> आनंदीलाल --> **अमरचन्द** --> मुकेश। श्री अमरचंदजी सतीशचन्दजी के ससुर थे। अमरचंदजी तथा उनका परिवार हमेशा से दिगम्बर परंपरा को मानता रहा है। अमीरचंदजी ने पल्लीवाल ज्ञातियोत्पन्न आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज हस्तिनापुर वालों (अलावड़े वालों) से दिगम्बर मुनि दीक्षा ले ली थी तथा दीक्षोपरांत उनका नाम मुनि सम्यक्त्वसागर रखा गया था। मुनि श्री सम्यक्त्वसागर जी का समाधिमरण ७३ वर्ष की आयु में सन् २००९ में हो गया था। यहाँ कहने का तात्पर्य यह है कि दीवान जोधराज के वंशज आज भी न केवल दिगम्बर परंपरा को मानते हैं बल्कि उनके परिवार के ही वंशज दिगम्बर मुनि भी हुए हैं।

लेखक पल्लीवाल जैन बंधु हैं एवं पल्लीवाल जैन समाज के इतिहास के सुप्रसिद्ध लेखक हैं। श्री महावीर जी प्रबंधकारिणी कमेटी द्वारा वर्तमान में इस क्षेत्र का संचालन कुशलतापूर्वक किया जा रहा है। -संपादक

इन सब बातों पर विचार करने पर यह निश्चय होता है कि दीवान जोधराज मूलतः दिगम्बर आम्नायी थे। लेकिन जब कोई व्यक्ति किसी उच्चपद पर आसीन हो जाता है तब वह अन्य धर्मों और आम्नायों को भी सामान रूप से सम्मान देने लगता है। इसीकारण यदि दीवान जोधराज द्वारा प्रतिष्ठित कोई श्वेताम्बर मूर्ति मिलती भी है तो इसमें कोई आश्चर्य नहीं है। इतिहास से पता चलता है कि पहले अनेक राजा ऐसे हुए हैं जो सभी धर्मों का आदर करते थे तथा सभी धर्मों के मंदिरों को आर्थिक सहायता भी करते थे। दूसरी बात यह है कि न तो पण्डित श्री कैलाशचंद्र जी की बात से और न ही डॉ. राम पाण्डे जी की बात से यह सिद्ध हो पाता है कि श्री महावीरजी के मंदिर का निर्माण दीवान जोधराज ने कराया।

डॉ. गोपीचन्द्र वर्मा (सेवा निवृत प्राचार्य – राजकीय महाविद्यालय, बांसवाडा) ने अपनी पुस्तक "दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी का संक्षिप्त इतिहास एवं कार्य विवरण" में श्री महावीरजी के मंदिर से सम्बंधित सभी प्राचीन दस्तावेजों को संग्रहीत किया है। जिससे यह पता चलता है कि प्रारंभ से ही यहाँ के मंदिर पर दिगम्बर परंपरा के भट्टारकों की गद्दी रही है। इतना ही नहीं, जयपुर राज्य से उन्हें नियमित अनुदान भी प्राप्त होता था। उसमें कुछ जैन लोगों के गोत्रों का भी जिक्र है जो दिगम्बर समाज में ही पाये जाते हैं। इस प्रकार प्रारम्भ से ही दिगम्बर समाज द्वारा ही यहाँ की व्यवस्था व देखरेख की जाती रही है।

इस सब बातों से निष्कर्ष निकलता है कि श्री महावीरजी का मंदिर प्रारंभ से ही दिगम्बर आम्नायी रहा है। निचली अदालत दिगम्बरों के पक्ष में अपना फैसला दे चुकी है, फिर भी श्वेताम्बरों ने पुनः याचिका दायर कर दी है। हमारा मानना है कि श्वेताम्बर और दिगम्बर दोनों को अनावश्यक मुकदमेंबाजी में अपनी शक्ति के दुरूपयोग से बचना चाहिए और सौहार्द का वातावरण स्थापित करना चाहिए। वैसे भी जैन समाज की **कुल आबादी पूरे देश की आबादी का मात्र 0.4% ही है।** जैन समाज के सामने अनेक मुद्दे हैं जिन्हें हम सब को मिलकर सुलझाना चाहिए।

जैन तीर्थों की समस्याएं

सचिन जैन, बड़ौत

बंधुओं आज हमारे जितने भी तीर्थ स्थल है, उनमे से अधिकतर सुनसान या अजैन समाज के बीच में है या कालांतर में हो गए हैं, जहाँ जाने के रास्ते संकीर्ण है, बस या बड़ी कार जाने में परेशानी होती है। कई क्षेत्रों में भोजन या चाय नाश्ते की व्यवस्था या रुकने की व्यवस्था नहीं हो पाती। कुछ क्षेत्रों में मुख्य कर्मचारी अजैन है।

समस्या का समाधान जैन यात्रियों द्वारा

1 यात्रियों की सतर्कता।
2 यात्री समूह में यात्रा करें।
3 क्षेत्रो में केवल क्षेत्र के भोजनालय में भोजन करें। चाय नाशता करें भले ही वो महंगा या कम स्वादिष्ट ही क्यों न हो।
4 भिखारियों को भीख या खाने पीने का सामान बिलकुल न दें।
5 क्षेत्र में बाजार की किसी भी दुकान चाहे उसमे जैन धर्म का नाम या भगवान का नाम क्यों न लिखा हो बिना परखे कि वो जैन है कुछ भी न ख़रीदें। आप अपनों को उपहार देने के चक्कर में कई गलत लोगों को बढ़ावा दे देते हैं।
6 अपने लोगों का ध्यान रखें।
7 यात्रा करते समय किसी से भी व्यर्थ विवाद न करें।
8 परेशानी होने पर तुरंत क्षेत्र के पदाधिकारियों को सूचित करें।
9 अपने खाने पीने का सामान लेकर चलें, संयम से रहें। फालतू ख़रीदी और खाने पीने का सामान क्षेत्र के आजू बाजू की अजैन लोगों से न लें तथा वाहन का इंतजार किसी अनजान जगह में बैठकर न करें।
10 जो भी सामान लेना हो वह क्षेत्रों के पहले आने वाले नगर या बस्ती से लेवें, क्षेत्र में नही लेना।

अब क्षेत्रों के पदाधिकारियों की जिम्मेदारी

1 आप अपने क्षेत्र में जैन मैनेजर रखें।
2 भोजन की या अल्पाहार की आपातकालीन व्यवस्था करें।
3 यात्रियों को जोखिम के लिए सावधानी रखने कहें।
4 अपने क्षेत्र के सम्बंधित पुलिस अधिकारी डीएम एसपी या बड़े नेता से सदा संवाद रखें।
5 किसी भी अप्रिय घटना होने पर तन मन धन से उसे निपटायें और दुबारा न हो ऐसा सबक सिखायें।
6 आप समय समय पर क्षेत्रों पर जायें और समस्याओं को हल करें।
7 किसी बड़े शहर के पास तीर्थ है तो वे बस स्टैंड रेलवे स्टेशन के पास तीर्थ की दूरी तथा जाने के साधन और हेल्प लाइन नम्बर को होर्डिंग में दें।
8 सभी क्षेत्रों की कमेटी एक दूसरे से जुड़ी रहे और सहयोग करें। यात्रियों को आगे जाने के मार्ग और वहाँ की व्यवस्थाओं की जानकारी दें।

लिखने में कुछ गलती हो तो क्षमा करें।

अनोखा अतिशय क्षेत्र – भातकुलीजी

सुजीत राजकुमार खोलापुरे, पनवेल, मुंबई

भारतीय संस्कृति विश्व की महानतम संस्कृतियों में से एक है। जैन संस्कृति को उस संस्कृति का हृदय कहा जाता है। जैन संस्कृति का अपना बहुत गौरवमय इतिहास है। पर यह इतिहास किसी एक पुराण में अथवा किसी एक शिलालेख में अंकित नहीं है। हमारे गौरवमय अतीत का इतिहास इस विशाल राष्ट्र के मंदिरों में, मूर्तियों में, अभिलेखों एवं शिल्पों में बिखरा हुआ है। हमारे पूर्वजों का यह पौरुष प्रशंसनीय था कि उन्होंने विपरीत परिस्थितियों में भी अपने इतिहास की धरोहरों की सार-सम्हार की और नष्ट होने से बचाया।

जहाँ किसी मंदिर में या मंदिर स्थित मूर्ति में कोई चमत्कार दिखाई दे तो वह अतिशय क्षेत्र कहलाता है। ऐसे स्थान देवोपनीत चमत्कार या दैवीय अतिशय के कारण पूज्यता या ख्याति को प्राप्त होते हैं। द्रव्यगत विशेषता, क्षेत्रकृत प्रभाव, कालकृत परिवर्तन यहाँ स्पष्टतया देखा जा सकता है। दिन प्रतिदिन साक्षात चमत्कार दिखाई देता है। मानव अपनी आधि-व्याधि से दुखी होकर इन तीर्थों की शरण में आता है। मनोकामना की पूर्ति पर पुनः पुनः दर्शन-पूजन करता है। ऐसे अतिशय क्षेत्रों में एक तीर्थ है भातकुली, विदर्भ के अमरावती के पश्चिम में १८ किमी. की दूरी पर यह छोटा सा गाँव बसा है। पेढ़ी नदी के कारण गाँव की शोभा बड़ी है। जैन हो या अजैन हो, सबकी इस क्षेत्र पर बहुत श्रृद्धा है।

"बाहर देखो! जिस प्रांगण में, इंद्र सुशोभित होता है।
भीतर आदि-जिनेश्वर को लख, हर मन मोहित होता है॥
भातकुली का मंगल दर्शन, दर्शक भूल नहीं पाता,
वृषभनाथ प्रभु! मुझे शांति हो, तुम पद में मेरा माथा॥

विदर्भ की प्राचीन राजधानी का नाम कोंडण्यपुर था। महाभारत काल में विदर्भ में भीमक नाम का राजा राज्य करता था। उनके पुत्र का नाम रुक्मी और पुत्री का नाम रुक्मिणी था। रुक्मी ने अपनी बहन रुक्मिणी की शादी शिशुपाल से करने की योजना बनाई थी। लेकिन राजा भीमक चाहते थे कि उनकी सुपुत्री रुक्मिणी स्वयंवर से अपना पति चुने। रुक्मिणी अपनी कुलस्वामिनी अम्बादेवी के दर्शनकी अभिलाषा लेकर अम्बानगरी अमरावती आयी, यहाँ द्वारका के राजा श्रीकृष्ण ने रुक्मिणी का अपहरण कर लिया। उसके भाई रुक्मी को जब यह पता चला तो उसने अपनी सेना के साथ श्रीकृष्ण का पीछा किया और पेंढ़ी नदी तक आ पहुंचा लेकिन श्रीकृष्ण रुक्मिणी को रथ में लेकर दूर निकल गये थे। उनको पकड़ नहीं पाने की वजह से रुक्मी दुखी, अपमानित और खिन्न हो गया। उसने कोंडण्यपुर का त्याग करते हुए, भोजकुट (भातकुली) में अपनी राजधानी बनाने का विचार किया और वहीं रहने लगा। निराशा के कारण रुक्मी के सिर और दाढ़ी के बाल सन्यासियों की तरह बढ़ गये। भगवान नेमिनाथ का समवसरण भोजकुट में आया। रुक्मी के मन पर भगवान नेमिनाथ के उपदेशों का अच्छा प्रभाव पड़ा। उसने जैन धर्म का प्रचार करने का निर्णय लिया। भातकुली के दक्षिण में ५ मील के अंतरपर पेंढ़ी नदी के किनारे रुक्मी ने अपने दाढ़ी के बाल उतार लिए और इसलिए उस स्थान का नाम दाढ़ी-पीढ़ी पड़ा।

भातकुली के पश्चिम में १ मील की दूरी पर एक ऊँचा स्थान है। रुक्मी राजा ने इसी स्थान पर एक भव्य मंदिर का निर्माण कराया तथा वहाँ अजंता पर्वत के वेरुळ भाग से काले पाषण मंगवाकर शिल्पकारों के हाथों १००८ भगवान श्री आदिनाथ की मूर्ति बनवाई।

मूर्ति बन जाने के बाद इस मूर्ति को उस मंदिर में विधिपूर्वक स्थापित किया गया। भातकुली के मंदिर में आज जो मूर्ति विराजमान है, वह यही मूर्ति है। श्री आदिनाथ क्षेत्र भातकुली में स्थापित श्री १००८ भगवान आदिनाथ स्वामी की यह प्राचीन एवं मनोज्ञ मूर्ति पूरे भारतवर्ष में अद्वितीय एवं मनोज्ञ है। इतिहासकारों का अनुमान है कि भगवान श्री आदिनाथ की यह मूर्ति लगभग ३००० वर्ष पूर्व की होगी।

१२०० वर्ष के बाद इस क्षेत्र के मंदिर, राजवाड़े और प्राचीन भवन ध्वस्त हो गये। संवत १६५६ में मुगलों से इस मूर्ति की सुरक्षा के लिए मूर्ति को गाँव के मध्य में स्थित मिट्टी के एक टीले में छिपा दिया गया। यह अद्वितीय मूर्ति १८ वीं शताब्दी तक उसी स्थिति में गढ़ी में छिपी रही। शिवाजी महाराज के कार्यकाल में इस क्षेत्र से मुगलों की सत्ता समाप्त हो जाने के बाद यहाँ रहने वाले लोग पूर्णतया भयमुक्त हो गये।

१९ वीं शताब्दी के अंतिम काल में इस क्षेत्र में एक विलक्षण घटना हुई। कहा जाता है कि श्री आदिनाथ भगवान ने स्वयं ग्रामप्रमुख को स्वप्न में दर्शन दिए और मूर्ति के बारे में बताया। स्वप्न से जागते ही ग्रामप्रमुख ने गढ़ी को जगह-जगह खुदवाकर मूर्ति को ढूढ़ने का प्रयास किया लेकिन उसे मूर्ति के दर्शन नहीं हुए। कुछ समय पश्चात भगवान ने ग्रामप्रमुख को फिर स्वप्न में दर्शन दिए भगवान ने संकेत दिए कि गढ़ी में एक गाय नियमित घूमती फिरती रहती है और प्रतिदिन एक निश्चित स्थान पर अपने स्तनों से दूध टपका कर चली जाती है। एक दिन उसे सचमुच एक गाय दिखाई दी, जो अपने स्तन से एक स्थान पर दूध की वर्षा कर रही थी। ग्रामप्रमुख ने ग्रामवासियों की उपस्थिति में उस स्थान को शुभ मुहूर्त में भूमिपूजन कर खोदना प्रारम्भ किया। आखिर खोदते समय एक स्थानपर कुदाली चलाने वाले ने अचानक पाया कि उसकी कुदाली की नोंक जमीन में दबी भगवान की प्रतिमा के घुंघराले वाले बालों पर लग गई है। गाँव में उस समय जैन धर्म को मानने वाले लोग नहीं थे। इसलिए मूर्ति की पहचान नहीं हो सकी। कुछ लोगों ने उस मूर्ति को "ग्राम देवता" की प्रतिमा मानकर पूजना शुरू कर दिया, तो कुछ ने "बाबाजी महाराज" तो कुछ ने रुक्मी राजा की मूर्ति मानकर पूजना शुरू कर दिया। मूर्ति अत्यंत चमत्कारी थी। मूर्ति की पूजा-अर्चना से ग्राम वासियों की मनोकामनाएं भी पूर्ण होने लगी।

"आदिम तीर्थंकर प्रभो, आदिनाथ मुनिनाथ।
आधि-व्याधि अधममिटे, तुम पद में ममनाथ।।

देखते ही देखते इस मूर्ति की कीर्ति चारों ओर फ़ैल गयी। आसपास के गांवों से लोग दर्शन को आने लगे। रिद्धी-सिद्धी प्राप्त श्री नेमसागर महाराज अपने शिष्यों के साथ विहार करते हुए इस स्थान पर आये। पद्मासन लगाये बैठी इस दिगम्बर मूर्ति के सिर के पीछे प्रभामंडल था और इस मूर्ति की दृष्टि नासाग्र थी।

काले पाषाण से बनी इस दिव्य, मनोहारी दिगम्बर मूर्ति को देखकर पहचानने में महाराज को क्षणभर का भी विलम्ब नहीं हुआ। महाराज ने गांव वालों को जैन धर्म के २४ तीर्थंकर के नाम और उनके लक्षण समझाए। जिसके पश्चात गाँव वालों को पक्का भरोसा हो गया कि यह मूर्ति भगवान श्री आदिनाथ की ही है। महाराज जी यह मूर्ति अमरावती जैन समाज को देकर वहाँ के जिनमंदिर में स्थापित करना चाहते थे। पर गाँव वासियों ने ऐसा न करने का आग्रह किया। ग्राम वासियों की भावना को देखकर मुनिश्री के द्वारा १८०३ ई. में भातकुली में ही एक जिन मंदिर, धर्मशाला और सुरक्षा हेतु परकोटे का निर्माण कराया गया। आज भी यह क्षेत्र पूज्य श्री नेमसागर महाराज और मंदिर निर्माण में सहयोग देनेवाले ग्रामीणजनों की स्मृतियों को अपने भीतर समेटे हुए हैं।

प.पू. श्री ध्यानसागरजी महाराज ने अपने पूजन में लिखा है-

"आप दीप है शुद्ध ज्ञान के, स्वपर प्रकाशक जननामी।
विश्वदीप की धृत दीपक से, करें आरती हम स्वामी।।
अंतर दीपक जले हमारा, अंतसूतिमिर न रह पाए।
दिव्य ज्योति की पूजा करके, हम ज्योर्तिमय बन जाये।।

ऐसे इस क्षेत्रपर त्यागियों का भी आगमन होता रहता है। इसमें प्रमुखता से आचार्य श्री विद्यासागर जी, आचार्य श्री वर्धमान सागर जी, आचार्य श्री देवनंदी जी महाराज ससंघ दर्शन हेतु पधारे हैं। आहार के पश्चात आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज दोपहर का सामायिक करने आदिनाथ भगवान के सामने बैठ गये, इतने निश्चय और ध्यानमग्न बैठे कि हम सब देखने वाले अवाक हो गये। भगवान आदिनाथ और उनके सामने लघुनंदन। उनके शिष्य क्षु. श्री ध्यानसागर जी महाराज का चौमासा यहाँ संपन्न हुआ। आ. श्री विद्यासागर जी महाराज के आशीर्वाद से और क्षु. ध्यान सागर की प्रेरणा से मंदिर जीर्णोद्धार का कार्य शुरू हुआ। २०१९ में भव्य पंचकल्याणक महोत्सव प.पू. १०८ श्री समतासागरजी महाराज के ससंघ सानिध्य में संपन्न हुआ। २०२० में गिरनार उपसर्ग विजेता प.पू. श्री प्रबलसागरजी महाराज का चौमासा हुआ।

प्रतिवर्ष कार्तिक कृष्ण पंचमी को यहाँ वार्षिक रथोत्सव आयोजित किया जाता है। जिसमें दूर-दूर से श्रद्धालु सम्मलित होकर पुण्यार्जन करते हैं। यह विशुद्ध, शास्त्र सम्मत एवं मनोहारी, अनूठी और अद्वितीय कलाकृति है। विगत लगभग १० वर्षों में यहाँ मूलनायक मंदिरजी प्रदक्षिणा परिसर नूतनीकरण, भगवान पार्श्वनाथ और भगवान चन्द्रनाथ मंदिर जी का जीर्णोद्धार, सुन्दर शिखरों का निर्माण, भगवान बाहुबली मूर्ति की स्थापना, आ. विद्यासागर प्रवचन गृह, ९ त्यागी निवास, ४ सर्व सुविधायुक्त अतिथि निवास, १० कमरों की प्रशस्त धर्मशाला, स्त्री-पुरुषों के लिय अलग-अलग १६ प्रसाधनगृह, पूजास्थल पगोड़ा, ३००० वर्गफीट का मंगल भवन, भोजनशाला, ३०० यात्रियों के लिय आवश्यक बिछायत, बिस्तर, बर्तन, जनरेटर सहित १३ दुकानों का व्यापारिक संकुल आदि अनेक विकास कार्य पूर्ण हो चुके हैं। क्षेत्रपर अत्यंत कलात्मक, सुन्दर, मनोहारी सिंहद्वार का भी निर्माण पूर्ण हो चुका है। क्षेत्र का सम्पूर्ण कायाकल्प के पश्चात एक रूप में विकसित किया गया है। यात्रियों के लिय क्षेत्र पर सभी प्रकार की समुचित व्यवस्थाएं उपलब्ध हैं।

"श्री आदिनाथ स्वामी, तुमको त्रिवार ध्याऊं।
होन लीन भक्तिवश में, मन में तुम्हें बिठाऊँ"।।

क्षेत्र से निकटतम शहर अमरावती में भी अत्यंत प्राचीन और सुन्दर जिनमन्दिर है। मुक्तागिरी, कारंजा (लाड), वाढोणा, अकोट भामदेवी, शिरपुर तथा नेमगिरी और रामटेक जैसे तीर्थों के दर्शन भातकुली से एक-दो-दिन की यात्रा में पूर्ण कर सकते हैं।

श्री नेमसागर जी के प्रेरणा से स्थापित दर्यापुर, दिग्रस, नरखेड, जरूड, आर्वी, खोलापुर में स्थापित जिनमंदिर के भी दर्शन का लाभ यात्री ले सकते हैं।

"प्रभु आपके चरण में, यह दास आ पड़ा है।
अपनी व्यथा सुनाने, तब पास आ खड़ा है।।
सबको लिया शरण में, अब इस तरफ निहारो।
मेरी पुकार सुनकर, भव से तुरंत निवारों" ।।"

मोक्षपथ के लिए सजगश्री माँ ललितपुर में समाधिस्थ हुई

- निर्मलकुमार पाटोदी

समाधि मोक्षमार्ग का द्वार है। जिसे मानव ही वरण कर सकता है। धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष के लिए पुरुषार्थ से साधना ही जैन दर्शन का सार है। यही जिन संस्कृति की आत्मा है और देन है। मन में यदि गुरु के प्रति सच्ची श्रद्धा हो, तो किसी भी व्यक्ति का जीवन अंत समय में सुधर सकता है।

पूज्य मुक्ति प्रदाता की शरण में समाधि धारक : गुरुवार २८ जुलाई २०२१ को खातेगांव जिला-देवास के स्व. श्री रतनलाल जी काला सिद्धोदय सिद्धक्षेत्र के संस्थापक उपाध्यक्ष के सुपुत्र श्री सुरेश जी काला (७५ वर्ष) श्री दिगंबर जैन रेवातट सिद्धोदय सिद्धक्षेत्र न्यास के कर्मठ कार्याध्यक्ष हैं। इनकी धर्मपत्नी श्रीमती मनोरमा देवी (मुन्नीबाई ७० वर्ष) असाध्य बीमारी से ग्रस्त हो गयी थी। अस्पताल की चिकित्सा में रहकर अंत समय में अपने परिणामों को सुधारा नहीं जा सकता है। इसकी अपेक्षा संतगणों के सानिध्य में रहकर आत्मकल्याण किया जा सकता है। धर्म की इस सीख को समझ कर स्वयं ने गुरुदेव की शरण में जाने का निर्णय ले लिया। अपने परिजनों के साथ होकर तिलवाराघाट, जबलपुर में बुधवार २८ जुलाई २०२१ को समाधि सम्राट, परम उपकारी, श्रेष्ठ गुरुदेव श्री १०८ विद्यासागर जी महायतिराज के पावन चरणों में श्रीफल अर्पण करते हुए सविनय करबद्ध होकर निवेदन किया-पूज्य श्री जी मैं घर-परिवार, बाल-बच्चों का मोह और सभी प्रकार के परिग्रहों का आजीवन त्याग कर के पूज्यश्री जी की शरण में आई हूं। मैं अपने लोकोत्तर जीवन के लिए आपसे करबद्ध निवेदन कर रही हूँ। सल्लेखना के प्रति भावुक और संकल्पित आत्मसाधिका की स्वविवेक से युक्त आत्मकल्याण की दृढ़-भावना को जानकर परम तपस्वी, आत्म साधक, अध्यात्म योगी महा ऋषिराज ने आशीर्वाद प्रदान कर दिया। आत्म उद्धारक ने आत्मसाधिका आत्मकल्याण के मार्ग पर अग्रसर होने के लिए दो प्रतिमा धारण करने की स्वीकृति प्रदान करते हुए कायोत्सर्ग करने को कहा। आगे की क्रमबद्ध-साधना के लिए पूज्य १०५ श्री आदर्शमती माता जी के पास श्री दिगंबर जैन अतिशय क्षेत्रपाल जिनालय, ललितपुर में पहुंचने का संकेत दिया। कहा वे जैसा बतावें वैसा संकल्प दृढ़तापूर्वक करना है।

एकमात्र दिगंबर जैनधर्म ही ऐसा है, जो जीवन जीने के साथ समाधिपूर्वक मरण की कला भी सिखाता है। जिसमें समता और संयमपूर्वक गुरुचरण में रह कर आत्मसाधना करते हुए समाधि-मरण होता है। समाधि हो जाने पर मृत्यु को महोत्सव के रूप में मनाया जाता है।

पहले कुण्डलपुर फिर सागर : श्रमण कुलतिलक का आशीर्वाद और संकेत मिल जाने पर साधिका ललितपुर में विराजित पूज्य आर्यिका १०५ श्री आदर्शमतीमती जी ससंघ १० आर्यिका जी की शरण में ३० जुलाई को सपरिवार पहुँच गयी।

इसके पूर्व गुरुवार २९ जुलाई को सिद्धक्षेत्र आदिजिनेश्वर बड़ेबाबा के पावन चरणों में कुण्डलपुर (कुण्डलगिरी) (जिला-दमोह) में विराजित

निर्यापक पूज्य मुनि १०८ श्री योगसागर जी महाराज के दर्शन करने के लिए सपरिवार आत्मसाधिका का प्रात: पहुँचना हुआ। मुनिश्रेष्ठ ने आशीर्वाद प्रदान करते हुए अपने संबोधन में कहा जैसा गुरु जी ने बताया है, अच्छे से करना है। उसी हिसाब से रहना है। अच्छा रास्ता अपनाया है। घबराना नहीं है। इसके बाद गुरुवार २९ जुलाई को ही दोपहर में सागर के भाग्योदय चिकित्सालय परिसर में निर्माणाधीन सर्वतोभद्र और सहस्रकूट जिनालय धर्मक्षेत्र पर विराजमान वरिष्ठ निर्यापक पूज्य मुनिश्रेष्ठ समयसागर जी महाराज का दर्शन लाभ लिया। यहां भी पूज्य गुरुदेव ने आशीर्वाद प्रदान करते हुए अपने उद्बोधन में कहा जैसी गुरुजी की संयम और साधना से आर्यिकामाता जी ससंघ में रहकर आत्मकल्याण करने की आज्ञा मिली है, उसका पूर्ण पालन करें। बीमारी आती-जाती रहती है। सब ठीक होगा।

जन्म इंदौर में : पिता श्री घीसालाल जी और माता श्रीमती कलाबाई बिलाला इंदौर के परिवार में चार पुत्र और चार पुत्रियों में सबसे बड़ी पुत्री आत्मसाधिका मुन्नीबाई का जन्म हुआ। परिवार के धार्मिक संस्कारों के साथ जीवन पुष्पित-पल्लवित हुआ।

ललितपुर में: पूज्य आर्यिका माँ आदर्शमती जी की शरण में शुक्रवार ३० जुलाई को दोपहर में पहुँचना हुआ। पूज्य आर्यिका माता श्रीजी ने आत्म साधिका की मनोभावना को सुना। साधिका का संकल्प, दृढ़ता और आत्मकल्याण की मनोभावना को देखते हुए धर्मशिरोमणि ने दस प्रतिमा प्रदान कर दी। अब दस प्रतिमा के नियमों के अनुसार साधिका का परिवेश त्यागी-व्रति के सदृश वैराग्यमय हो गया। सब कुछ त्याग कर धवल वस्त्रमय

चर्या हो गयी।

किसी भी साधक को इतने कम समय में वह भी बहिरात्मा को अंतरात्मा की ओर ले जाने वाले सम्यक्त्व प्रदाता आचार्य श्री विद्यासागर जी जैसे आगम मार्ग के पूर्ण पालक के आशीर्वाद और पूज्य आर्यिका माता जी १०५ श्री आदर्शमती जी के सानिध्य में दस प्रतिमाएँ मिल जाना सहज नहीं है। बहुत बड़ी बात है। इसके लिये आत्मसाधक की साधना के प्रति सजगता और दृढ़ता का आंकलन किया जाता है सजगश्री ने संयम के पथ पर जो दृढ़ता दिखाई, वह कुछ ही दिनों में मन-वचन-काय से की गयी आत्म विशुद्धि का फल था। जिसका आधार समाधि धारण करने के प्रति दृढ़ इच्छा शक्ति रहा।

साधिका का नामकरण :

५ अगस्त की संध्याकाल में आचार्य भगवन के आशीर्वाद से पूज्य आर्यिका माता जी ने साधिका की साधना की समाधि के प्रति दृढ़ वैराग्य भावना, दृढ़ता और सजगता को देखते हुए नामकरण 'सजगश्री माँ' घोषित कर दिया। अपने संबोधन में कहा तुम सजग हो। सबको सजग कर रही हो। हम सबको सजग कर रही हो। प्रभु की शरण में जाना है, जाना चाहती हो। आप अपने आप में बहुत सजग हैं। इसलिए आज से आपका नाम आपकी चर्या अनुसार 'सजगश्री' रखा जाता है। इसी के साथ साधिका ने जीवंत अनुपम मूर्ति अपने परम अराध्य गुरु महाराज जी को त्रिबार नमोस्तु, नमोस्तु, नमोस्तु निवेदित किया। सजगश्री मां ने करबद्ध होकर पूज्य आर्यिका माता जी को सविनय श्रद्धाभाव से त्रिबार वंदामि, वंदामि, वंदामि कहा।

निर्जल उपवास :

शनिवार ०७ अगस्त का दिन चौदस का था। इस दिन साधिकाश्री माँ ने निर्विकल्पतापूर्वक निर्जल उपवास किया। धन्य है दिगम्बर जैन धर्म जिसमें हर प्राणी मोक्षमार्ग का वरण कर सकता है। गृहस्थ अवस्था से मुक्त होकर तप, त्याग, साधना करते हुए जीवन-मरण से मुक्ति पा सकता है।

आर्यिका माताओं का अप्रतिम सभी के लिए ग्रहण करने प्रेरक संबोधन : पूज्य आर्यिका १०५ आदर्शमती जी ससंघ ने वात्सल्य भाव से दस प्रति धारण करने का महत्व समझाया। विभिन्न वैराग्य भावनाओं को सुनाते हुए बार-बार अर्थ समझाया। णमोकार मंत्र सुनाया।

जीवन में पुण्य-पाप बहुत अपनाये हैं। अब शेष बचे जीवन में एकमात्र लक्ष्य है। शुभ ही नहीं शुद्ध को अपनाना है। आप भव्य आत्मा हैं, बिल्कुल घबराना नहीं हैं। अनंतों बार यह शरीर आत्मा से छूटता है। तुम्हारी आत्मा अजर-अमर है। तुम भी अजर-अमर हो। आत्मा का मरण कभी भी नहीं होता। तुम्हारे शरीर में रोग हैं। मोह के कारण से शरीर में वेदना महसूस होती है। हम संसार में भटकते हैं। इसी कारण हम संसार में कर्म बांधते हैं। आत्मा को शरीर से पृथक-पृथक अनुभव करों। सोचों मैं आनंद स्वरूप हूँ। मैं सुख स्वरूप हूँ। मैं पूर्ण रूप से निरोगी हूँ। मैं आत्मतत्व हूँ। ऐसा विचार करो। तुम्हारा यह भव सुधर जायगा। भव सुधरते ही तुम यहाँ से प्रभु की शरण में चले जाओगे। समवशरण में चले जाओगे। आनंद से खूब भक्ति करों प्रभु की। सभी जीवों से क्षमा-याचना करों। किसी भी जीव को इस जीवन में कष्ट पहुंचाया हो तो मन-वचन-काय से उन सभी से क्षमा-याचना करों। एक इन्द्रिय से पंच इन्द्रिय जीवों तक से मन-वचन-काय से उन्हें किसी भी प्रकार से पीड़ा पहुँचाई हो, तो अंतरण मन से उन सभी से क्षमा मांगों। अपनी आत्मा को निर्भार, हल्का कर लो। अपने आप में से बोझ हटा दो। हल्का महसूस करो। अपना समय नजदीक आ गया है। सुन रही हो न। मन में धारण करो : णमो अरिहंताणम्, णमो सिद्धाणम्, णमो आइरियाणम्, णमो उवज्झायाणम्, णमो लोए सव्वसाहूणम्। थोड़ी सी भी चेतना काम कर रही हो, तो जहां- जहां तीर्थो पर दर्शन किये थे, उन सबका स्मरण करो। प्रभु की वीतरागता का स्मरण करों। स्मरण करो प्रभु मुझे भी ऐसी ही वीतरागता चाहिए। नया जन्म धारण करके वीतरागता स्वरूप प्रभु का स्मरण कर सकूँ। जिनेन्द्र प्रभु की शरण प्राप्त कर सकूँ। बस, मुझे और कुछ नहीं चाहिए। भोग निस्सार है। कोई सार नहीं मिला। अपने-आपको शांत रखों। प्रभु के चरणों में लीन हो जाओ।

आपको सिंह वृत्ति वाली तपस्या करना है। पूर्व भव के कर्मों के कारण हम पर जो विपत्ति आती है ऐसा तकने से धीरे-धीरे कर्मों की निर्जरा होती है। पुण्य प्राप्त करना अलग बात है और कर्मों की निर्जरा करना अलग बात है। हमें पुण्य भी प्राप्त करना है, जिसके कारण हम कर्मो का क्षय करने में सक्षम हो सकेंगे। तपश्चरण के माध्यम से कर्मों की निर्जरा करना है। आपने जो सल्लेखना अंगीकार की है, उसकी भूरि-भूरि प्रसंसा हो रही है। जितनी शक्ति सिद्ध भगवान के पास है, उनके जैसी शक्ति हमारी आत्मा में भी विराजमान है। अंतर इतना ही है, उन्होंने अपने कर्ममल को दूर कर लिया है। हम ऐसा नहीं कर पाये हैं। पुरुषार्थ करके हम भी उन जैसे बन सकते हैं। बस, सजगश्री जी अपने कर्ममलों को दूर करना है। मूर्ख व्यक्ति उपवास आदि दूसरों को दिखाने के लिए करता है। बुद्धिमान व्यक्ति अपने मन के और देह के विकारों दूर करने के लिए तप, उपवास आदि करता है। आपने जो तप, उपवास आदि जो अंगीकार किये हैं, वो अपने विकारों को दूर करने के लिए धारण किये हैं।

पूज्य आर्यिका १०५ श्री पूर्णमती माता जी का अनुकरणीय संबोधन भी आया : पूज्य आर्यिका १०५ श्री पूर्णमती माता जी ससंघ वर्षायोग के लिये शाहपुरा (जिला-सागर) में विराजमान है। उनका रेकॉर्ड किया हुआ संबोधन भी सजगश्री मां को सुनाया गया। आपने-णमो अरहंताणम् , णमो सिद्धाणम्, णमो आइरियाणम्, णमो उवज्झायाणम्, णमो लोए सव्वसाहूणम्। सुनाते हुए कहा- देखो भव्य आत्मन् ,बिल्कुल भी घबराना नहीं है। शरीर आत्मा से छूटता है। इस बार भी छूटेगा। लेकिन आत्मा तो अजर-अमर है। तुम तो अजर-अमर हो। तुम्हारा मरण कभी नहीं होता। रोग सारे शरीर में हैं। शरीर में वेदना है। लेकिन मोह के कारण से अपने को वेदना महसूस होती है। हम कर्म बांधते हैं और सँसार में भटकते-फिरते हैं। अपने आपको रोगों से, वेदना से बिल्कुल पृथक-पृथक अनुभव करों। मैं आनंद स्वरूप हूं। मैं सुख स्वरूप हूं। मैं निरोगी हूं पूर्णरूप से। आत्म तत्व हूँ-विचार करों आत्मन्।

संबोधन कर समाधि कराने वाला गृहस्थ-मधुर सम्मया : अपनी माता जी से प्रेरणा पाकर ललितपुर, कटरा, निवासी कक्षा दसवीं तक पढ़ा-लिखा

४४ वर्षीय मधुर सम्मया साड़ी ऐम्पोरियम व्यवसायी ने पिछले १५ वर्षों में अब तक संबोधन प्रदान करके कम से कम ६० श्रावकों की समाधि कराने का योगदान किया है। उसे समाधि साधकों को संबोधन देना अच्छा लगता है। उसने भी एक बार सजगश्री साधिका को संबोधित किया। उसने बताया समाधि में धारक को प्रारंभ में हल्का भोजन, दूध, छाछ, प्रासुक जल, शक्ति अनुसार क्रम से उपवास और त्याग आदि कराया जाता है। धर्म-ध्यान में मन लगा रहे, इसके लिये धर्म का अमृतपान कराया जाता है। पांच अणुव्रत जैसे अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य और अपरिषह की जानकारी प्रदान करता हूँ। वैराग्य भावनाएँ सुनाता हूँ। तप-त्याग, समाधि का महत्त्व समझाता हूँ। उपसर्ग होने पर, दुर्भिक्ष पड़ने पर ऐसा रोग हो जाने पर जिसका कोई प्रतिकार न हो सके, ऐसी स्थिति आये तो मनुष्य धर्म की रक्षा हेतु सल्लेखना व्रत अंगीकार करने की अनुमति है।

श्राविका से सहजमां का उत्कृष्ट समाधि मरण : जीवन-मरण के इस संसार भ्रमण में सहजमां की समाधि का अविस्मरणीय दिवस बुधवार ११ अगस्त को उदित हुआ। इस दिन की तारीख बदलते ही १२ बजकर ५२ मिनिट पर मोक्षपथगामी आत्मसाधिका ने समाधि प्रदाता पूज्य आर्यिका १०५ आदर्शमती माता जी ससंघ के सुसानिध्य में 'अरहंत सिद्ध' , णमोकार महामंत्र का और करूणा के महासागर, शांत स्वभावी, निस्पृही, समता धारक, सहिष्णु, कठोर आत्मसाधक, ३६ मूलगुणों के पूर्णपालक, प्रखर तपस्वी, निराकुल, आत्मतत्ववेत्ता सच्चिदानंद पूज्य गुरुदेव विद्यासागर जी के नाम का स्मरण करते हुए अपनी नश्वर देह का परित्याग कर दिया। दीक्षामहागुरु जी ने गुरुवार १२ अगस्त को तिलवाराघाट जबलपुर में अपनी देशना में कहा खातेगांव से ललितपुर में आदर्शमती के संघ में गयी थी। वहाँ उसे रोग था, नहीं था कुछ पता नहीं चला। नित्य दो से तीन बार संबोधने वाली माताजी ने कहा ऐसी सल्लेखना हमने कभी नहीं देखी। पहले सल्लेखना सुनते-सुनते होती थी किंतु यह सल्लेखना अंत समय तक चेतना के साथ बोलते-बोलते हुई है।

ललितपुर समाज के सैकड़ों श्रद्धालु श्रावकों ने समाधिस्थ हुई सजगमां की प्रात: ८.३० बजे निकली देहयात्रा में सम्मिलित होकर महा-मोक्ष महोत्सव मनाया। समाज के समाधि स्थल पर देह यात्रा में गृहस्थ अवस्था के पति श्री सुरेश काला, तीनों पुत्र श्री सुशील, श्री मनोज, श्री विवेक अपनी धर्म पत्नियों के साथ में सम्मिलित हुए। इंदौर के गृहस्थ अवस्था के बड़े भाई श्री नरेन्द्र बिलाला भी सम्मिलित हुए। महान आचार्य समंतभद्र स्वामी जी महामुनिराज की श्रावकाचार गाथा सल्लेखना अधिकार भगवती आराधना, मरण कण्डिका के अनुसार समाधिमरण मुख्यत : पांच प्रकार का होता है। १. बाल-बाल मरण, २.बाल मरण, ३. बाल पण्डित मरण ४. पण्डित मरण ५. पण्डित-पण्डित मरण। आत्मसाधिका सजगश्री की सल्लेखना भक्त प्रत्याख्यान है।

समाचार

विजयादशमी पर होंगी 15 जैनेश्वरी दीक्षाएं, जगह जगह निकल रही बिनौली

इन्दौर 23 अगस्त। तपस्वी सम्राट आचार्यश्री सन्मतिसागरजी महाराज के शिष्य आचार्य श्री सुनीलसागरजी मुनिराज के द्वारा श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र अंकलेश्वर पार्श्वनाथ राजस्थान में आगामी विजयादशमी पर 15 जैनेश्वरी दीक्षाएं होंगीं। दीक्षार्थी ब्रह्मचारी भैया दीदियां विभिन्न प्रान्तों से अपना परिवार, अध्ययन, सर्विस छोड़कर आचार्यश्री सुनीलसागर जी के निर्देशन में उन्हीं के संघ में अध्ययन और त्यागमार्ग का अभ्यास कर रहे हैं। दीक्षार्थियों की जगह जगह बिनौली निकल रही है। इन्दौर में दो दीक्षार्थी बहिनों- ब्र. हिना गाड़ियां आत्मजा धनकुमार गाड़ियां मुंबई व ब्र. प्रियंका (मोना) आत्मजा जयकुमार कासलीवाल-औरंगाबाद की बिनौली निकाली गई। संघस्थ नवराज जी के नेतृत्व में उनके तीन अन्य साथियों तथा एक ब्रह्मचारी भैया व दो और ब्रह्मचारिणी दीदियां इस तरह यह 9 सदस्यीय दल तीर्थ वंदनार्थ निकला है।

प्रातः पलासिया से प्रारंभ होकर जैन संस्कृति शोध संस्थान इंदौर में समापन हुआ। जाबरा वालों का दि. जैन मंदिर पलासिया से महावीर चैत्यालय एलआईजी तक संक्षिप्त चल समारोह के साथ पहुंच कर दोनों स्थानों पर दीक्षार्थी बहिनों की गोद भराई हुई, अपराह्न गुमास्तानगर इन्दौर में चातुर्मासस्थं आचार्यश्री विमदसागरजी मुनिराज ससंघ से और जैन कालौनी में चातुर्मासस्थ आचार्य श्री प्रणामसागर जी मुनिराज से आशीर्वाद लिया। तदोपरांत जैन संस्कृतिशोध संस्थान जिंसी, इन्दौर में दोनों दीक्षार्थी बहिनों की गोद भराई का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। जिसमें संस्थान के अध्यक्ष हेमन्त सेठी, सचिव डॉ. महेन्द्रकुमार जैन 'मनुज', परियोजनाधिकारी श्रीमती आशा जैन, प्रसिद्ध समाजसेवी हंसमुख जैन गांधी, जैन विभव के सम्पादक अनुभव जैन, अनुष्का जैन, पारस जैन, प्रेरणा जैन, पायल जैन, सारांस, आकांक्षा आदि गणमान्य समाजजनों ने भाग लिया।

-डॉ. महेन्द्रकुमार जैन 'मनुज',

वाराणसी की प्राचीन जैन संस्कृति एवं परम्परा

प्रो. फूलचन्द जैन प्रेमी, वाराणसी
(राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित)

श्रमणधारा भारत में अत्यंत प्राचीन काल से प्रवहमान है। पुरातत्त्व, भाषा एवं साहित्य के क्षेत्रों में अन्वेषणों से यह स्पष्ट है कि अपने देश में प्राक् वैदिक काल में जो संस्कृति थी, वह श्रमण या आर्हत्-संस्कृति होनी चाहिए। यह संस्कृति सुदूर अतीत में जैनधर्म के आदिदेव अर्थात् आदिनाथ ऋषभदेव द्वारा प्रवर्तित हुई। श्रमण संस्कृति अपनी जिन विशेषताओं के कारण गरिमामण्डित रही है, उनमें श्रम, संयम और त्याग जैसे आध्यात्मिक आदर्शों का महत्वपूर्ण स्थान है। अपनी इन विशेषताओं के कारण ही अनेक संस्कृतियों के सम्मिश्रण के बाद भी इस संस्कृति ने अपना पृथक अस्तित्व अक्षुण्ण रखा।

भारतीय इतिहास के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि इसमें समृद्ध तथा सर्वाधिक प्राचीन जैनधर्म और उसकी विशाल सांस्कृतिक परंपराओं की विशेष उपेक्षा हुई है, जबकि यह श्रमण परंपरा विभिन्न कालखंडों और क्षेत्रों में आर्हत्, व्रात्य, श्रमण, निर्ग्रन्थ, जिन तथा जैन इत्यादि नामों से विद्यमान और विख्यात रही है। इतिहास में इसकी अनदेखी या इसे भ्रांत रूप में प्रस्तुत करने अथवा इसके उपेक्षित होने की पीड़ा सभी को है। आश्चर्य तब होता है जब विभिन्न प्रमाणों से यह सिद्ध हो चुका है कि जैनधर्म के प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव के ज्येष्ठ पुत्र भरत चक्रवर्ती के नाम से हमारे देश का 'भारतवर्ष' नाम विख्यात हुआ। यह कथन अनेक वैदिक पुराणों से स्वयं सिद्ध होता है। इतना ही नहीं, अपने देश का इससे भी अति प्राचीन नाम 'अजनाभवर्ष' भी इन्हीं तीर्थंकर ऋषभदेव के पिता नाभिराज के नाम से प्रसिद्ध और प्रचलित था, फिर भी इस विषय में अनेक विद्वान आज भी आग्रहवश तथ्यहीन विभिन्न धारणाएं बनाए हुए अन्यान्य मत प्रस्तुत करते रहते हैं।

इसी तरह जैनधर्म के आद्य संस्थापक या प्रवर्तक के विषय में अनेक भ्रांत धारणायें आज भी अनेक पाठ्य पुस्तकों और इतिहास ग्रंथों तक में लिखा गया प्रचलित है, जबकि जैनधर्म के आदि संस्थापक प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव ऐतिहासिक महापुरुष सिद्ध हो चुके हैं। इनके साथ ही बाईसवें तीर्थंकर नेमीनाथ, तेईसवें तीर्थंकर पार्श्वनाथ और चौबीसवें तीर्थंकर महावीर -इनको तो काफी पहले ऐतिहासिक महापुरुष सिद्ध किया जा चुका है।

वाराणसी जैन घाट स्थित ७वें तीर्थंकर भगवान् सुपार्श्वनाथ कि जन्मभूमि

प्रसिद्ध जर्मन विद्वान् डॉ. हर्मन जैकोबी तथा अन्य विद्वानों के विभिन्न प्रमाणों ने ऋषभदेव को जैनधर्म का संस्थापक सिद्ध किया है। विश्व-विख्यात विद्वान डॉ. राधाकृष्णन् ने भी अपने ग्रंथ इंडियन फिलॉसफी (भाग-1, पृ. 287) में जैन धर्म की प्राचीनता सिद्ध करते हुए यजुर्वेद आदि वैदिक साहित्य में प्रयुक्त ऋषभदेव, अजितनाथ तथा अरिष्टनेमि-इन तीर्थंकरों के नामों की ओर संकेत किया। इन्होंने भी ऋषभदेव को जैनधर्म का संस्थापक माना और बतलाया कि श्रीमद्भागवत से भी इनका समर्थन होता है।

इस तरह अब विद्वान यह स्वीकार करने लगे हैं कि वैदिक साहित्य में प्रयुक्त वातरसना मुनि, केशी, व्रात्य, यति, नाग, पणि आदि अनेक शब्द तथा कुछ तीर्थंकरों के नाम, निर्ग्रन्थ श्रमण (जैन)परंपरा एवं इसकी मौलिकता और प्राचीनता के द्योतक हैं। जैनधर्म में ईश्वर कर्तृत्व को अस्वीकार किया गया है। यहां तो प्रत्येक आत्मा (जीव) अपने पुरुषार्थ से परमात्मा पद प्राप्त कर सकती है। जैनधर्म में यही आदर्श तीर्थंकरों का है। इसीलिए जैनधर्म के प्रत्येक अनुयायी के लिए तीर्थंकर भगवन्त आराध्य और आदर्श हैं।

तीर्थंकर और इनकी अवधारणा --

सामान्यतः धर्म तीर्थ का प्रवर्तन करने वाले, उसे आगे बढ़ाने वाले को तीर्थंकर कहते हैं। जैनेंद्र सिद्धांत कोश (भाग 2, पृ. 360) के अनुसार 'संसार सागर को स्वयं पार करने तथा दूसरों को पार कराने वाले महापुरुष तीर्थंकर कहे जाते हैं। शब्दकल्पद्रुम के अनुसार **'तरति पापादिकं यस्मात् इति तीर्थम'** अर्थात जिसके द्वारा संसार महार्णव या पापादिकों से पार हुआ जाय, वह तीर्थ है। इस शब्द का अभिधागत अर्थ घाट, सेतु या गुरु है और लाक्षणिक अर्थ, धर्म है।

इस तरह तीर्थ शब्द 'घाट' के अर्थ में व्यवहृत है। जो घाट के निर्माता अर्थात धर्म तीर्थ के प्रवर्तक हैं, वे तीर्थंकर कहलाते हैं। जिस प्रकार नदी पार करने के लिए और नदी की मर्यादा बनाये रखने के लिए घाट की सार्वजनीन

वाराणसी में भेलूपुर स्थित भगवान् पार्श्वनाथ की जन्मभूमि से प्राप्त पुरावशेष जो कि मंदिर के पुनर्निर्माण के समय उत्खनन से प्राप्त हुए

वाराणसी में भेलूपुर स्थित भगवान् पार्श्वनाथ की जन्मभूमि से प्राप्त पुरावशेष जो कि मंदिर के पुनर्निर्माण के समय उत्खनन से प्राप्त हुए

उपयोगिता है। उसी तरह संसार रूपी एक महानदी है, इसे पार करने के लिए तीर्थंकर धर्मरूपी घाट का निर्माण करते हैं। इस धर्म का अनुष्ठान और साधना कर प्रत्येक प्राणी संसार रूपी नदी से पार हो निर्वाण प्राप्त कर सकता है। तीसरी शती के जैनाचार्य समंतभद्र ने स्वयंभू-स्तोत्र में पंद्रहवें तीर्थंकर धर्मनाथ की स्तुति करते हुए **'धर्मतीर्थमनघं प्रवर्तयन्'** कहकर उन्हें धर्मतीर्थ का प्रवर्तक कहा है।

तीर्थ का अर्थ 'पुल' या 'सेतु' भी है। कितनी ही बड़ी नदी क्यों न हो, सेतु द्वारा निर्बल से निर्बल व्यक्ति भी उसे सुगमता से पार कर सकता है। तीर्थकरों ने संसार रूपी सरिता को पार करने के लिए धर्मशासनरूपी सेतु का निर्माण अर्थात प्रवर्तन किया है। इस धर्मशासन रूप धर्मतीर्थ के अनुष्ठान द्वारा आध्यात्मिक संयम साधना कर जीवन को परम पवित्र पूर्णज्ञानी और मुक्त बनाया जा सकता है।

जैनधर्म के चौबीस तीर्थंकरों के लिए तीर्थंकर शब्द रूढ़-सा हो गया है, यद्यपि यह यौगिक ही है। यह आगमिक और परंपरागत मान्यता है कि अतीत के अनंतकाल में अनंत तीर्थंकर हुए हैं। भूतकालीन चौबीस तीर्थंकरों की नामावली का उल्लेख जैनशास्त्रों में मिलता है। वर्तमान में ऋषभादि से महावीर तक के चौबीस तीर्थंकरों का उल्लेख आगे किया गया है। भविष्यत काल में होने वाले चौबीस तीर्थंकरों की नामावली भी साहित्य में उपलब्ध है।

तीर्थंकर वस्तुतः किसी नवीन संप्रदाय या धर्म का प्रवर्तन नहीं करते, अपितु वे अनादि अनिधन आत्मधर्म का स्वयं साक्षात्कार कर वीतराग भाव से उसकी पुनर्व्याख्या या प्रवचन करते हैं। तीर्थंकर को मानव सभ्यता का संस्थापक नेता माना गया है। ये ऐसे शलाका पुरुष हैं, जो सामाजिक चेतना का विकास करते हैं और अनंत सुख रूप मोक्ष-मार्ग का प्रवर्तन करते हैं।

चूंकि सभी तीर्थंकरों की मूर्तियां पद्मासन या कायोत्सर्ग मुद्रा में एक समान अर्द्धनिमीलित नेत्रों से युक्त ध्यानस्थ योगी मुद्रा वाली होती हैं, अतः इन तीर्थंकरों की अलग-अलग पहचान मूर्ति के पादपीठ के सामने उत्कीर्ण इन हाथी आदि चिह्नों (लांक्षनों) से होती है। यद्यपि प्रत्येक तीर्थंकर के निर्धारित यक्ष-यक्षिणी से भी उन तीर्थंकरों की मूर्ति की पहचान हो जाती है, किंतु चिह्न मुख्य माध्यम है। कुछ तीर्थंकरों की निर्धारित यक्ष-यक्षिणी या अन्यान्य प्रतीक युक्त विशेषताओं से भी उन्हें पहचाना जाता है।

इस तरह इन चौबीस तीर्थंकरों में से चार तीर्थकरों की जन्मभूमि वाराणसी जनपद है। वाराणसी इस नामकरण के संदर्भ में प्रायः सभी यह स्वीकार करते हैं कि वरुणा और असि (अस्सी) इन दो नदियों के मध्य स्थित होने इस नगरी का नाम वाराणसी हुआ। हिन्दी साहित्य की प्रथम आत्मकथा-अर्धकथानक के लेखक जैन महाकवि बनारसीदास (सत्रहवीं शताब्दी) ने लिखा है--

गंगमाहि आई धंसी है नदी वरुना असी ।
बीच बसी बनारसी नगरी बखानी है ।।

वाराणसी में भेलूपुर स्थित भगवान् पार्श्वनाथ की जन्मभूमि से प्राप्त पुरावशेष जो कि मंदिर के पुनर्निर्माण के समय उत्खनन से प्राप्त हुए

वाराणसी में भेलूपुर स्थित भगवान् पार्श्वनाथ की जन्मभूमि से प्राप्त पुरावशेष जो कि मंदिर के पुनर्निर्माण के समय उत्खनन से प्राप्त हुए

वाराणसी से ही 'बनारस' यह नाम प्रसिद्ध हुआ। उल्लेखनीय यह है कि प्राकृत जैन आगमों और अन्य जैन ग्रंथों में वाराणसी' इस शब्द के स्थान पर 'वाणारसी' यह शब्द नाम मिलता है और "बनारस" शब्द की व्युत्पत्ति की दृष्टि से यह महत्वपूर्ण है। वाराणसी जनपद जैन संस्कृति का प्राचीन काल से ही प्रमुख केन्द्र रहा है और आज भी है। परन्तु आश्चर्य है कि साधारण लोगों की बात अलग इतिहासकार तक पहले यह तथ्य मानने को तैयार नहीं थे। किन्तु जब से यहाँ पुरातात्विक महत्त्व के प्रमुख केन्द्र राजघाट में उत्खनन से अनेक तीर्थंकरों की मूर्तियाँ, तथा दूसरी वस्तुएँ प्राप्त हुई, वे इस सत्य को स्वीकार करने लगे हैं।

लगभग तीन दशक पूर्व सन् १९९० में तीर्थंकर पार्श्वनाथ की जन्मस्थली भेलूपुर में स्थित दिगम्बर जैनमंदिर के पुनर्निर्माण के समय नींव की खुदाई में छोटी-बड़ी अनेक प्राचीन मूर्तियाँ, स्तम्भ तथा अन्य पुरातात्विक महत्त्व की काफी सामग्री प्राप्त हुई थी, जो कि ईसा की दूसरी-तीसरी से लेकर ईसा की नौवीं शती तक की है। मूर्तियों आदि के अतिरिक्त जैनधर्म से संबंधितअनेक पौराणिक घटनायें भी यहाँ समृद्ध जैन संस्कृति की पुष्टि करती है।

प्राकृत जैन आगम और आगमेतर साहित्य में वाराणसी से संबंधित अनेक पौराणिक और ऐतिहासिक घटनाओं का वर्णन मिलता है। ज्ञाताधर्मकथा आगम की अनेक धर्म कथाऐं वाराणसी से संबंध रखती हैं। इसी प्रकार प्रज्ञापना सूत्र, कल्पसूत्र, उपासक दशांग, उत्तराध्ययनचूर्णि, अन्तकृद्दशा, निरयावलिका तथा आवश्यक-नियुक्ति आदि प्राकृत आगमों में वाराणसी का वर्णन है। त्रेसठ शलाका महापुरुषों के अन्तर्गत चक्रवर्तियों के बारहवें ब्रह्मदत्त की कथा का उल्लेख कई जैन ग्रन्थों में है कि ये काशी निवासी थे। एक उल्लेख के अनुसार नवें चक्रवर्ती "पद्म" ने तो काशी को सम्पूर्ण भारत की राजधानी बनाकर इसे राजनैतिक महत्त्व प्रदान किया था।

तीर्थंकर पार्श्वनाथ की जन्मस्थली वाराणसी नगरी उस समय काशी देश के अन्तर्गत ही थी। तीर्थंकर महावीर के समय काशी, कौशल आदि अट्ठारह गणराज्यों का उल्लेख जैन साहित्य में मिलता है। ये सभी तीर्थंकर महावीर के अनुयायी थे और ये सभी भगवान महावीर का निर्वाणोत्सव मनाने के लिए उनके निर्वाण के तुरन्त बाद पावा नगरी में एकत्रित हुए। तत्कालीन काशी नरेश जितशत्रु ने वाराणसी में तीर्थंकर महावीर की वंदना-अर्चना की थी.इस नगर के बाहर कोष्ठक नामक चैत्य में तीर्थंकर महावीर का कई बार समोशरण भी आया था। इस नगरी के चौबीस कोटि मुद्राओं के धनी "चुलनीपिता" नामक सेठ और 'सुरादेव' नामक धनाढ्य गृहस्थ भगवान महावीर के समय के प्रमुख दस श्रमणोपासकों(गृहस्थ-श्रावकों) में से एक थे। यहाँ के राजा "लक्ष" को काम महावन चैत्य में महावीर ने अपना शिष्य स्वीकार किया था। इसी नगर के एक और अन्य राजा "शंख" ने भी उनसे जिन दीक्षा ग्रहण की थी। वाराणसी की राजकुमारी उनकी परमभक्त थी। दिगम्बर परम्परा के तिलोयपण्णत्ती, उत्तरपुराण, आ० पदमकीर्ति कृत "पासणाह चरित्र,

वादिराजकृत एवं आ० सकलकीर्ति कृत पार्श्वनाथ चरित्र में तथा ब्र० नेमिदत्त आराधना कथा-कोश में भी वाराणसी का अच्छा चित्रण मिलता है।

इस तरह जिस प्रकार हिंदू तथा अन्य धर्मानुयायियों के लिए काशी एक पवित्र तीर्थ है, उसी प्रकार जैन धर्मानुयायियों के लिए भी यह एक पवित्र प्राचीन महातीर्थ है। जहां की भूमि चार-चार तीर्थंकरों के पंचकल्याणकों में से गर्भ, जन्म, दीक्षा और ज्ञान कल्याणक इस तरह प्रत्येक तीर्थंकर के चार-चार कल्याणकों से पवित्र हैं। इनके अतिरिक्त काशी की भूमि पर अन्यान्य तीर्थंकरों और महापुरुषों का निरंतर विहार भी होता रहा है। इसीलिए काशी जैसे विश्व प्रसिद्ध अति प्राचीन, पवित्र इस तीर्थ से संपूर्ण देश के जैनधर्म के अनुयायियों का असीम श्रद्धायुक्त भावनात्मक लगाव स्वाभाविक है। इसीलिए लाखों जैन तीर्थयात्री इस महातीर्थ के वंदन-पूजन हेतु प्रतिवर्ष आते हैं और अपने जीवन को सार्थक मानते हैं। इधर पुरातात्त्विक महत्व के तीसरी शती तक की अनेक जैन मूर्तियों तथा इनसे संबंधित है, अन्य पुरावशेष आदि की उपलब्धता भी उक्त अवधारणाओं की सम्पुष्टि करती है कि वाराणसी भी सदा से श्रमण जैन संस्कृति और परम्परा का भी एक महत्वपूर्ण समृद्ध केन्द्र रहा है. बनारस में जन्मे ये चार तीर्थंकर इस प्रकार हैं-----

1. सप्तम तीर्थंकर सुपार्श्वनाथ, जिनकी जन्मभूमि भदैनी मुहल्ले में गंगातट पर स्थित जैनघाट है।

2. अष्टम तीर्थंकर चंद्रप्रभु जिनकी जन्मभूमि है बनारस से लगभग पच्चीस किलोमीटर दूर गंगातट पर स्थित चन्द्रावती ग्राम।

3. ग्यारहवें तीर्थंकर श्रेयांसनाथ जिनकी जन्मभूमि है सुविख्यात पर्यटक केंद्र सारनाथ।

4. तेइसवें तीर्थंकर पार्श्वनाथ जिनकी जन्मभूमि है बनारस शहर के मध्य भेलुपुर मुहल्ला, जहां तीन भव्य जिनालय सुशोभित हैं।

यहां प्रस्तुत है बनारस में जन्मे इन्हीं चार तीर्थंकरों का क्रमशः मंगलमय व्यक्तित्व तथा उनके व्यापक प्रभाव की विशेषताओं का परिचय--

1. सप्तम तीर्थंकर सुपार्श्वनाथ -

जैनधर्म में चौबीस तीर्थंकरों की परंपरा में सप्तम तीर्थंकर सुपार्श्वनाथ का जन्म अति प्राचीन काल में काशी देश की वाराणसी नगरी के भद्रवनी क्षेत्र, जिसे अब भदैनी मुहल्ला कहते हैं, में गंगातट पर स्थित इक्ष्वाकु वंशी महाराज सुप्रतिष्ठ के राजमहल में महारानी पृथ्वीषेणा की कोख से ज्येष्ठ शुक्ल द्वादशी के दिन अग्निमित्र नामक शुभयोग में अनेक सहस्राब्दियों पूर्व हुआ था।

इन्हीं की जन्मभूमि की स्मृति-स्वरूप भदैनी में गंगातट पर आज भी तीन (दो दिगम्बर एवं एक श्वेताम्बर)जैन मंदिर बने हुए हैं।सहस्राधिक श्रेष्ठ विद्वानों की परम्परा का जनक श्री स्याद्वाद महाविद्यालय भी जैनघाट स्थित श्री सुपार्श्वनाथ की जन्म भूमि स्थित जिनालय के परिसर में पिछले 11-12 दशकों से चल रहा है। इसमें पढ़े-लिखे शताधिक विद्वान् आज भी देश, समाज, जैनधर्म-दर्शन, साहित्य एवं संस्कृति की सेवा में संलग्न हैं। वाराणसी में ही तीर्थंकर सुपार्श्वनाथ के गर्भ, जन्म, तप और ज्ञान-ये चार कल्याणक हुए अर्थात् इन्हें इन चारों की प्राप्ति यहीं हुई।

जैनधर्म में मति, श्रुत, अवधि, मनःपर्यय और केवलज्ञान -इस तरह ज्ञान के पांच भेद हैं। बालक सुपार्श्वनाथ इतने प्रतिभाशाली थे कि आप में पूर्वोक्त ज्ञान में प्रारंभ के तीन ज्ञान जन्म से ही थे। प्रारंभ से ही सभी प्रकार के सुख-साधनों की संपन्नता के बावजूद आप इनसे उदासीन रहते थे, फिर भी पारिवारिक परंपरा के निर्वाह हेतु आपका यथासमय विवाह हुआ और सुयोग्य पुत्र भी हुए। पिता के बाद आप राज्य के उत्तराधिकारी बने और सुयोग्य शासक (महाराजा) बने। फिर भी आपके मन में सदा आत्मकल्याण की बात ही प्रमुखता से छायी रहती थी। एक दिन ऋतु परिवर्तन देखकर आप संसार की क्षणभंगुरता जान गए और अपने पुत्र को राज-पाट सौंपकर ज्येष्ठ शुक्ला द्वादशी की संध्या समय विशाखा नक्षत्र में एक सहस्र राजाओं के साथ सहेतुक वन में जाकर पंचमुष्ठि केशलुंचन कर वस्त्राभूषणादि सभी परिग्रहों का सदा के लिए त्यागकर मुनि दीक्षापूर्वक संयम ग्रहण किया।

दीक्षा के दूसरे दिन जब आप आहारार्थ विधिपूर्वक निकले, तब प्रथम बार आहारदान का सौभाग्य सोमखेट नगर के महाराजा महेन्द्रदत्त को प्राप्त हुआ। आपकी संयम साधना निरंतर बढ़ती जा रही थी। लक्ष्य था- आत्मकल्याण के साथ-साथ संसारी प्राणियों के कल्याण की प्रबल भावना।

सर्वोत्कृष्ट ज्ञान प्राप्ति के लिए सभी व्रत-उपवासों के साथ ही उत्कृष्ट ध्यान- योग, साधना आपके जीवन का अभिन्न अंग बन चुकी थीं। लोग आश्चर्यचकित हो प्रेरणा ग्रहण करते हुए कहते कि इतने बड़े काशी राज्य के एक लोकप्रिय अधिपति बनकर भी इन्हें राज-पाट के मोह को त्यागने में तनिक भी देर न लगी और अब संयम मार्ग पर आरूढ़ हो निरंतर उग्र तपश्चरण की उनकी दृढ़ता भी कितनी बेजोड़ है। इस प्रकार नौ वर्ष की कठिन साधना (तपस्या) के बाद फाल्गुन शुक्ला सप्तमी के दिन जब आप शिरीष वृक्ष के नीचे ध्यानारूढ़ थे, तभी विशाखा नक्षत्र में आपको केवल- ज्ञान की प्राप्ति हुई। जन-जन में खुशी की लहर दौड़ गई।

देव, इंद्र और संपूर्ण प्रजाजनों ने इस शुभ अवसर पर केवलज्ञान कल्याणक महामहोत्सव बड़े ही उत्साहपूर्वक मनाया।मति, श्रुत आदि पांच ज्ञानों में केवलज्ञान सर्वोत्कृष्ट और अंतिम ज्ञान है। इसमें इंद्रियातीत आत्मज्ञान द्वारा तीनों काल और तीनों लोक के संपूर्ण द्रव्य और उनकी समस्त पर्यायों आदि का एक साथ स्पष्ट और सर्वग्राही ज्ञान दर्पण की तरह हो जाता है।

अतः जैन परंपरानुसार केवलज्ञान प्राप्ति के बाद उस महान् आत्मा को पांच परमेष्ठियों में प्रथम 'अर्हन्त' परमेष्ठी पद की प्राप्ति हो जाती है और वे सर्वज्ञ, सर्वदर्शी बन जाते हैं।

अतः उत्कृष्ट संयम, साधनापूर्वक इस आत्मकल्याण के बाद करुणाभाव से संसार के सभी प्राणियों के कल्याण की तीव्र इच्छा से प्रेरित हो तीर्थंकर भगवान सुपार्श्वनाथ ने समवशरण नामक धर्मसभा के माध्यम से देशना (उपदेश) देना आरंभ किया।

शेष अगले अंक में

रानीबाग में चढ़ाया गया निर्वाण लाडू
रक्षाबंधन का यह पर्व हमें तीर्थ संरक्षण के लिए भी प्रेरित करता है - आचार्य श्री अतिवीर जी

आचार्य श्री 108 अतिवीर महाराजजी के पावन सान्निध्य में राजधानी दिल्ली की धर्मनगरी रानी बाग स्थित श्री शांतिनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर में 16 वें मंगलमय चातुर्मास के अनन्तर दिनांक 22 अगस्त 2021 को श्री श्रेयांसनाथ निर्वाण कल्याणक महोत्सव व रक्षाबंधन पर्व का आयोजन सानंद संपन्न हुआ। प्रातः काल जिनाभिषेक व शांतिधारा के पश्चात नित्य नियम पूजन में सम्मिलित होकर सभी ने पुण्यार्जन किया। तत्पश्चात निर्वाण काण्ड वाचन के साथ महिलाओं द्वारा मुख्य निर्वाण लाडू चढ़ाया गया तथा 11 सौभाग्यशाली महानुभावों ने श्रीजी के चरणों में विशेष निर्वाण लाडू समर्पित किए।

धर्मसभा को सम्बोधित करते हुए पूज्य आचार्य श्री ने कहा कि सम्यक्दर्शन के वात्सल्य अंग की चर्चा करते हैं तो आज की कथा का उल्लेख अवश्य होता है। श्री अकम्पनाचार्य जी ने उपसर्ग की घड़ी में किसी भी साधु को अपनी चर्या से विमुख होकर आग के घेरे से निकलने का आदेश नहीं दिया। सभी मुनिराज सतत अपनी साधना में संलग्न रहे और नश्वर काया की चिंता किये बिना बस आत्मकल्याण के मार्ग पर अग्रसर रहे। श्री

अकम्पनाचार्य जी ने यह सन्देश दे दिया कि हमें सिर्फ अपने परिणामों को संभालना है, किसी अन्य का हम कुछ अच्छा/बुरा नहीं कर सकते। परन्तु यह कैसी विडंबना है? 700 मुनिराजों की रक्षा हेतु श्री विष्णु कुमार मुनि ने अपने मुनि पद का त्याग कर दिया, एक जीव को दूसरे जीव का कर्ता बता दिया। शायद हम लोगों से इस कथा को समझने में कोई गलती हुई है, जैन दर्शन का मूलभूत सिद्धांत ही कही लुप्त दिखाई पड़ रहा है।

आचार्य श्री ने आगे कहा कि श्रावकों के लिए साधुओं व साधर्मी की रक्षा सबसे बड़ा कर्त्तव्य है। वर्तमान में यदि किसी साधु पर कोई संकट आ जाए तो कोई भी व्यक्ति उसके निवारण के लिए आगे नहीं आता। परन्तु चर्या में कोई कमी हो तो हजारों लोग टोकने के लिए खड़े हो जाते हैं। रक्षाबंधन पर्व मनाने की सार्थकता तभी होगी जब सभी लोग अपने साधर्मीजनों की रक्षा का संकल्प लेंगे तथा हर परिस्थिति में साथ रहने का दृढ़ निश्चय मन में कर लेंगे। वर्तमान में कुछ ऐसी व्यवस्था बन गयी है कि भक्तजन मुनियों की पिच्छिका पर राखी बांधने लगे और-तो-और भगवन को भी नहीं बक्शा। यह सभी क्रियाएं निराधार हैं तथा मिथ्यात्व-पोषक है।

वात्सल्य का अर्थ काफी विस्तृत है। आज हर तरफ हिंसा का तांडव चल रहा है। जगह जगह आधुनिक बूचड़खाने खुलते जा रहे हैं। शायद हमने वात्सल्य को केवल इंसानों तक ही सीमित कर दिया है। परन्तु वात्सल्य तो प्राणी-मात्र के प्रति होना चाहिए। जैन समाज के समक्ष आज एक और चुनौती खड़ी है। हमारे पावन तीर्थ आज धीरे धीरे हमारे हाथों से छूट रहे हैं। परन्तु अफ़सोस हमारी जैन समाज निष्क्रिय होकर हाथ पर हाथ रखे बैठी है। अहिंसा का चोला ओढ़कर हम लोग धीरे-धीरे कायर बन गए। रक्षाबंधन का यह पर्व हमें तीर्थ संरक्षण के लिए भी प्रेरित करता है।

लूटना और पीटना भारत की परंपरा नहीं - अंतर्मना जी की कलम से भारत में आतंकवादी नहीं, अनेकांतवादी रहते हैं

स्वतंत्रता दिवस के साथ स्वतंत्रता के गुणों के भाव भी आना चाहिए, क्योंकि गुणों के बिना जीवन का विकास नहीं है। जीवों को निकट लाने का, जीवों को जोड़ने का, और जीवो के प्रति मैत्री भाव की स्थापना करने का अर्थात जोड़ने का स्वभाव हमें अपने जीवन में उपस्थित करना चाहिए। भारत गौरव अंतर्मना आचार्य श्री प्रसन्न सागर जी महाराज ने लिखते हुए व्यक्त किया कि हम भारतीय हैं, हम भारतवासी हैं। हमें स्वयं के भारतीय होने पर गौरव होना चाहिए इसलिए नहीं कि, यह हमारी जन्मभूमि है, बल्कि इसलिए कि हम ऐसी संस्कृति के संवाहक हैं जिसमें वसुधैव कुटुंबकम, विश्व मैत्री, विश्व प्रेम और विश्व बंधुत्व का संदेश दिया है।

हम उस संस्कृति के शांति दूत हैं जिसने मनुष्य को केवल अपने उद्धार की प्रेरणा नहीं दी, बल्कि सारे संसार के मंगल की कामना की है। आचार्य श्री ने आगे व्यक्त किया कि भारत का चिंतन बहुत विराट और उदात्त है। भारतीय नजरिया के नजारे का जादू दुनिया के सिर पर चढ़कर बोलता है। भारत सबका हितैषी है, किसी को लूटना और पीटना भारत की परंपरा नहीं है। भारत तो उस माँ की तरह है जो अपनी सभी संतानों को अपने खून से सींच – सींचकर और आँचल का दूध पिला – पिलाकर पालती और पोसती है और यही कारण है कि दुनिया ने भारत को माता कहा है। भारत माता दुनिया में सिर्फ भारत को ही कहा जाता है। लंदन माता है, अमेरिका माता है, जापान माता है, चीन माता है। ऐसा तुमने कहीं नहीं सुना होगा, ना ही कभी पढ़ा होगा। विश्व के मानचित्र पर सिर्फ भारत ही माता है।

अंतर्मना ने अपनी लेखनी में लिखा कि भारत विश्व गुरु रहा है और मुझे यकीन है कि भारत एक बार पुनः विश्व गुरु बन कर उभरेगा, जिसकी ओर हमारे कदम बढ़ चुके हैं। अभी ओलंपिक में विश्व ने हमारे अस्तित्व को माना है, भारत ने आज तक के सभी रिकॉर्ड को तोड़कर पहली बार ओलंपिक में बहुत से पदक प्राप्त किए हैं और भी कई क्षेत्रों में विश्व की नजरें हमारे देश की ओर टिकी है।

किसी ने ठीक ही कहा है कि भारत इसलिए विश्वगुरु नहीं कहा जाता कि इसने ऐसे कलाकारों, वैज्ञानिकों और खिलाड़ियों को जन्म दिया है, जिन्होंने ताजमहल का वैभव दिया, कुतुब मीनार का कीर्तिमान खड़ा किया, ओलंपिक में अपना नाम ऊंचा किया हो, बल्कि भारत को इतना ऊंचा दर्जा इसलिए हासिल है क्योंकि इसने विश्व को राम के रूप में मानव की मर्यादा और शौर्य प्रदान किया है, कृष्ण के रूप में उदात्त कर्म योग की शिक्षा दी है, तीर्थंकर महावीर के रूप में अहिंसा का अमृत प्रदान किया है, बुद्ध के रूप में करुणा की कोमलता दी है। भारत में आतंकवादी नहीं है, अनेकांतवादी रहते हैं। भारत सहिष्णु है, उदार है, भारत महान है। मेरा भारत महान है।

"मेरी भावना" काव्य रचना को एनसीईआरटी की कक्षा में शामिल किया गया

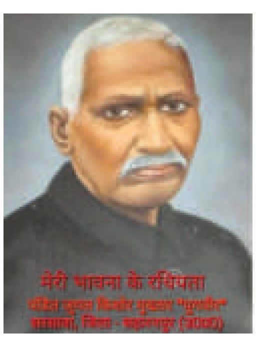

पंडित श्री जुगलकिशोर जी 'मुख्तार' के द्वारा रचित 'मेरी भावना' काव्य रचना को एनसीईआरटी की कक्षा सात की किताब के प्रथम अध्याय में शामिल किया गया है। पं. जी का जन्म सरसावा में पिता नाथूमाई जैन तथा माता भुवि देवी के घर में वर्ष 1877 में हुआ था। धार्मिक परिवार में जन्म होने के कारण जुगल किशोर का ध्यान भी आरंभ से ही धर्म की ओर था। आधा दर्जन भाषाओं जिनमें पाली- प्राकृत, हिंदी, संस्कृत, उर्दू, फारसी, अंग्रेजी के ज्ञाता आचार्य जुगल किशोर ने 'मुख्तार' के पद पर काम किया, जिस कारण उनके नाम के साथ मुख्तार शब्द जुड़ा। 1914 में उन्होंने नौकरी से इस्तीफा दे दिया तथा पूरी तरह से जैन साहित्य के अन्वेषण में जुट गए।

उन्होंने सन १९१६ में "मेरी भावना" की रचना की जिसे पूरे विश्व के जैन साहित्य में स्थान मिला। इसके बाद उनको युग वीर की भी उपाधि से विभूषित किया गया। जैन साहित्य के अन्वेषण तथा अनेक साहित्य के रचनाकार के रूप में प्रसिद्ध आचार्य जुगल किशोर मुख्तार, 'युगवीर' का देहावसान 91 वर्ष की आयु में 1968 में हुआ।

उनकी प्रमुख रचनाएं

आचार्य जुगल किशोर मुख्तार की प्रमुख रचनाओं में परीविषद प्रकाश, जैन ग्रंथ परीक्षा, युगवीर निबंधावली, युगवीर भारती, स्वयंभू स्त्रोत्र, समुच्चय धर्मशास्त्र, अध्यात्म रहस्य, तत्वानुशासन, रत्नाकरंद श्रावकाचार, कल्याण कल्पद्रुम, योगसार आदि प्रमुख हैं। उन्होंने जैन राजपत्र तथा जैन गजट का भी संपादन किया तथा अनेकांत के नाम से पत्रिका भी निकाली।

दयोदय तीर्थ गौशाला जबलपुर परिसर में 28 क्षुल्लक दीक्षाएं संपन्न हुई
आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज ने कहा कि आज 28 नए नक्षत्र मेरे संघ में जुड़ गए

आचार्य श्री ने अपने प्रवचन में कहा कि दीक्षा लेने के इछुक साधकों की श्रृंखला बढ़ती जा रही थी इसलिए समय भी बढ़ता गया, आचार्य श्री जी कहते हैं कि हर व्यक्ति सोचता है कि मुझे अच्छा करना है लेकिन दूसरों के साथ प्रतियोगिता करने में ही समय व्यय कर देते हैं और वेदना सहते हैं, हमने जो कर्म किए हैं उन्हें साफ करते रहना चाहिए, प्रकृति का शरीर प्रकृति में ही मिल जाए यही कामना करना चाहिए , सब कुछ साफ करने के लिए जीवन पर्याप्त है कर्मों की निर्जरा करनी चाहिए, इस समय दीक्षा लेने वालों की उम्र 54 वर्ष से 87 वर्ष के बीच है , जब यह दीक्षा के लिए निवेदन करने आए तो किसी की भी कमर झुकी नहीं थी और कोई गंभीर रूप से किसी रोग से पीड़ित भी नहीं था, यह सब इनके संयमित जीवन शैली के कारण है। गृहस्थ आश्रम में रहकर इन्होंने संयम का पालन किया धर्म मार्ग पर चलें भोजन , व्यवहार मानसिक शांति और निश्चिंतता, खुश रहने से यह सभी स्वस्थ हैं और दीक्षा के पात्र हैं। आचार्यों ने हमें जो कर्तव्य बताए हैं हम उन कर्तव्यों का पालन करते हैं यही विधान है , 80 वर्ष तक के लोगों ने कहा गुरुजी मेरे बारे में सोचो तो गुरु आशीर्वाद से यह सब संपन्न हुआ, यह बहुत सरल कार्य है इसमे दृढ़ निश्चय आवश्यक है। आप पालन करते हैं तो आगे के रास्ते मिल सकते हैं। हर वर्ग और हर योग्यता के साधक दीक्षा ग्रहण कर रहे हैं। मैंने सोचा दयोदय में आराम से, शांति से रहेंगे छोटा मुनिसंघ होगा लेकिन दयोदय में 28 नक्षत्र मिल गए। दीक्षा में दिए गए नियमों का पालन करते हुए श्रावक के कार्य पीछे रह जाते हैं, दीक्षाधर्म पालन से आगे का मार्ग प्रशस्त होता है। अब मुस्कान के साथ मृत्युंजय बनना है यही साधना है। श्रावक का मुनि के बाद सल्लेखना की ओर अग्रसर होना मोक्ष मार्ग है।

१४ अगस्त दोपहर 3:00 बजे आयोजित इस कार्यक्रम में आचार्य श्री ने मंत्रोच्चार के साथ 28 दीक्षार्थीओं को क्षुल्लक दीक्षा प्रदान की आज से यह दीक्षित क्षुल्लक महाराज अपने परिवार के साथ ना रहकर एक निर्दिष्ट स्थन पर रहेंगे और क्षुल्लक धर्म का पालन करेंगे।

कार्यक्रम के प्रारंभ में बाल ब्रह्मचारी विनय भैया ने दीक्षार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि दयोदय वह स्थल है जहां गुरु जी आते हैं तो दीक्षाएं होती

है, दीक्षा का मतलब होता है इच्छाओं का दमन करन करना। विनय भैया ने बताया कि 54 वर्ष से 84 वर्ष के लोगों की 50 से ज्यादा निवेदन आए थे क्षुल्लक दीक्षा के लिए उनमें से पिछले कई वर्षो से गृहस्थ जीवन में कठिन साधनारत 28 धर्म साधकों को आज दीक्षा दी गई।

कार्यक्रम का शुभारंभ उत्तरमध्य के विधायक श्री विनय सक्सेना एवं पूर्व राज्य मंत्री श्री शरद जैन ने दीप प्रज्वलित कर किया। कार्यक्रम का आयोजन दिगंबर जैन संरक्षणी सभा पूर्णायु आयुर्वेद चिकित्सालय एवं अनुसंधान केंद्र दयोदय तीर्थ गौशाला समिति द्वारा किया गया।

२८ दीक्षार्थियों के नाम -

1. ब्र. मल्लकुमार जी जबलपुर - क्षु. तत्व सागर जी
2 ब्र. अजय मुन्ना जी लम्हेटा, जबलपुर - क्षु. तत्वार्थ सागर जी
3.ब्र. विजय जी साड़ी वाले जबलपुर - क्षु. तात्पर्य सागर जी
4.ब्र. संतोष जी सागर - क्षु. वर्धन सागर जी
5. ब्र. विमल सेठी गया - क्षु. वरदत्त सागर जी
6. ब्र. कोमलचंद जी भोपाल - क्षु. वरदान सागर जी
7. ब्र. मुलायमचंद जी बांदकपुर - क्षु. अनुग्रह सागर जी
8. ब्र. शीतलचंद जी सिलवानी - क्षु. उपमान सागर जी
9. ब्र. महेंद्र जी नरसिंहपुर - क्षु. उपकार सागर जी
10. ब्र. कमल किशोर जी आगरा - क्षु. सहयोग सागर जी
11. ब्र. नेमिचंद जी बंड,अमरावती - क्षु. उपयोग सागर जी
12. ब्र. प्रेमचन्द जी सहारनपुर - क्षु. सुयोग्य सागर जी
13. ब्र. चमनलाल जी जबलपुर - क्षु. धर्म सागर जी
14. ब्र. रमेशचंद्र जी जबलपुर - क्षु. सुधर्म सागर जी
15. ब्र. ज्ञानचंद जी शाढोरा अशोकनगर - क्षु. सुगम सागर जी

16. ब्र. नन्हेलाल जी नागपुर - क्षु. प्रशम सागर जी
17.ब्र. निर्मल जी बाड़ी-बरेली - क्षु. परम सागर जी
18.ब्र. सुभाष देवड़िया शहपुरा भिटौनी - क्षु. साम्य सागर जी
19.ब्र. अभयकुमार जी जबलपुर - क्षु. समकित सागर जी
20. ब्र. निर्मलचंद जी गढ़ा जबलपुर - क्षु. संगत सागर जी
21.ब्र. सुंदरलाल जी तेंदूखेड़ा - क्षु. औचित्य सागर जी
22.ब्र. सुरेश जी तेंदूखेड़ा - क्षु.भाग्य सागर जी
23. ब्र. वीरेंद्र नायक हथनी खुरई - क्षु. शुक्ल सागर जी
24.ब्र. प्रकाशचंद जी परसोरिया सागर - क्षु. श्वेत सागर जी
25.ब्र. प्रेमचंद जी बांदकपुर - क्षु. विरह सागर जी
26. ब्र. अशोक कुमार जी जबलपुर - क्षु. विरत सागर जी
27.ब्र. महेंद्रकुमार जी शहडोल - क्षु. अपार सागर जी
28. ब्र. सटरूलाल जी अशोकनगर - क्षु. समदम सागर जी

सम्मेदशिखरजी पर्वतराज (स्वर्णभद्र कूट) पर 23वें तीर्थंकर के निर्वाण कल्याणक महोत्सव में समर्पित किये गये 23-23 किलोग्राम के भव्य निर्वाण लाडू

कोरोना नियंत्रण दिशानिर्देश नियमों का पालन करते हुए मनाया महोत्सव

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी मुम्बई के तत्वाधान में आयोजित बीस तीर्थंकरों की निर्वाणभूमि शास्वत तीर्थराज श्री सम्मेदशिखरजी जी में तेईसवें तीर्थंकर श्री पार्श्वनाथ भगवान का मोक्षकल्याणक दिवस 15 अगस्त 2021 को सानंद सम्पन्न हुआ।

मधुबन में विराजमान समस्त दिगम्बराचार्य मुनि, आर्यिकादि चतुर्विध संघ की उपस्थिति में श्रद्धालुगण बीसपंथी कोठी जिनालय से देवाधिदेव 1008 श्री पार्श्वनाथ भगवान की अष्टधातु की प्रतिमा जी को सिर पर लेकर गाजे बाजे के साथ तीर्थक्षेत्र कमेटी के कार्यकर्ताओं सहित टोंक पर पहुंचे।

तीर्थक्षेत्र कमेटी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री शिखरचंद पहाड़िया तथा महाराष्ट्र अंचल के अध्यक्ष श्री संजय पापड़ीवाल, पूर्वांचल तीर्थक्षेत्र कमेटी के महामंत्री श्री प्रभात सेठी, प्रभारी श्री डी.यू. जैन सहित अनेक गणमान्य पदाधिकारियों के नेतृत्व में विधिवत पात्र शुद्धि से लेकर क्रमशः ध्वजारोहण, अभिषेक कलश, शांतिधारा, आरती तथा अष्टमंगल द्रव्य से पूजनोपरांत निर्वाण लाडू चढ़ाया गया। कार्यक्रम को जिनवाणी चैनल के विशेष प्रसारण के माध्यम से टेलीविजन पर प्रसारित किया गया।

तेईसवें तीर्थंकर के निर्वाणकल्याणक के प्रतीक 23-23 किलोग्राम के निर्वाण लाडू की मुख्य बोली में श्री नरेश कुमार, श्री नवीन कुमार, श्री नवनीत कुमार, श्री प्रहस जैन सिगमा कानपुर, श्री प्रकाशचंद जैन मोदी पारस चैनल परिवार, श्रीमती पारूल जैन सुरेश कुमार जी बोरीवली, श्री वीरचंद, श्री राजेन्द्र, श्री गजेन्द्र, श्री अजय, श्री प्रवीण, श्री नवीन बड़जात्या कामां वाले रहे। इनके उपरांत अनेक श्रद्धालुओं ने ऑनलाइन सहयोग प्रदान कर निर्वाण लाडू तथा शांतिधारा में पुण्यार्जन किया ।

निर्वाण लाडू में सम्मिलित आॅनलाइन श्री अजय जैन मित्तल दिल्ली, एन.एल जैन दिल्ली, निर्मल जैन जालंधर, सुरेन्द्र जैन दिल्ली, राजेष परिधि पाटनी जोरहट, श्री चांदमल हीरालाल जी मुम्बई, श्रीमती षीला जैन फिरोजाबाद, श्री वीरचंद षाह बडोदरा, श्री केतन सुमतिनाथ पाटिल षैदबाल, श्री मनोज सुनीता काला राँची, श्री निर्मल रांवका जयपुर, श्रीमती पुश्पाबेन गांधी भावनगर, श्रीमती रतनमणि सेठी गोवाहाटी, श्रीमती हीरा रानी जैन लखनउ, श्रीमती संतोशी देवी जैन मालपुरा, श्री पूर्णिमा मिश्री कोटकर पुणे, श्री उमेश जैन दिल्ली, श्री राजेष जैन दिल्ली, श्री अमन दगड़ा मदनगंज, श्री प्रेमचंद जैन सोनीपत, श्रीमती जयमाला जैन कोणार्क, श्रीमती सरोज जैन नोयडा सम्मिलित रहे।

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी मुम्बई के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री शिखरचंद पहाड़िया एवं महाराष्ट्र अंचल के अध्यक्ष श्री संजय पापड़ीवाल तथा पूर्वाञ्चल तीर्थक्षेत्र कमेटी के महामंत्री श्री प्रभात सेठी के निर्देशन में निर्वाण लाडू के इस आयोजन में दिगम्बर जैन संतों का सान्निध्य प्राप्त हुआ। परम पूज्य अंतर्मना आचार्य श्री प्रसन्नसागर जी महाराज के शिष्य मुनि श्री पीयूष सागर जी महाराज ने शांतिमंत्र के उच्चारण के साथ शांतिधारा सम्पन्न कराई तथा मांगलिक उद्बोधन से समाज को जिनधर्म प्रभावना की प्रेरणा दी।

नैनागिरि तीर्थ व चौधरी परिवार ने अभिनंदन पत्र भेंट किया

पावागिरि ऊन ट्रस्ट कमेटी के श्री विनोद जैन खरगोन, श्री हसमुख गांधी इन्दौर, श्री अशोक कासलीवाल गुजरी, श्री चिंतामणजी जैन खण्डवा, श्री सुनील जैन खरगोन, श्री आशीष चौधरी सनावद, श्री अरुण धनोते खरगोन ने पावागिरि ट्रस्ट की ओर से सम्मानित किया। सनावद के वरिष्ठ समाजसेवी व श्री पूरनचंद के कार्यकाल के दौरान 25 वर्षों तक महामंत्री रहे स्व.इंदरचंद-कैलाशचंद चौधरी परिवार ने विशेष रुप से अभिनंदन पत्र भेंट किया।

नैनागिरि सिद्धक्षेत्र में 2009 में प्रथम तीर्थसेवी सम्मान से सम्मानित श्री पूरनचंदजी को नैनागिरि सिद्धक्षेत्र के अध्यक्ष श्री सुरेश जैन आईएएस, न्यायमूर्ति श्रीमती विमला जैन भोपाल ने अभिनंदन पत्र व सम्मान राशि के साथ तीर्थ प्रेमी की उपाधि से सम्मानित किया। नैनागिरि की ओर से श्री हसमुख गांधी व श्री मनोहर झांझरी (मंजू मामा), संदीप चौधरी ने सम्मानित किया। खण्डवा समाज अध्यक्ष श्री वीरेन्द्र भट्यान, श्री देवेन्द्र सराफ, श्री राजमल जैन, श्री चिंतामण जैन, श्री भारत मामा, श्री कमलेश हूमड, श्री जम्बू जैन, श्री विपुल जैन ने सम्मानित किया।

मुकुट सप्तमी के दिन जमीन से प्राप्त भगवान पार्श्वनाथ की २ प्रतिमाएं

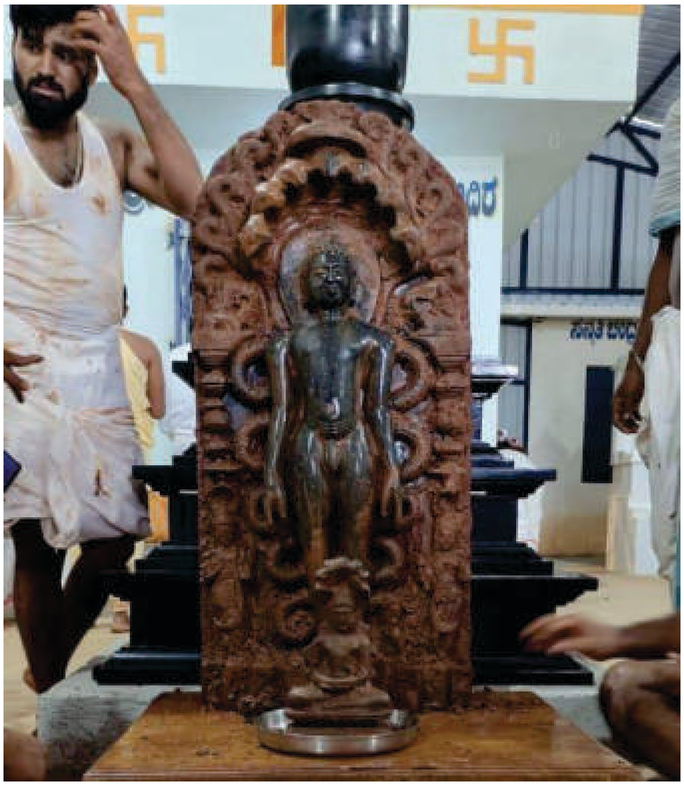

भगवान पार्श्वनाथ के मोक्ष कल्याणक के दिन कर्नाटक राज्य के जैनारागुट्टी में अडागुरु हसन के पास भगवान श्री पार्श्वनाथ तीर्थंकर की २ प्रतिमायें खुदाई में प्राप्त हुई हैं। खुदाई में प्राप्त प्रतिमाओं में एक प्रतिमा खड्गासन जिसकी ऊँचाई लगभग ४ फीट है तथा एक छोटी प्रतिमा पदमासन मुद्रा में है।

विनम्र श्रद्धांजली

अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन परिषद के अध्यक्ष डॉ. जीवनलाल जैन का निधन

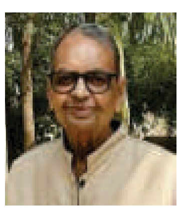

अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. जीवनलाल जैन जी का **22** अगस्त **2021** को **82** वर्ष की अवस्था में आकस्मिक देहावसान हो गया है। आपका **10** दिनों से वरिष्ठ चिकत्सकों की देखरेख में सघन उपचार चल रहा था। बहुमुखी प्रतिभा से परिपूर्ण प्रखर वक्ता के रूप में विख्यात डॉ. जैन अत्यन्त ही मिलनसार, हंसमुख, धर्मपरायण व्यक्तित्व के धनी थे। आपमें विद्या के सभी गुण विद्यमान थे। आपकी देव-शास्त्र-गुरु में अटूट श्रद्धा थी, आपने पारिवारिक, सामाजिक, राजनीतिक सभी क्षेत्रों में स्वयं को स्थापित किया एवं सफलतापूर्वक उसका निवर्हन किया।

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी दिवंगत आत्मा के प्रति भाववीनी श्रद्धांजली समर्पित करती है।

सम्मेदशिखर जी-अन्तर्मना के आशीर्वाद व तप के पुण्य से आचार्य श्री संभव सागर जी महाराज ने दी भक्त चौधरी को अपनी पिच्छिका

एक भक्त के लिए गुरु से जुड़ी हर चीज़ श्रेष्ठतम होती है। कहते हैं, गुरु जिस स्थान पर निवास करते हैं वह स्थान भक्त के लिए कैलाश है, वहाँ के वृक्ष, कल्प-वृक्ष हैं, वहाँ बहता जल गंगाजल है, उस जगह उगने वाली जड़ी – बूटियाँ संजीवनी बूटी हैं, वहाँ की वायु प्राण वायु है, वहाँ का भोजन परमात्मा का प्रसाद है तथा जल अमृत। जब एक शिष्य गुरु के साथ ध्यान के लिए बैठता है, समय उसके लिए वहीँ रुक जाता है, क्योंकि उस समय शिष्य को गुरु की स्थिति और गुरु द्वारा की गयी वर्षों की साधना का अनुभव होता है। ऐसे साधना के सुमेरु पर्वत की ओर अग्रसर साधना महोदधि अन्तर्मना आचार्य प्रसन्न सागर जी महाराज जो जैन धर्म के तीर्थराज सम्मेदशिखर जी मे उत्तम सिंहनिष्क्रीडित व्रत (496 उपवास 61 पारणा) की साधना में लीन है। उन्ही की साधना से प्रेरित उनके आत्मीय भक्त श्रावक श्रेष्ठी परम गुरु भक्त व अपने गुरु के साथ जैन धर्म के कठिनतम वर्तो का पालन करने वाले 'मनोज़ जैन चौधरी'(हैदराबाद) इस वर्ष अपने गुरु के साथ लघु सिंहनिष्क्रीडित व्रत की साधना कर रहे है। जिसमें वह 80 दिन के इस उपवास में 60 दिन उपवास व 20 दिन पारणा करेंगे।

गौरतलब है कि वर्तमान में देशभर के सम्पूर्ण जैन समाज में पहले ऐसे श्रावक साधनश्रेष्ठी है जो इस व्रत का पालन कर रहे हैं। श्री चौधरी का पुण्य कहे कि इससे पहले भी वह गुरु देव के साथ 3 बार सोलह कारण व्रत के साथ 6 रसों का त्याग, 64 रिद्धि व्रत, कनकावाली व्रत जैसी तप साधना कर चुके है। अपने गुरु के साधना से भक्त साधक गुरु आशीर्वाद से अपनी तप साधना में लीन है। जिसका परिणाम यह हुआ कि श्रावक शिरोमणि श्री मनोज जैन चौधरी को आचार्य श्री संभव सागर जी महाराज ने रक्षाबंधन के पावन अवसर पर अद्वितीय अकल्पनीय अद्भुत आशीर्वाद देते हुए त्रियोग आश्रम शास्वत तीर्थसम्मेद शिखर जी में अपनी पिच्छिका प्रदान कर उन्हें अपना मंगल आशीष प्रदान किया व गुरुदेव में साथ उनके उपवास की अनुमोदना की। इसीलिए कहा गया है -

"युद्ध भूमि में योद्धा तप, सूर्य तपे आकाश"
"तपस्वी साधक अंदर से तपे करें कर्मों का नाश"।

तीर्थक्षेत्र कमेटी महाराष्ट्र अंचल की गतिविधियाँ

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी महाराष्ट्र अंचल द्वारा श्री दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र गजपंथा पर क्षेत्र के विकास हेतु रु. ३,००,००० का अनुदान चेक द्वारा दिया गया। उस समय महारष्ट्र तीर्थक्षेत्र कमेटी के अध्यक्ष श्री संजय पापड़ीवाल, सौ. अंजली पापड़ीवाल, अंचल के उपाध्यक्ष श्री पवन पाटनी, सहकोषाध्यक्ष श्री राजेन्द्र कासलीवाल, टेक्निकल कमेटी के प्रमुख श्री पारस लोहाड़े उपस्थित थे। गजपंथा क्षेत्र की ओर से अध्यक्ष माननीय न्यायमूर्ति श्री कैलाशचंद चांदीवाल, उपाध्यक्ष श्री सुमेरकुमार काला, महामंत्री श्री सुवर्णा काला, उपाध्यक्ष श्री विजय कासलीवाल, सह सचिव श्री मनोज पाटनी, कोषाध्यक्ष श्री धन्नालाल दगडे, श्री राहुल कासलीवाल, श्री अल्केश कासलीवाल, श्री नूतन कासलीवाल, डॉ. वीरेंद्र जैन, श्री अनिल सेठी, श्री सुभाष जैन, श्री प्रकाश झांझरी, श्रीमती वंदना लोहाड़े प्रा.मंजूषा पाहाड़े आदि उपस्थित थे।

गजपंथा के अध्यक्ष न्यायमूर्ति श्री कैलाशचंद चांदीवाल ने बताया कि तीर्थक्षेत्र कमेटी महाराष्ट्र अंचल के अध्यक्ष श्री संजय पापड़ीवाल एवं अंचल कमेटी के प्रयास से गजपंथा सिद्धक्षेत्र की लगभग २६ एकड़ जमीन को कंपाउंड करने हेतु तीर्थक्षेत्र कमेटी द्वारा पूर्व में रु. ५-५ लाख (कुल रु. १० लाख) मिले हैं। और आज तीर्थक्षेत्र कमेटी द्वारा रु. ३ लाख अनुदान स्वरूप मिले हैं। जो कि जमीन को कंपाउंड करने हेतु तथा पहाड़ के कार्य हेतु खर्च किये जा रहे हैं। लगभग ७०० फीट जमीन कंपाउंड बाकी रह गया था उसका

भी कार्य इस रु. ३ लाख अनुदान से किया जायेगा। उन्होंने भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के अध्यक्ष श्री शिखरचंद पहाड़िया, महामंत्री श्री संतोष पेंढारी, महाराष्ट्र अंचल के अध्यक्ष श्री संजय पापड़ीवाल एवं पूरी कमेटी का आभार व्यक्त किया उन्होंने यह भी बताया कि श्री संजय पापड़ीवाल गजपंथा तीर्थक्षेत्र के उपाध्यक्ष हैं और गजपंथा क्षेत्र पर अनेक बड़ी-बड़ी योजनाओं का काम शीघ्र शुरू होने वाला हैं।

श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र अंजनगिरि (नाशिक) को तीर्थक्षेत्र कमेटी महाराष्ट्र अंचल के अध्यक्ष श्री संजय पापड़ीवाल महाराष्ट्र अंचल के सह कोषाध्यक्ष श्री राजेंद्र कासलीवाल मालेगांव, महरष्ट्र अंचल टेक्निकल कमेटी के प्रमुख श्री पारस लोहाड़े रु. २,५०,००० का अनुदान चेक देते हुए अंजनगिरि क्षेत्र के सर्वेसर्वा श्री सुमेर काला, अंजनगिरि के अध्यक्ष श्री पवन पाटनी, उपाध्यक्ष श्री अनिल सेठी, महामंत्री श्री मनोज गंगवाल, कोषाध्यक्ष

श्री दिगंबर जैन अतिशय क्षेत्र कोठाळा पर भगवान पार्श्वनाथ के दर्शन करते हुये तीर्थक्षेत्र कमेटी महाराष्ट्र अंचल के पदाधिकारीगण एवं कोठाळा क्षेत्र के विश्वस्त बजरंग व्यवहारे

श्री अमित लौहाड़े, विश्वस्त श्री हर्षवर्धन गांधी, श्री दिलीप।

श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र जटवाडा पर तीर्थक्षेत्र कमेटी महाराष्ट्र अंचल के अध्यक्ष श्री संजय पापड़ीवाल, तीर्थक्षेत्र कमेटी मुंबई के विश्वस्त श्री प्रमोद कासलीवाल, महाराष्ट्र अंचल के वरिष्ठ उपाध्यक्ष एवं खंडेलवाल दिगम्बर जैन पंचायत के अध्यक्ष श्री ललित पाटनी, अंचल के महामंत्री श्री भरत ठोले, उपाध्यक्ष श्री मनोज साहु, कोषाध्यक्ष श्री विनोद लोहाड़े, मंत्री श्री केतन ठोले आदि पदाधिकारियों ने जाकर भेंट दी। वहाँ पर उन्हें तीर्थक्षेत्र कमेटी की ओर से रु. २,५०,००० अनुदान चेक भी दिया गया है।

अतिशय क्षेत्र जटवाडा की ओर से क्षेत्र के अध्यक्ष डॉ. रमेश बडजाते, श्री अशोक गंगवाल, श्री कमलचंद कासलीवाल आदि उपस्थित थे। क्षेत्र के बारे में पूरी मालुमात श्री देवेन्द्र काला ने तीर्थक्षेत्र कमेटी पदाधिकारियों को दी उन्होंने क्षेत्र पर उपर की ओर ग्लास काम के लिए रु. ६,५०,००० की क्षेत्र में आवश्यकता है ऐसा निवेदन करते हुए कमेटी की ओर से अनुदान मिलने हेतु अपील की।

राजगृही में भव्य जिनचौबीसी मानस्तम्भ शिलान्यास समारोह सम्पन्न

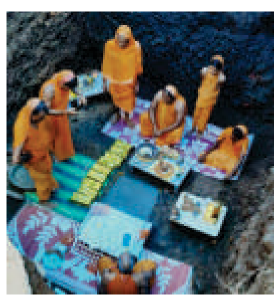

प्रकृति के सुरम्य वादियों से अलंकृत देवाधिदेव बीसवें तीर्थंकर भगवान मुनिसुव्रतनाथ स्वामी की गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान कल्याणक, वर्तमान शासन नायक महावीर स्वामी की प्रथम देशना भूमि तथा तेईस तीर्थकरों की समवशरण स्थली में अवस्थित श्री दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र राजगृहीजी धर्मशाला मन्दिर में दिनांक 20 अगस्त 2021 दिन शुक्रवार को भव्य जिनचौबीसी मानस्तम्भ शिलान्यास समारोह साडोरा (मध्यप्रदेश) से आये पंडित राजकुमार जैन शास्त्री जी के मंगल सानिध्य में सम्पन्न किया गया।

आचार्य श्री 108 विशुद्धसागर जी महाराज के परम प्रभावक शिष्य श्रमण श्री 108 अरिजित सागर जी महाराज के मंगल आशीर्वाद से जिनचौबीसी मानस्तम्भ का निर्माण किया जा रहा है। मानस्तम्भ शिलान्यास समारोह विधिवत पूजन प्रातः भक्तजनों ने णमोकार महामंत्र के जयकारे लगाते हुए मंगलाष्टक के साथ प्रारम्भ किया। सर्वप्रथम यंत्र सिंघासन में विराजमान कर शांतिधारा कर शांति विधान का कार्यक्रम के पश्चात हवन आदि कार्य निर्विघ्न पूर्वक सम्पन्न कर मानस्तम्भ निर्माण हेतु ईंट रखकर कार्य का शुभारंभ हुआ।

कार्यक्रम की विशेष जानकारी देते हुए बिहार राज्य दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र के मानद मंत्री श्री पराग जैन ने बताया कि राजगृही की पावन भूमि पर मानस्तम्भ का निर्माण होना तीर्थ के लिए एक अच्छा संकेत है इस कार्य के सम्पन्न हो जाने से तीर्थवंदना को आने वाले सभी जैन धर्मावलंबियों का तीर्थ के प्रति आस्था और बढ़ेगी और क्षेत्र की विकास कार्य को गति प्रदान करेगी।

प्रबंधक श्री विजय कुमार जैन ने कहा कि "गुरुवर आचार्य श्री 108 विशुद्धसागर जी महाराज के शिष्य श्रमण श्री 108 अरिजित सागर जी महाराज के पावन आशीर्वाद से निर्मित होने वाले भव्य चौबीसी मानस्तम्भ बनना एक सौभाग्य की बात है। राजगीर की धरा जहाँ तीर्थकरों के पावन चरणों से पवित्र तथा कल्याणकारी दिव्य देशना से गुंजित तीर्थ हो वहाँ गुरुवर का आशीर्वाद मिलना हम सभी के लिए सौभाग्य की बात है। ऐसे पावन तीर्थ की हम सभी वंदन करते हुए तीर्थ विकास के लिए सम्पूर्ण जैन समाज से आग्रह करते है। इस कार्यक्रम में श्री संजीत जैन, श्री मुकेश जैन, श्री रवि कुमार जैन, श्री मनोज जैन, श्री मनीष जैन, श्री बैजनाथ जैन, श्री उपेन्द्र जैन, श्री गौतम, श्री चीकू, छोटू, श्री बिट्टू एवं स्थानीय जैन समाज उपस्थित रहे।

The correct place and date of birth santashiromani, gurudev, aacharya vidyasagarji

Shantinath Lagare

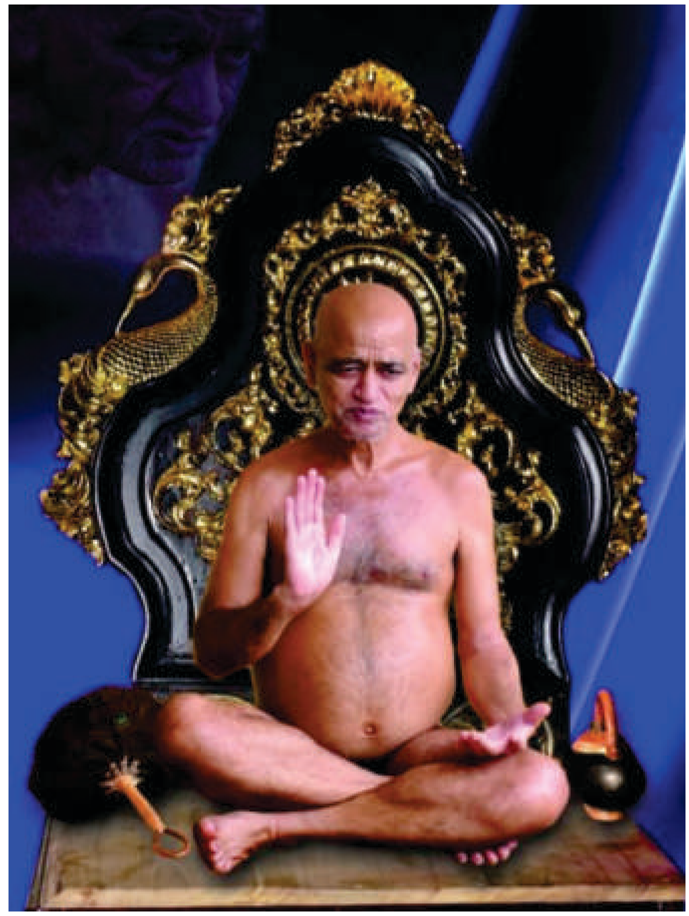

1. **Present stand** - There are about 400 biographies in various language, depicting life and achievement of Acharya shri. In all of them the date of birth (DOB) is 10-10-1946 sharad poornima. Fathers name is Shree Mallappa Parisa Ashtage and mothers name is Shrimanti (in some books it is Shrimati wich is wrong). The place of birth is either Sadalaga or Chikkodi. Vidyasagar is the second child of the couple.
2. **Correct Details -** Vidyasagar (who later became Acharyashri Vidyasagar was born on 03-10-1944 at Govt. Hospital Chikkodi)
3. **Reason For incorrect Details** - The first author, probably Vidyadhar se Vidyasagar, met Shri Mahavir Ashtage the elder brother. (his DOB is 01-05-1942, then birth certificate from Tahashildar is with me) He said "Vidyasagar is 4 years younger to me" while mother shrimati said "Vidyasagar was born on sheegettannime the day on which people worship the mother earth (fields). Imfact it is on anuradha nakshatra, which is usually one or two days after poornima. Mahavir forgot that he was just one standard ahead of Vidyadhar in school. The author added four years to 1942, went through hindu panchangas, Found the date of sharad poornima and gave the DOB 10-10-1946.
4. **What made me to search DOB** - I wanted to write a book, in kannada, Santashromani Guruwar, Acharyashri Vidyasagarji, which is published in 2018. I met shri maruti madiwar (closest friend of Vidyadhar, whom Devotees of acharyashri know). He gave many details, narrated many incidents. He hinted that DOB 10-10-1946 might be wrong. I also met Vidyasagar's classmates (std I to IX), Shri B.A. Gundakalle (DOB 1.2.1943) and shri P.A. Mutanale (DOB 1-3-1943). Both are from sadalage and are retired teachers. Shri Ravasaheb A. Patil (of BORGAON DOB 11-4-1944), now Chairman, Dakshin Bharat Jain Sabha, was also a Classmate of Vidyasagar, at Bedakihal high school.
5. **Old procedure of recording DOB by the Govt. –** In each village there used to be a talanthi (village accountant) and many 'sandis' (govt servants) to assist talent whenever a baby was born, submit it to talent. He in turn would send a consolidated list, at the end of the month, to Tahashildar. Deaths were also sent in the same manner. These records are maintained in the record office. One can apply for a birth certificate, to the Tahashildar, with a nominal fee, giving details of name, parents, probable year of birth.

   I applied for a birth certificate of vidyadhar, mentioning the probable year May 1943 to October 1946. The officer in charge, shri anil gouraj (fortunately a jain from Hirekudi) went through the records of sadalaga and akkol (shrimanti's native) for the given period, but could not trace. I requested him to check chikkodi record, as I know, vidyadhar was admitted in the Govt. hospital. He got the record and issued a birth certificate.

   In the certificate, it is a male baby, name not mentioned (as naming ceremony was not over) DOB 3-10-1944 place of birth Chikkodi, parent's name Malagouda parisa ashtage) parent's permanent address sadalaga registration no. 228. I have enquired in sadalaga and found that there is no family with Ashtekar as surname.
6. **School records** – In those days a child was admitted to I standard at the age of 5yeras 10 month's (with some influence 5 years 6 month's) the parents rarely remembered exact DOB. So, the teachers used to adjust DOB so as to

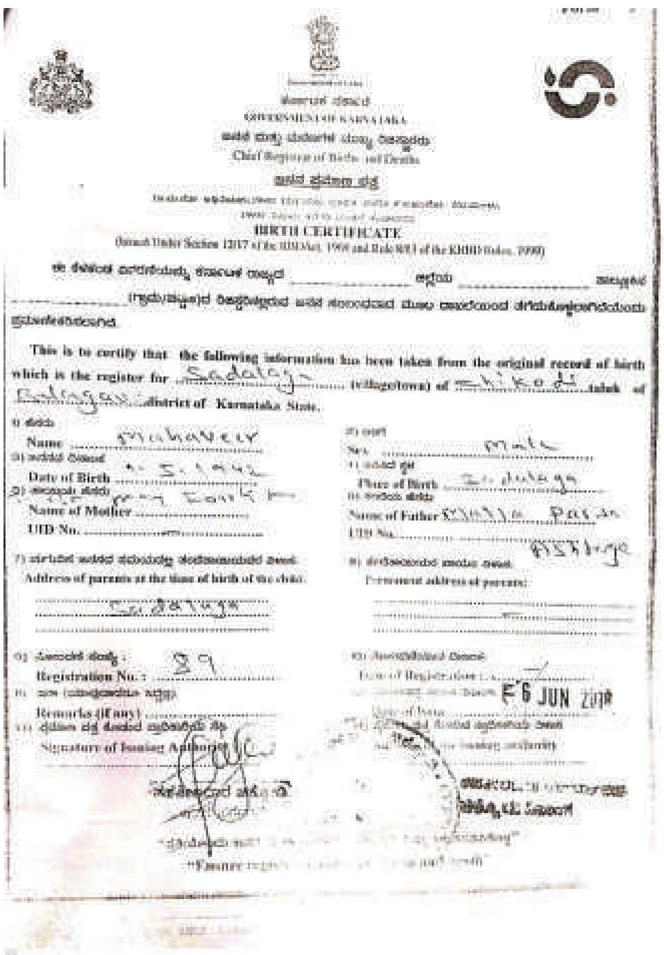

GOVERNMENT OF KARNATAKA
Chief Registrar of Births and Deaths
BIRTH CERTIFICATE
(Issued Under Section 12/17 of the RBD Act, 1969 and Rule 8/13 of the KRBD Rules, 1999)

This is to certify that the following information has been taken from the original record of birth which is the register for Sadalaga (village/town) of Chikodi taluk of Belgaum district of Karnataka State.

Name: Mahaveer
Sex: Male
Date of Birth: 6-5-1942
Place of Birth: Sadalaga
Name of Mother: Ramakka (?)
Name of Father: Mallappa
UID No.
Address of parents at the time of birth of the child:
Permanent address of parents:
Registration No.: 89
Date of Registration:
Remarks (if any):
Date of Issue: 6 JUN 2018
Signature of Issuing Authority

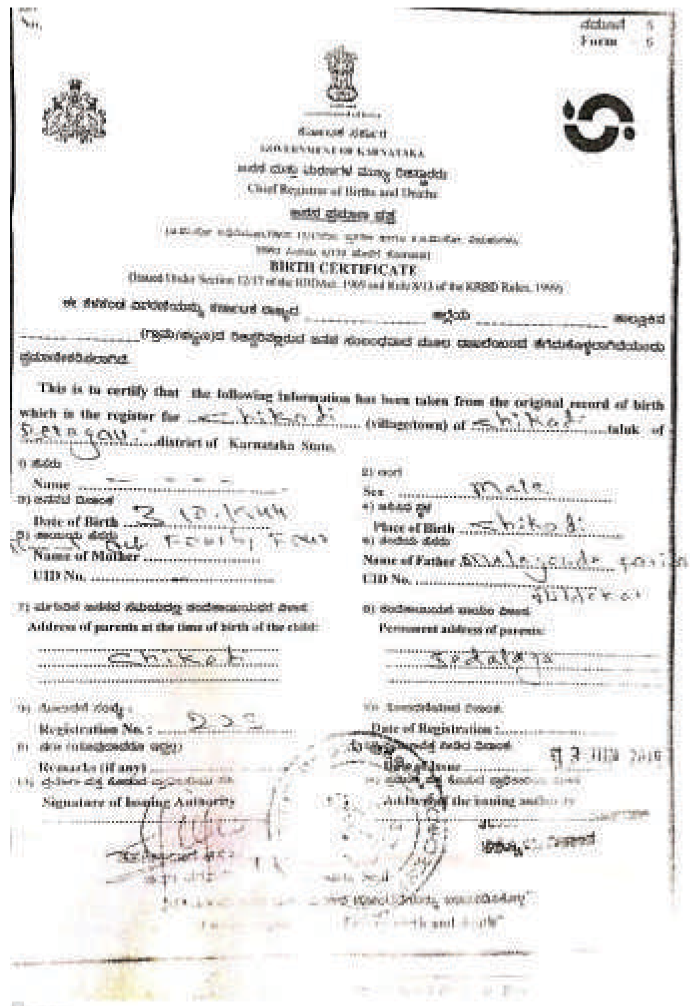

Form 5
GOVERNMENT OF KARNATAKA
Chief Registrar of Births and Deaths
BIRTH CERTIFICATE
(Issued Under Section 12/17 of the RBD Act, 1969 and Rule 8/13 of the KRBD Rules, 1999)

This is to certify that the following information has been taken from the original record of birth which is the register for Chikodi (village/town) of Chikodi taluk of Belgaum district of Karnataka State.

Name:
Sex: Male
Date of Birth: 3-10-1944
Place of Birth: Chikodi
Name of Mother:
Name of Father: Malappa
UID No.
Address of parents at the time of birth of the child: Chikodi
Permanent address of parents: Sadalaga
Registration No.:
Date of Registration:
Remarks (if any):
Date of Issue:
Signature of Issuing Authority

complete 5 years 6 months. (One will find DOB'S of most of the students admitted in a year, nearly the same DOB so recorded is accepted. Nobody is authorized to change.

Vidyadhar was admitted in Bedakihal high school in june 1957 (Mahavir was admitted in June 1956 for std VIII. A child would have completed 12 years 6 months at the time of admission. So, June 1957 minus 12 years 6 months give January 1945. As Vidyadhar was born on sharad poornima, DOB should be in October 1944.

Thus, one can conclude that Vidyadhar was born on 03-10-1944 at Chikkodi.

7. **Approached-** As soon as I got the birth certificate, I rushed to shri Niyamasagarji, (who was in hupri then); he accepted my findings. I have also sent this information to shri Yogsagarji, shri Abhaysagarji, shri Pramansagarji, shri Sudhasagarji, ahri Punyasagarji, Aryikashri Adarshmatiji and some others.
8. **An earnest appeal-** May I dare to appeal to all the divotees of Acharyashri, to take note of this DOB, and take nessary steps to correct it. A paper note may be published in jain periodicals. (it is worth remembered that Acharyashri Gyanasagarji Deekshaguru of Vidyasagarji was corrected (from 1897 to 1891).
9. My introduction – I am shantinath Tavanappa Lagare of Borgaon, 7 km from Sadalaga. My education is B.Sc, B.Ed. I served as a teacher in Bedakihal high school from 1970 to 2006. I had 'Darshan Bhagya' of Acharyashri in Oct. 1993 at Ramteka.

   Prof B.P. Nyamagouda of K.M. Arts and Commerce Collage has translated 'Mookamati' to Kannada poetry. I was the co-author. I have translated Mookamati to kannada prose, with the blessing of Acharyashri. I have translated four books of shri Akshaysagarji. My mobile-9986829910.
10. Enclosures i) Birth certificate of Vidyadhar, from Tahashildar ii) Birth certificate of mahavir

I have also written a book, in kannada, depicting life and achievement of Acharyashri.

Ideal Bhattrak Centre
Shreekshetra Shravanabelagola Matha

Mahendra Kumar Jain, Jaipur

Bhattaraka tradition has contributed lot of things to Jain religion and culture. It has fought for the protection of Jains and their religious ways of life. It has faced and succeeded in protecting the interests of religion and perform the religious practices to the followers. Many centres of bhattarakas have been still existing and serving the people in their traditional causes. Due to the dark age of the nation and society many centres have been ceased to serve putting the followers in a cultural vacuum. But, the traditional stream of bhattarakas still exists. Among such age old centres of bhattarakas one centre which is serving the people showing the ways to this followers for the last more then two thousand and three hundreds years is sharavananabelagola bhattarak peetha. It is the very ancient centre of religion as well as the internationally known centre also. The monolith of bhagawan bahubali of shravanabelagola is one of the wonders of the world. It has attracted and attracting the people from all over the world to visit and take back the massage of peace and non- violence with them.

With the divine knowledge Acharya bhadarbahu whom we call as the last shrutakevali came to know that in the northern parts of bharatavarsha there will be a acute famine for the coming twelve years. That period of acute famine will be very difficult for the religious practices for the monks and acharyas. He therefore left the place alongwith his about 12000 diciples to the south. He came to katavapra which is now know as shravanabelagola. He saw the rocky, naturally beautiful, safe and calm place for the monks and acharyas. He decide to stay there. The needs of the monks and acharyas were fulfilled by the natives of katavapra in those days. It show that before the arrival of last shrut kevali bhadrabahu there were people who were following the Jain principles. It was the year 300 B.C. the greatest emperor Chandragupta mourya who was the beloved devotee of Bhadrabahu came with his guru handing over his empire to his son Bimbisar and took sanysa and attained salvation here only with his guru Acharya Bhadarabahu. Since those days the place has been the centre of religion. It is doing its best to fulfil the causes of religion.

Chandragiri- Chikkabetta became the place of salvation for the monks. During the latter part of 10th century the great chieftain chamundaraya got the statue of Bhagwan Bahubali installed on indargiri just to fulfil the promise of his mother Kalaldevi. Since then Indragiri also became famous. To look after the religious centre the need to appoint the head was felt. Chamundaraya requestes his guru Nemichandra Siddhanthachakravarti to accept the responsibility. After persuasion Shri Nemichandracharya agreed to become head of the organised centre of religion. One after another the heads took over the charges and served the institution and the society and its people with great service. The centre became very famous. The noted heads to mention are Shri Nemichandra Siddhanthachakravarti, Shri Sagarnandi Siddhantidev, Shri Shantivarnideva, Shri Shaniraj Swami, Shri Cheluvar Swami, Shri Nemisagar Varniji, Shri Bhattakalanka Swamiji etc.

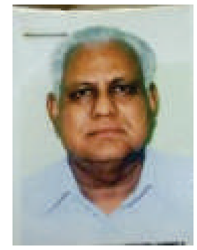

During, 11^{th} century when the land was ruled by the king ballal, the king suffered from the serious illness. It was the difficulty of his survival even after treatment by many expert doctors of those days. The bhattaraka of sharavanabelagola of those days treated the king with his divine mantra and medicine. The king recovered from the serious illness.

The attitude of the society to look at the peetha now a days has been changed. The expectations also have been more from the peetha by the people. The present Bhattaraka whom we call with affection as param poojya jagdguru karmayogi swasti shri Charukeerthy Bhattarak Mahaswamiji came to the throne in the year 1969 with his changed attitude. His first thought is, matha is not for swamiji but swamiji is for the matha, society is not for swamiji but swamiji is for the society. With his new idea he started serving the institution along with his religious practices. Since his early age of accepting the throne till today he brought many developments in the kshetra.

He started the educational institution for the upliftment of the followers socially. He encouraged people to start educational institution in some parts of the state. The recent days are days of science and technology. Keeping this in view recently he has started the "BAHUBALI COLLAGE OF ENGINEERING" before three decades back. Many youngsters of the community throughout the nation are getting the advantage of it. By opening the free hospitals including one mobile hospital and eye hospital many poor and needy of the surrounding area are getting the benefits.

The lodging facilities for the pilgrims visiting the kshetra were not sufficient even for ten pilgrims. Now even if 2000 pilgrims visit the kshetra they all will be comfortably be accommodated in the guest house. Such abundant facilities have been developed during the last three decades. The guest house for the VIP's and VVIP's also have been got constructed in the kshetra. Free meals are served to the pilgrims.

The national institute of prakrti studies and research has been opened and got the recognition as a research institute by the mysore university. It is serving to preserve and the propagate the language prakrit and the valuable ancient literature in it. The big project of Dhavala, Jayadhavala and Maha Dhavala prakrit epics to translate to kannada was under taken. Twenty noted scholars are engaged in it.

Thus, the kshetra has been now an ideal one to the society. It will be progressing to the expections of the society under the able leadership and guidance of parama poojya karmayogi swasti shri Charukeerthy Bhattarak mahaswamiji

डॉ. अनुपम जी जैन का अभिनन्दन समारोह एवं "अनुपम गणितज्ञ" अभिनन्दन ग्रंथ समर्पण हर्षोल्लासपूर्वक सम्पन्न

चक्रवर्ती भगवान भरत ज्ञानस्थली, दिगम्बर जैन तीर्थ, कनॉट पैलेस, नई दिल्ली में सुप्रसिद्ध अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त विद्वान एवं जैन तीर्थवंदना पत्रिका के प्रधान संपादक डॉ. अनुपम जैन के अभिनन्दन समारोह का कार्यक्रम हर्षोल्लासपूर्वक सम्पन्न किया गया। चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर महाराज की अक्षुण्ण परम्परा के सप्तम पट्टाचार्य **आचार्य श्री अनेकांतसागर जी महाराज** एवं भारतगौरव, चारित्र चंद्रिका, **गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ससंघ** सान्निध्य में कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसमें मुख्य अतिथि माननीय श्री रामनिवास जी गोयल, दिल्ली विधानसभा अध्यक्ष एवं श्री सुरेश जैन, कुलाधिपति तीर्थंकर महावीर विश्वविद्यालय, मुरादाबाद रहे। राजस्थान विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. राजीव जैन जी एवं प्रो. रजनीश जैन, सचिव-वि.वि. अनुदान आयोग सारस्वत अतिथि के रूप में महोत्सव को गौरवान्वित कर रहे थे। संपादक मण्डल से डॉ. श्रेयांस कुमार जैन, डॉ. जयकुमार जैन, प्रो. सुरेशचन्द्र अग्रवाल, मेरठ, डॉ. संजीव जैन सराफ, वाराणसी, डॉ. सविता जैन, रतलाम, प्रतिष्ठाचार्य पं. विजय कुमार जैन, हस्तिनापुर, डॉ. जीवनप्रकाश जैन, हस्तिनापुर, श्रीमती उषा पाटनी, इन्दौर, डॉ. सुरेखा मिश्रा, इन्दौर आदि उपस्थित रहे। कार्यक्रम की अध्यक्षता दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान, हस्तिनापुर के अध्यक्ष एवं पीठाधीश स्वस्तिश्री श्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामी जी ने की।

सभा का शुभारंभ श्रीमती नंदिनी जैन धर्मपत्नी श्री अनुज जैन (इन्दौर) के मंगलाचरण से हुआ। इसके पश्चात मंगल नृत्य कु. उर्जित जैन, कु. देशना जैन के द्वारा प्रस्तुत किया। तत्पश्चात मुख्यअतिथि श्री सुरेश जैन, कुलाधिपति, मुरादाबाद, सारस्वत अतिथि प्रो. राजीव जैन, कुलपति-राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर, श्री रजनीश जैन, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के सचिव, दिल्ली, प्रतिष्ठाचार्य श्री विजय कुमार जैन आदि ने कार्यक्रम का दीपप्रज्जवल करके शुभारंभ किया। मुख्य अतिथि द्वय एवं सम्पादक मंडल का सम्मान शॉल, श्रीफल एवं प्रतीक चिन्ह देकर के किया गया। कार्यक्रम में विशेष अतिथि के रूप में श्री सुरेश जैन (आई.ए.एस.), भोपाल, न्यायमूर्ति श्रीमती विमला जैन, भोपाल, प्रो. वी. के. जैन, फिरोजाबाद, श्री जमनालाल जैन हपावत, मुम्बई, श्री संजय जी दीवान, सूरत, श्री कमल बी. जैन, पंजाबीबाग, दिल्ली, श्री मनोज जी जैन, श्री राकेश जैन, मेरठ, जैन सभा नई दिल्ली के प्रमुख कार्यकर्ता श्री अतुल जैन, श्री राकेश जैन, श्री राजकुमार जैन, श्री विनोद जैन, श्री हेमचंद जैन, श्री ऋषभविहार, दिल्ली आदि सम्मिलित हुए।

कार्यक्रम का प्रस्ताविक वक्तव्य पीठाधीश श्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामीजी के द्वारा दिया गया। जिसमें स्वामीजी ने संक्षिप्त रूप में जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर एवं शाश्वततीर्थ अयोध्या की गतिविधियों एवं डॉ. अनुपम जी जैन के ग्रंथ समर्पण की भूमिका पर विशेष रूप से प्रकाश डाला। तदुपरान्त प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी का आशीर्वचन सम्पन्न हुआ। तत्पश्चात डॉ. अनुपम जैन का सम्मान दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान के पदाधिकारियों श्री अनिल जैन, श्री मनोज जैन, श्री राकेश जैन, श्री प्रदीप जैन आदि के द्वारा सम्पन्न किया गया। जिसमें मुख्य रूप से पगड़ी, फूलमाला, वस्त्र, शॉल एवं प्रशस्ति व मोमेन्टों प्रदान किया गया साथ ही डॉ. अनुपम जैन की मातेश्वरी श्रीमती इंदिरा जी जैन एवं धर्मपत्नी श्रीमती निशा जी जैन को पगड़ी, साड़ी, श्रीफल, वस्त्र भेंट करके सम्मानित किया गया। इसी श्रृंखला में पुत्रों श्री अम्बुज, अनुज एवं आयुष जैन व पुत्रवधुओं श्रीमती तनु एवं नंदिनी जैन का भी पगड़ी, वस्त्र एवं पटका पहनाकर के स्वागत किया गया। इसी क्रम में युवापरिषद महिला संगठन एवं अ. भा. पल्लीवाल जैन महासभा एवं उसकी दिल्ली शाखा के कार्यकर्ताओं के द्वारा प्रशस्ति भेंट की गई। प्रशस्ति का वाचन प्रतिष्ठाचार्य पं. विजय कुमार जी एवं श्री विजेन्द्र जैन, शाहदरा के द्वारा किया गया। प्रशस्ति समर्पण युवा परिषद के कार्यकर्ताओं के द्वारा किया गया। जिसमें डॉ. जीवनप्रकाश जैन, श्री विजय जैन, श्रीमती सुनंदा जैन, श्री गौरव जैन, श्री कार्तिक जैन, डॉ॰ शैफाली जैन, श्री अक्षय जैन आदि के द्वारा किया गया। ग्रंथ विमोचन एवं समर्पण विधानसभा अध्यक्ष श्री गोयल, कुलाधिपति श्री सुरेश जैन व कुलपति प्रो. राजीव जैन, वि.वि. अनुदान आयोग के सचिव प्रो. रजनीश जैन एवं संपादकगण तथा दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान के गणमान्य पदाधिकारियों के द्वारा किया जाकर डॉ. अनुपम जी जैन, इन्दौर को समर्पित किया गया।

इस अवसर पर परमपूज्य, गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने डॉ. अनुपम जैन को अपना विशेष आशीर्वाद प्रदान किया एवं उपस्थित मुख्यअतिथि श्री रामनिवास जी गोयल विधानसभा अध्यक्ष को खूब-खूब आशीर्वाद प्रदान करते हुए कहा कि वर्तमान में धर्म के साथ-साथ सभी कार्यो को न्याय-नीति के अनुसार करते हुए सदैव आप अपने जीवन में आगे बढ़े एवं अहिंसा को सर्वोपरि करते हुए राजनीति का संचालन करें। पुनः ख्याति प्राप्त

विद्वान डॉ. अनुपम जैन के लिए एवं उनके परिवार के लिए विशेष आशीर्वाद प्रदान किया। इसी क्रम में श्री रामनिवास गोयल जी ने अपने वक्तव्य में कहा कि गणित जैसे नीरस विषय पर महारत हासिल करके अनुपम जी ने एक अनुपम कार्य किया है। यह सदैव अविस्मरणीय रहेगा। आज इस ग्रंथ विमोचन एवं समर्पण के अवसर पर ढ़ेर सारी शुभकामना डॉ. साहब को समर्पित करता हूँ। इसी श्रृंखला में कुलाधिपति श्री सुरेश जैन ने अपनी शुभकामनाओं के साथ डॉ. अनुपम जी को विशेष साधुवाद देते हुए कहा कि **गणित एवं भारतीय गणित तथा जैन गणित जैसे अनेक विषयों के महारथी एवं अनेक उच्च पदों पर आप कार्यरत हैं** जो कि जैन समाज के लिए अत्यंत गौरव का विषय है। इसी श्रृंखला में डॉ. श्रेयांस कुमार जैन, अध्यक्ष-शास्त्री परिषद ने अपनी शुभकामनाएँ प्रेषित की। डॉ. अनुपम जैन के शिक्षागुरू प्रो. सुरेशचन्द्र जी अग्रवाल, मेरठ, प्रो. वी. के. जैन, फिरोजाबाद ने भी इस अवसर पर अपने उद्गार प्रकट किये एवं अनुपम जी को अपना सर्वश्रेष्ठ शिष्य निरूपित किया। कार्यक्रम में अनेक गणमान्य महानुभावों ने उपस्थित होकर के सुखद अनुभूति प्राप्त की।

डॉ. अनुपम जी जैन ने अपने कृतज्ञ उद्बोधन में कहा कि 'सर्वप्रथम मुझे इस बात का गौरव है कि मेरे अभिनन्दन ग्रंथ विमोचन की सभा में आचार्य श्री अनेकांतसागर जी महाराज एवं गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी का ससंघ पावन सान्निध्य है। पूज्य माताजी एवं आचार्य श्री की मेरे ऊपर विशेष अनुकम्पा रही है। पूज्य चंदनामती माताजी का विशेष वात्सल्य प्रारंभ से ही सदैव मेरे ऊपर रहा है। संपादक मण्डल के लिए मैं विशेष रूप से आभार व्यक्त करना चाहूँगा जिन्होंने इतने कम समय में अत्यधिक श्रम के साथ इस ग्रंथ की सामग्री एकत्र करने में, प्रूफ रीडिंग करने में, समायोजन करने का कार्य किया। मेरे गुरुवर प्रो. एस. सी. अग्रवाल मेरठ से एवं प्रो. वी. के. जैन फिरोजाबाद से पधारे हैं मैं उनके प्रति कृतज्ञ हूँ। इस अवसर पर मैं सदैव अपना आशीर्वाद प्रदान करने वाली एवं स्वयं कष्ट उठाकर मुझे शिक्षा दिलाने वाली अपनी माँ श्रीमती इंदिरा जैन एवं धर्मपत्नी श्रीमती निशा जी के विषय में भी दो शब्द कहूँगा जिन्होंने मुझे पारिवारिक जिम्मेदारियों से निवृत्त रखा एवं सामाजिक कार्यों में आगे बढ़कर कार्य करने में मुझे सहयोग किया। जिनकी वजह से मैं सामाजिक कार्यों को कर सका। मेरे तीनों पुत्र अम्बुज, अनुज एवं आयुष विशेष रूप से उच्च शिक्षित एवं स्वावलम्बी हैं। फलतः मुझे किसी भी प्रकार की कोई भी चिन्ता नहीं है दोनों पुत्रवधुएँ सुशील एवं कर्तव्यनिष्ठ हैं एवं मेरे पौत्र, पौत्री मा. अथर्व, अवनि एवं आरव घर की शोभा हैं। उन सब के प्रति मैं अपना आशीर्वाद एवं शुभकामनाएँ प्रदान करता हूँ।

इस अवसर पर डॉ. अनुपम जैन के सगे संबंधी, चाचा-चाची एवं परिवार, मौसा-मौसी एवं उनके परिवार, बहन-बहनोई एवं उनके परिवार, ससुराल पक्ष के अनेक जन एवं सभी इष्ट मित्र, गुरूजन एवं परिवार के सभी सदस्यों ने भाग लेकर के अपनी उपस्थिति दर्ज कराई। सभी का सम्मान दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान के द्वारा किया गया।

इस अवसर पर उपस्थित डॉ. जैन के परिजनों, सगे-संबंधियों एवं मित्रों की हस्तीनपुर की तीर्थ यात्रा आयोजित की गयी थी। भगवान शांतिनाथ, भगवान कुंथुनाथ, भगवान अरहनाथ की जन्मभूमि की वंदना कर सभी ने प्रसन्नता व्यक्त की।

सामाजिक मूल्यों की पुनर्स्थापना के संकल्प के साथ चिंतन समूह का प्रथम अधिवेशन संपन्न

संस्था नहीं , पद नहीं, आदेश नहीं, महिमामंडन नहीं, केवल समाज विकास का संकल्प

आगरा । ना कोई संस्था होगी, ना पदाधिकारी होंगे , कोई आदेश नहीं , व्यक्तिगत महिमामंडन नहीं, संत -पंथ-जातिवाद से दूर केवल और केवल सामाजिक विकास, सद्भावना, समन्वय समभाव के साथ धर्म के नैतिक मूल्यों संस्कारों को बचाने के संकल्प के साथ 15 अगस्त 2020 को डॉ. चीरंजीलाल जी बगड़ा कोलकाता, एडवोकेट अनूपचंद जी जैन फिरोजाबाद, डॉ अनिल जैन जी जयपुर, राजेंद्र जैन महावीर सनावद के सद प्रयासों से गठित चिंतन समूह का प्रथम वार्षिक अधिवेशन दिगंबर जैन परिषद एवं जैन शिक्षा समिति आगरा के आतिथ्य में 4 सितंबर 2021 को एमडी जैन इंटर कॉलेज हरी पर्वत आगरा में अभूतपूर्व उत्साह व देश के गणमान्य समाजसेवियों की उपस्थिति में संपन्न हुआ।

परम पूज्य संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के परम प्रभावक शिष्य, अर्हं योग के प्रणेता का आशीर्वाद विशेष रूप से प्राप्त हुआ। सुप्रसिद्ध उद्योगपति, वरिष्ठ समाजसेवी श्री प्रदीप जैन जी पीएनसी आगरा, आगरा के महापौर माननीय श्री नवीन जैन जी के आतिथ्य में हुए इस आयोजन का संयोजन श्री मनोज जैन बाकलीवाल आगरा ने किया।

आयोजन में चिंतन समूह के डॉ. चिरंजीलाल जी बगड़ा कोलकाता, एडवोकेट अनूपचंद जी जैन फिरोजाबाद, डॉ अनिल जैन जी जयपुर, श्री प्रदीप जैन (पीएनसी) आगरा, डॉ. श्रेयांस कुमार जी जैन बड़ौत, न्यायमूर्ति विमला जी जैन भोपाल, श्री सुरेश जैन जी (आईएएस) भोपाल, श्री जमनालाल जी हापावत मुंबई , श्री विजय लुहाड़िया अहमदाबाद, श्री राजेंद्र महावीर सनावद, डॉ. सुनील जैन संचय ललितपुर, श्री विनोद कुमार जी बाकलीवाल मैसूर ,श्री अशोक जी सेठी बेंगलुरु, श्री टी के वेद इंदौर ,श्री मनोज जैन जी जैन आगरा के साथ जैन परिषद आगरा के अध्यक्ष श्री जगदीशप्रसाद जैन, श्री भोलानाथ जैन, श्री संजय जैन एनके एक्सपोर्ट ,श्री निर्मल मोठ्या , श्री हीरालाल जी बैनाड़ा, श्री पुष्पेंद्र जैन (अर्थमंत्री), श्री राजकुमार जैन मंत्री, श्री राकेश जैन (पर्दे वाले), श्री सुनील जैन ठेकेदार(महामंत्री), श्री विमलेश जैन मार्सन्स , जैन संघ मथुरा के महामंत्री श्री ओमप्रकाश जैन कोसी, श्री सुनील जैन, श्री अंकेश जैन,श्री अनिल जैन, श्री अनिल जैन आदि के साथ मिलकर तीन सत्रों में चिंतन -मंथन कर विभिन्न समस्याओं का रोड मैप बनाकर कार्य करने का निश्चय किया।

***अच्छे उद्देश्य के साथ जीने वाले हारते नहीं हैं: मुनि श्री प्रणम्य सागर जी महाराज* :** अर्हं योग प्रणेता परम पूज्य मुनि श्री प्रणम्यसागर जी महाराज ने चिंतन समूह के सदस्यों को संबोधित करते हुए कहा कि नेतृत्व करना सीखा नहीं जाता, यह एक स्वाभाविक प्रक्रिया है । सन्मार्ग पर ले जाने की कला नेतृत्व है। अपनी पहचान बनाना पड़ेगी । सभी की पहचान आचरण से बनेंगी। मुनिश्री ने चिंतन समूह के सदस्यों को आशीर्वाद प्रदान किया। आगरा जैन परिषद के अध्यक्ष श्री जगदीश प्रसाद जी जैन, श्री प्रदीप जैन पीएनसी आदि ने सभी का स्वागत, अभिनंदन किया। एडवोकेट अनूप चंद जैन, राजेंद्र महावीर, डॉ चिरंजीलाल जी बगड़ा, जमनालाल जी आदि ने संबोधित किया। संचालन श्री मनोज जैन आगरा ने किया । इस अवसर पर श्री प्रदीप जैन पीएनसी के नेतृत्व में चिंतन समूह के सभी सदस्यों को परम पूज्य मुनि श्री प्रणम्य सागर जी महाराज का पाद प्रक्षालन करने का विशेष सौभाग्य प्राप्त हुआ।

प्रथम सत्र का शुभारंभ अतिथियों द्वारा दीप प्रज्वलन के साथ किया गया। प्रारंभ में मंगलाचरण डॉ. सुनील जैन संचय ललितपुर ने किया। अध्यक्षता डॉ. चीरंजीलाल बगड़ा कोलकाता ने की। मुख्य अतिथि श्री प्रदीप जैन पीएनसी रहे। संचालन श्री मनोज जैन आगरा ने किया।

सबको साथ लेकर चलना ही समूह का उद्देश्य : प्रदीप जैन पीएनसी

जैन समाज के वरिष्ठ समाजसेवी व चिंतन समूह के अधिवेशन के मुख्य अतिथि श्री प्रदीप जैन पीएनसी ने कहा कि चिंतन समूह समाज के एकीकरण के लिए बना है। यह समाज की संस्थाओं के बीच समाज की भावनाएं पहुंचाएगा । समाज को आगे बढ़ाने के

लिए सारे कार्य होंगे जिनसे समाज की एकता, समन्वय ,सद्भावना मजबूत होगी। श्री प्रदीप जैन जी ने सभी का परिचय कराते हुए स्वागत किया। उन्होंने आगरा को प्रथम अधिवेशन के लिए चुनने हेतु आभार व्यक्त किया।

संस्थाओं को हथियाने का इरादा नहीं : एडवोकेट अनूप चंद जैन

एडवोकेट अनूप चंद जैन फिरोजाबाद ने कहा कि चिंतन समूह के सदस्यों ने सोचा कि समाज की समस्याओं पर विचार करें इसलिए हम समस्याओं पर चर्चा कर उनके सुझाव संस्था व पदाधिकारियों तक पहुंचाएंगे। हमारा संस्थाओं को हथियाने का कोई इरादा नहीं है ,हम कोई चंदा -चट्ठा नहीं करेंगे। हमारी संस्थाओं में चुनाव व इसके बाद होने वाले विभाजन के बाद नई संस्थाओं का गठन शुभ संदेश नहीं है ।इसलिए हम समाज को नई सुबह के लिए चिंतन प्रदान करेंगे।

जैन समाज की पहचान शाकाहार और अहिंसा से : डॉ. चिरंजीलाल बागड़ा

डॉ चीरंजीलाल जी बगड़ा कोलकाता ने कहा कि समाज में विकृति का मूल कारण हमारे विजन की कमी है जिसके कारण संस्थाओं में संकीर्णता व ईगो की लड़ाई में समय बर्बाद होता है। हमारी पहचान अहिंसा व शाकाहार से है। हमारी पहचान आहार शुद्धि है ,आहार विज्ञान है। यदि हम सही दिशा में काम करें तो आज संपूर्ण विश्व जैन बनने की होड़ में लगा हुआ है। चिंतन समूह राष्ट्रीय संस्थाओं को ऐसा नवनीत निकाल कर देगी जिससे उन्हें काम करने में सहयोग मिलेगा।

समानुभूति, सद्भावना का विचार है चिंतन समूह : राजेंद्र महावीर

श्री राजेंद्र जैन महावीर सनावद ने कहा कि केवल समसामयिक विषयों की चर्चा के साथ समाज जनों में समानुभूति के साथ आपसी सद्भाव स्थापित करना, लिफाफा संस्कृति से अलग केवल आवेदन, निवेदन कर समाज को विघटन से बचाना और चुनावों से उत्पन्न होने वाले वैमनस्य को दूर कर समन्वय की भावना स्थापित करना चिंतन समूह का उद्देश्य है। हम सब अपने स्वयं के खर्चे से एकत्रित होकर समाज के समक्ष नवनीत प्रस्तुत करेंगे।

इस अवसर पर श्री प्रदीप जैन जी पीएनसी ने बताया कि इलाहाबाद हाईकोर्ट में न्यायाधीश श्री समीर जैन व श्री शिशिर जैन की नियुक्ति हुई है सभी ने बधाई प्रेषित की।

समस्याओं के नए जबाव तलाशें : सुरेश जैन आईएएस

मध्यान्ह सत्र की अध्यक्षता करते हुए श्री सुरेश जी जैन आईएएस भोपाल ने कहा कि जैन समाज ने भारतीय अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ता प्रदान कर भारतीय अर्थतन्त्र को नए आयाम प्रदान किये हैं। हमारी समाज में अनेक सफल उद्योगपति और व्यापारी हैं। पारस्परिक सौहार्द जैन समाज की सबसे बड़ी पूंजी रही है। हमने सदैव अपनी वैचारिक अनेकता में सामाजिक एकता बनाए रखी है। यह दु:खद है कि वर्तमान में राजनीतिक और सामाजिक क्षेत्रों तथा व्यवसायों का नियंत्रण धीरे-धीरे जैन समाज के हाथों से खिसक रहा है। हम जॉब प्रोवाइडर्स की बजाय जॉब सीकर्स हो गए हैं। विखंडित होती जैन शक्ति को समेकित कर महाशक्ति बनाएं। समस्याओं के नए जबाब तलाशकर समय के साथ बदलें। एकता को हम सामाजिक गौरव का विषय बनाएं। हमारे दानदाता अपने दान की उपयोगिता और उत्पादकता पर ध्यान दें। सामाजिक व राजनैतिक नेतृत्व के संगठन एवं संवर्द्धन की चिंता करें

संघर्ष के बाद सफलता अवश्य मिलती है : न्यायमूर्ति विमला जैन

तृतीय सत्र की मुख्य अतिथि न्यायमूर्ति विमला जी जैन भोपाल, पूर्व न्यायाधीश मध्यप्रदेश उच्च न्यायालय ने जैन समाज के घर ,परिवार, व्यापार के झगड़ों को सुलझाने के संबंध में एक सत्य घटना की जानकारी दी और कहा कि काम करने में बाधाएं तो आती हैं लेकिन कार्य करते रहो तो सफलता अवश्य मिलती है। मैं खुद जैन समाज के घर, परिवार के आपसी झगड़े सुलझाने के लिए निरंतर अपनी सेवाएं दे रही हूं।

जिस संस्था का जो कार्य है वह संस्था वही कार्य करें : विनोद बाकलीवाल

वरिष्ठ समाजसेवी श्री विनोद जी बाकलीवाल मैसूर ने मंदिरों के रखरखाव व संरक्षण की जरूरत को महत्वपूर्ण बताया। दक्षिण भारत में भट्टारक परंपरा ने जिन मंदिरों का संरक्षण संवर्धन किया है इस बारे में उन्होंने चर्चा की। उन्होंने कहा कि जिस संस्था का जो कार्य है वह संस्था वही कार्य करें अन्य संस्था के कार्य में हस्तक्षेप ना करें तो कार्य बड़े ही सुगमता से और सरलता से विधिवत रूप से हो सकेगा। उन्होंने कहा कि मंदिर की मूर्तियां प्रशस्ति भी रजिस्टर्ड होना चाहिए अन्यथा कई परेशानियां आएंगी उन्होंने कर्नाटक का ज्वलंत उदाहरण भी इस माध्यम से बताया। उन्होंने अगली चिंतन समूह की बैठक कर्नाटक में करने का प्रस्ताव रखा।

श्री प्रदीप जैन पीएनसी का विशेष सम्मान

इस मौके पर चिंतन समूह की आगरा की बैठक को शानदार तरीके से सम्पन्न कराने के लिए समाज गौरव श्रेष्ठी श्री प्रदीप जैन पीएनसी का समूह द्वारा पगड़ी, शाल, श्रीफ़ल भेंटकर विशेष सम्मान किया गया। संचालन राजेन्द्र महावीर सनावद ने किया। आगरा दिगम्बर जैन परिषद ने सभी अतिथियों को अभिनंदन पत्र, पगड़ी,दुपट्टा पहनाकर सम्मानित किया। आभार संयोजक श्री मनोज जैन आगरा ने किया। उपस्थित अतिथियों ने शानदार स्वागत व व्यवस्था की मुक्तकंठ से सराहना की।

- *राजेन्द्र जैन महावीर, डॉ. सुनील जैन संचय*

शिक्षक दिवस के दिन आचार्य श्री विद्यासागरजी से आशीर्वाद लेने पहुंचे –म. प्र. के मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान

म.प्र. के मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान रविवार को जबलपुर प्रवास पर पहुंचे। उन्होंने सपत्नीक तिलवाराघाट पहुँच कर दयोदय तीर्थ में चातुर्मास के लिए विराजमान संत आचार्यश्री विद्यासागर जी महाराज के दर्शन कर आशीर्वाद लिया। मुख्यमंत्री ने आचार्य श्री के साथ धार्मिक संवाद भी किया। मुख्यमंत्री ने दयोदय गौशाला तीर्थ स्थित चल चरखा केंद्र में ब्रह्मचारी दीदियों की ओर से हथकरघा में बनाए गए वस्त्रों का अवलोकन किया। मुख्यमंत्री ने आरोग्य अस्पताल का भी अवलोकन किया एवं आचार्य श्री के मार्गदर्शन में हो रहे कार्य को सराहा।

कैलाशपर्वत की प्रतिकृति के रूप सूखी सेवनिया में अमोनी गांव रोड पर पांच एकड़ में आकार ले रहा अनूठा जिनालय

भोपाल के सूखी सेवनिया गांव में पांच एकड़ क्षेत्र में ढाई करोड़ की लागत से अनूठा जिनालय बनकर तैयार हो रहा है जिसमें कैलाशपर्वत पर भगवान आदिनाथ और उनके पुत्र भरत चक्रवर्ती व बाहुबली की 21 फीट ऊंची प्रतिमा विराजमान होंगी। 21-21 फीट की भगवान आदिनाथ, भरत चक्रवर्ती व बाहुबली भगवान की प्रतिमाएं श्री मुकेश जैन (डब्बू भैया) की ओर से दी गई हैं। प्रतिमा राजस्थान के मकराना से बनवाकर मंगाई गई हैं। तीनों प्रतिमाओं की लागत ४२ लाख है। वहीं पहाड़ के नीचे एक गुफा रहेगी जो कि संतों का निवास स्थान होगा। आचार्य श्री विशुद्ध सागर व श्री सन्मति सागर महाराज की प्रेरणा से जिनालय की रचना की जा रही है। इसमें त्रिकाल चौबीसी होगी इसके लिए ७२ मंदिर बन कर तैयार हो गए है। जिनमें ७२ जिन प्रतिमा स्थापित होंगी। ७२ मंदिरों में स्थापित होने वाली जिन प्रतिमा भी आ चुकी है। कैलाश पर्वत क्षेत्र के अष्टापद में भगवान आदिनाथ का माघ कृष्ण पक्ष में ही निर्वाण हुआ था। मंदिर कमेटी के अध्यक्ष श्री नरेन्द्र जैन के मार्ग दर्शन में ९० फीसद काम पूरा हो चुका है। महामंत्री श्री मुकेश जैन (डब्बू भैय्या) ने बताया कि २०२२ में आचार्य श्री विशुद्ध सागर जी के सानिध्य में पंचकल्याणक प्रतिष्ठा होगी। निर्माणाधीन कैलाश पर्वत का ९० फीसद कार्य पूरा हो चुका है, जिसमें लगभग दो करोड़ रुपये का कार्य किया जा चुका है। भगवान चंद्रप्रभु की लगभग ३३ इंच की अतिशयकारी प्रतिमा जो लगभग २०० साल प्राचीन है उस प्रतिमा को विराजमान करने के लिए एक नवीन मंदिर का निर्माण श्री नरेंद्र वर्धमान के द्वारा किया जा रहा है।

श्री सम्मेदशिखरजी स्वर्णभद्रकूट

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी द्वारा शाश्वत तीर्थराज श्री सम्मेदशिखरजी पर्वत स्थित स्वर्णभद्र कूट श्री १००८ पार्श्वनाथ टोंक पर नित्यप्रतिदिन प्रातः बेला में अभिषेक, शांतिधारा का कार्यक्रम किया जा रहा है|

प्रातः प्रतिदिन विशेष प्रसारण जिनवाणी चैनल पर

आप भी अभिषेक, शांतिधारा के पुण्यार्जक बनकर धर्म लाभ प्राप्त कर पुण्य का संचय करें |

निवेदक

शिखरचंद पहाड़िया	संतोष जैन (पेंढारी)
राष्ट्रीय अध्यक्ष	**राष्ट्रीय महामंत्री**

एवं समस्त पदाधिकारी सह सभी अंचल

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी

सम्पर्क सूत्र- 9431387704, 9430702400, 9934934643, 9431395497, 9430309610

RNI-MAHBIL/2010/33592
Published on 1st of every month
License to post without prepayment -
WPP No. MR/Tech/WPP-90/South/2019-21
Jain Tirth vandana, English-Hindi September 2021
Posted at Mumbai Patrika Channel, Mumbai GPO Sorting Office
Mumbai-400001, Regd. No. MCS/160/2019-21,
Posted on 16th and 17th of every month

With Compliments

From:

GFL

GUJARAT FLUOROCHEMICALS LTD.

(Company of Siddho Mal-Inox Group)

INOX

GROUP OF COMPANIES

Corporate office :
INOX Towers, 17, Sector 16-A,
NOIDA - 201 301 (U.P.)
Tel: 0120-614 9600
Email : contact@gfl.co.in

New Delhi Office :
612-618, Narain Manzil, 6th Floor,
Barakhamba Road,
New Delhi - 110 001
Tel: +91-11-23327860
Email : siddhomal@vsnl.net

Printed and Published by **UMANATH RAMAJOR DUBEY** on behalf of **BHARATVARSHIYA DIGAMBER JAIN TIRTHKSHETRA COMMITTEE**, Printed at **TRIMURTI PRINTERS**, 5/7 DADARKAR BUILDING, V P ROAD, C P TANK, MUMBAI-400 004 and Published from BHARATVARSHIYA DIGAMBER JAIN TIRTHKSHETRA COMMITTEE, HIRA BAUG, 2ND FLOOR, C P TANK, MUMBAI-400 004. Editor : **UMANATH RAMAJOR DUBEY**